—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

नवम्बर, 2007 — वर्ष 6 — अंक 09

आज़माइश

क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वह सिर्फ़ इतना कह देने पर कि हम ईमान ले आये, छोड़ दिये जाएंगे और वह किसी आज़माइश में न डाले जाएंगे?

(पवित्र क़ुर्आन २९:२)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

❐ इनसानीयत	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
❐ भारत का संक्षिप्त इतिहास	सय्यिद अबूजफर नदवी	9
❐ अलगजाली	डा० सिराजुल हसन	12
❐ दुआ में तवस्सुल	अल्लामा अशरफ अली	14
❐ तस्लीमा नसरीन के उत्तर	मौ० अब्दुल करीम पारीख	16
❐ गठिया रोग का इलाज	डॉ० अजय शर्मा	17
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	18
❐ कुर्आन पढ़ाओ (पद्य)	शमीम	19
❐ दुन्यादार मौलवी	अबू मर्गूब	20
❐ सत्य की खोज ने इस्लाम तक पहुंचाया	पादरी अब्दुलहक	21
❐ मजदूरों के सम्बन्ध में इस्लाम की शिक्षाएं	सुल्तान अहमद इस्लाही	23
❐ स्वीकार नहीं (पद्य)	कारी हिदायतुल्लाह	25
❐ अल्लाह के बन्दों के हुकूक	इरफान फारूकी नदवी	26
❐ पुनर्जन्म के झूठे मुआमले	डॉ० मु० अहमद	28
❐ हिन्दु मुस्लिम लड़के लड़कियों में विवाह	जहीर ललित पूरी	30
❐ भारतीय इतिहास	प्रो. नेत्र पाण्डेय	31
❐ कलौंजी	इदारा	33
❐ उत्तर प्रदेश में सफेद जहर	शबीहुल हसन	36
❐ अध्यापकों की सेवा में	वसीम राशिद	36
❐ पेड़ न काटो (पद्य)	सअद आजमी	37
❐ चार नई किताबों का परिचय	इदारा	38
❐ मुनाजात	अमतुल अजीज	38
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

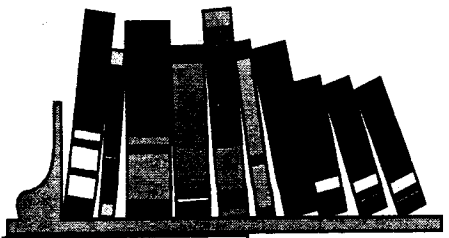

इन्सानीयत (मानवता)

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

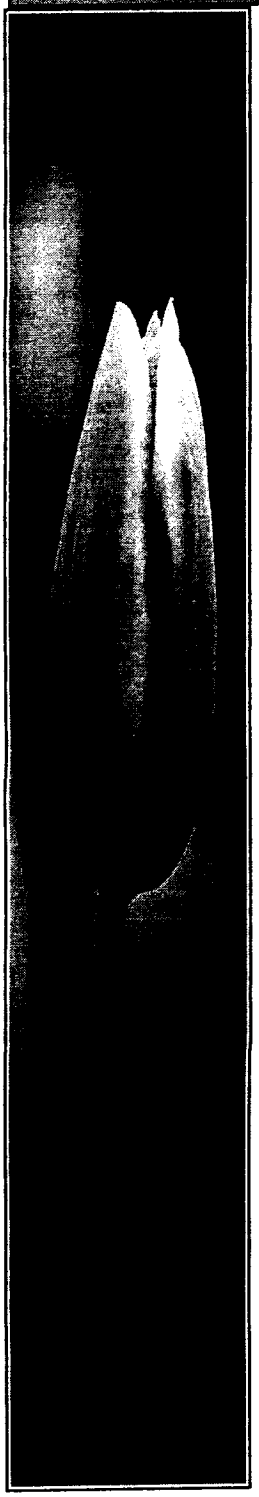

इन्सानों ने आ़म तौर से ज़िन्दगी गुज़ारने, जीवन बिताने के कुछ उसूल (नियम) बना रखे हैं उन उसूलों को इन्सानियत के उसूल कहते हैं। जिस आदमी में वह उसूल पाए जाते हैं, कहा जाता है उस में इन्सानियत है, वह सह़ीह़ मअ़नों (वास्तव में) इन्सान है, मानव है। जिस आदमी में वह नियम नहीं पाए जाते कहा जाता है कि वह इन्सानियत से गिरा हुआ है। लेकिन इन उसूलों (नियमों) में बड़ा, इख़्तिलाफ़ (विभिन्नता) पाया जाता है। जिसकी मिसालें मुलाह़ज़ा हों।

इन्सान का बचपन जब बीत जाए, वह खुद से चलने फिरने, खाने, पीने लगे, पाख़ाना पेशाब में दूसरे का मुह़ताज (आश्रित) न हो तो नंगा न रहे, कपड़े पहने कपड़े पहनने में बच्ची बच्चा में फ़र्क़ (अंतर) हो अब यहीं से इख़्तिलाफ़ शुरू हो गया, कोई कहता है एक जांघिया काफी है, अलबत्ता जाड़ा हो तो पूरा जिस्म ढका जाए कोई कहता बच्चों बच्चियों के कपड़ों में फ़र्क़ की क्या ज़रूरत? कोई कहता है बच्चियां सर पर बाल रखें, हाथ में चूड़ियां पहनें नाक कान छेदे जाएं, नाक कान में ज़ेवर (आभूषण) पहनाएं जाएं दूसरा कहता है क्यों इस की क्या ज़रूरत? चुनांचि कई बार सात आठ साल के भाई बहनों में मैं ख़ुद फ़र्क़ न कर सका। परदेश में एक मिस्री उस्ताद ने मेरी और मेरी बीवी की दअ़वत की, दस्तर ख़्वान (भोज सामग्री) पर उस्ताद उन की पत्नी, उनकी बारह साल की बेटी और हम दोनों थे। मेरी बीवी नक़ाब में थी उस के बग़ल उस्ताद की बेटी, फिर उन की बीवी फिर उस्ताद थे। खाना बहुत अच्छा था सब ने डट कर खाया और लतीफे भी रहे, मेरी बीवी ने बराए नाम चखा और अ़रबी न जानने के सबब मुंह बनाए बैठी रहीं, खाने के बअ़द (पश्चात) की बैठक में पर्दे पर बात चीत रही उस्तानी जी जो पर्दा नहीं करती हैं, उन्होंने मुझ से ख़ूब बह़सें कीं उस्ताद सिर्फ़ हंस रहे थे अैर कभी मेरा साथ देते। आख़िर कार उस्तानी ने हार मान ली इस लिये कि कसौटी क़ुर्आन शरीफ थी, फिर उस्ताद ने कहा बहू ने खाया क्यों नहीं? मैं ने टाला कि खाना अ़रबी था और वह हिन्दी खानों की आ़दी । अपने रूम वापस आए तो मेरी बीवी ने बड़ी नाराज़गी का इज़हार किया और कहा अम्मा (मेरी मां) से शिकायत करूंगी कि इन्होंने मुझे जवान लड़के के बराबर बिठा कर खाना खिलाया। मैं पहले ही भांप गया था अब बड़े ज़ोर की हंसी आई मैं ने कहा अल्लाह की बन्दी वह लड़की थी। अपने लहजे में कहने लगीं : चलो भागो, न सर पर बाल न चोटी न कान छिदे न नाक, न हाथ में चूड़ी न कान में बुन्दे, पत्लून, शर्ट वह लड़की थी? मैंने कहा ब खुदा वह लड़की थी, मिस्र में यही रिवाज है।

फिर कपड़े की बनावट ढीले, कसे, साइज़ में कहां तक? कोई लुंगी पहनता है तो कोई धोती, कोई पाएजामा पहनता है तो कोई तत्लून, कोई टोपी लगाता है तो कोई नंगे सर, यह सारी क़िस्में अपने इलाक़े, अपने माह़ौल में इन्सानियत के उसूलों में दाख़िल हैं यहां तक कि अधनंगा साधू बल्कि पूरा नंगा नागा बाबा काबिले इह़तिराम (सम्मानित) जैनियों का तीरथंकर बिल्कुल नंगा जैनियों का ख़ुदा, एक माह़ौल वाला दूसरे माह़ौल वाले का सख़्त मुख़ालिफ़ एक बार इन्दौर में अ़रब जमाअ़त आई थी वहां जैनियों के तीरथंकर को औ़रतों मर्दों के बीच देख कर, इतना मुशतअ़िल

(उत्तेजित) हुआ कि आपे से बाहर होकर कहने लगा "अक्तुल्हु" मैं इसे क़त्ल कर दूंगा, मार डालूंगा जबरदस्ती पकड़ कर उसे क़ाबू में किया गया। और उसको बताया गया "हाज़ा दीनुहुम" यह उन का दीन है।

इन्सानों ने खाने के उसूल बनाए, कहते हैं, पहले उन में ऐसी असभ्यता थी कि जंगल के फल फलारी खाते जानवरों का शिकार करके कच्चा गोश्त खा जाते जैसे शेर चीते खाते हैं। उनकी तदरीजी (क्रमशः) तरक़्क़ी में जोड़ मिलाना आसान नहीं है, लेकिन जब वह खेती करने लगे, मकान बना कर रहने लगे, पका कर खाने लगे तो उन्होंने खाने के नियम बनाए।

आज भी कोई चपाती पकाता है तो कोई हथ पोई,कोई सबज़ी छौंक कर उबाल लेता है कोई प्याज़ की बघार से फ़राई करता है, कोई दालको उबाल कर नमक मिर्च डाल कर खा लेता है कोई उसे प्याज़ आदि से ऐसा बघारता है कि पूरा महल्ला महक उठता है। कोई प्याज़ लहसुन खाता है कोई नहीं खाता, कोई गोश्त मछली अन्डा खाता है तो कोई उसे नाजाइज़ (अवैध) ठहराता है, फिर गोश्त खोरों में कोई हर जानवर का गोश्त,यहां तक कि कुत्ता, बिल्ली, सियार लोम्बड़ी भी खा जाता है, कोई बकरी भेड़ और मुर्ग ही खाता है तो कोई गाय भैंस भी खाता है, फिर इस में इतना इख़्तिलाफ़ बढ़ता है कि मार पीट और क़त्ले हैवान (पशु वध) के बजाए क़त्ले इन्सान (मानव वध) तक नौबत आती है, फिर मुसलमान लोग सिर्फ़ मुसलमान का ज़बीहा खाते हैं जब कि कुछ लोग झटके का खाते हैं। मुसलमान लोग तन्दूरी, कुल्चा, शीरमाल, बाक़र ख़ानी, पुलाव, बिरयानी मुतनजन ज़र्दा, मुज़अफ़र, कोफ़्ता, कबाब, भुना, स्टू, क़ोर्मा अनवाअ़ अक़्साम (भांति भांति) की सिवैया खाते हैं तो हिन्दू भाई पूड़ी, कचौड़ी, मालपुवा और तरह तरह की सब्ज़ियां, अचार, क़िस्म क़िस्म की मिठाइयां उड़ाते हैं। खाने की इन क़िस्मों में गाय भैंस के गोश्त के झगड़े के सिवा सब एक दूसरे के खानों को अपनाते तो नहीं पर बड़े शौक़ से खातो हैं। आज कोई इन्सान किसी मजबूरी के बिना कच्चा अनाज या कच्चा गोश्त खाए तो उसे इन्सानियत से गिरा गैर मुहज़्ज़ब (असभ्य) जानते हैं।

इन्सान ने अपनी रोटी रोज़ी प्राप्त करने के नियम भी बनाए, तै किया कि कोई खेती करे कोई व्यापार करे कोई कपड़ा बुने तो कोई कपड़ा सिये, कोई कपड़ा बेचे तो कोई कपड़ा धोकर साफ़ कर दे, कोई बढ़ई का काम करे तो कोई लुहारी का, कोई राज हो तो कोई सुनार हो कोई तेली हो तो कोई कुम्हार हो कोई बारबर हो, कोई नौकरी करे तो कोई मज़दूरी, कोई शासक बने तो कोई कर्मचारी, कोई ड्राइवर बने तो कोई मिस्तिरी ग़रज़ यह कि इस तरह के हज़ारों व्यवसाय हैं जिन पर सब सहमत हैं कुछ व्यवसाय विवशता के कारण अपनाए गये जैसे दूसरों का पाख़ाना उठाना कुछ मन की स्वतंत्रता में अपनाए गये जैसे वेश्या, किसी ने गाने बजाने नाचनेका व्यवसाय अपनाया तो बहुत से लोगों ने इन व्यवसायों को इन्सानियत से गिरा बताया और कितनों ने तो चोरी डकैती पाकिट मारी को अपनाया जिन्हें हर इन्सान ने बुरा बताया यहां तक कि चोर ने भी चोरी की बुराई की,फिर भी चोरों की वृद्ध क्यों? यह ऐसा प्रश्न है जो उत्तर चाहता है,फिर इन्सान ने अपनी नस्ल बढ़ाने के भी उसूल बनाए, विवाह, निकाह आदि के उसूल बनाए, इस में अक्सर इन्सानों ने उसूल (नियम) बनाए कि किस आदमी का किस औरत से विवाह, निकाह का सम्बन्ध (तअ़ल्लुक) हो सकता है किस से नहीं, इस में भी बड़ा इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। कुछ अहमक़ों ने कहा आदमी आज़ाद है जिस से चाहे तअ़ल्लुक़ पैदा कर सकता है। हद हो गई कुछ झूठों ने तो यहां तक गढ़ा कि ब्रह्मा जिसे हिन्दू धर्म में ख़ालिक़ कहा गया है उस ने अपनी बेटी से तअ़ल्लुक़ पैदा किया।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

फिरऔन और उसके पहले के कुछ मुन्किरीन के बारे में फरमाया गया:

तर्जमा : उन्होंने कहना न माना अपने रब के रसूलों का, तो अल्लाह ने ले लिया उन को सख्त पकड़ में । (अलहाक्कह : १०)

अलगरज पैगम्बरों के हक में सब से बड़ी कोताही व बेअदबी, उन को झुटलाना और उनकी पैरवी से इन्कार करना है। और कुरआने–मजीद ने जगह–जगह जता दिया है कि यह बिलकुल कुफ्र है और यह जुर्म मुआफी के काबिल नहीं है।

फिर इस से कम दर्जे की कोताही और नाकद्री यह है कि उन की बातों पर अमल न किया जाये। कुरआने मजीद बतलाता है कि यह भी ऐसा जुर्म है कि इस के करने वालों को अल्लाह के दर्दनाक अजाब और उसकी सख्त पकड़ से डरना चाहिए ।

तर्जमा : जो लोगा रसूले खुदा के हुक्म की खिलाफवर्जी करते हैं, उन को इस से डरना चाहिए कि कोई आफत उन पर आन पड़े या दर्दनाक अजाब उन पर नाजिल हो जाये। (अन्नूर : ६३)

इसी लिये कुरआने मजीद में जगह जगह अल्लाह की इताअत व फर्माबरदारी के हुक्म के साथ, रसूल की इताअत व फर्मा बरदारी का हुक्म भी वैसे ही जोर के साथ दिया गया है। बहुत से मकामात पर इर्शाद फर्माया गया है : –

तर्जमा : अल्लाह की इताअत करो और उस के रसूल की इताअत करो। (५:१२)

कहीं फरमाया गया है कि हिदायत, रसूल की इताअत व फर्माबरदारी से वाबस्ता (आबद्ध) है। चुनांचे सूरए–नूर में अल्लाहा की इताअत के बाद रसूल की इताअत का ताकीदी हुक्म देने के बाद फरमाया गया।

तर्जमा : अगर तुम रसूल की इताअत व फरमाबरदारी करोगे तो हिदायत पा जाओगे। (२४:५४) गोया इस आयत में कुरआने मजीद ने एलान कर दिया कि जो लोग रसूल की इताअत व पैरवी न करेंगे वे अल्लाह की हिदायत से महरूम (वंचित) और राहे हक से भटके हुए रहेंगे। एक दूसरे मौके पर इस हकीकत का एलान कुरआने मजीद ने इन शब्दों में भी फरमाया है।

तर्जमा : और जो नाफर्मानी करें अल्लाह की ओर से रसूल की तो वे बड़ी गुमराही में जा पड़े। (अल अहजाब : ३६)

एक दूसरे मौके पर कुरआने मजीद ने एलान फरमाया है कि हमारे पैगम्बर की बे चूं–चिरा (अगर मगर किये बगैर) इताअत और उनके हर हुक्म और फैसले को खुशदिली से कबूल करना ईमान की शर्तों में से है। जिस का यह हाल न हो उस को ईमान का मुकाम हरगिज हासिल नहीं। सूरए निसॉअ में इर्शाद है।

तर्जमा : (ऐ हमारे पैगम्बर) कसम तुम्हारे पर्वरदिगार की, ये लोग मोमिन नहीं हो सकते (ईमान के मकाम तक नहीं पहुंच सकते) जब तक कि यह बात न हो कि हकम (मध्यस्त–पंच) बनायें तुम को अपने झगड़ों में फिर (जब तुम अपना फैसला दे दो तो) कोई तंगी और नागवारी न पायें अपने दिलों में तुम्हारे फैसले से, और कबूल कर लें उस को पूरी तरह मान कर। (अन् निसाअ : ६५)

और सूरए–हश्र में ताकीद के साथ हुक्म दिया गया कि हमारे पैगम्बर तुम्हारे हक (बारे) में जो मुवाफिक या मुखालिफ फैसला करें और जो हुक्म दें उस को मानो और बजा लाओ (पूरा करो)। अगर उस के खिलाफ रास्ता इख्तियार किया गया तो याद रखो कि अल्लाह का अजाब सख्त है।

तर्जमा : हमारे रसूल जो तुम को दें उस को ले लो, और जिस से मना करें उस से रूक जाओ, और इस बारे में अल्लाह (की पकड़) से डरो, अल्लाह का अजाब बड़ा सख्त है। (अल हश्र : ७)

और सूरए अहजाब में पैगम्बर का हक और मर्तबा यह बयान फर्माया गया है कि अपने ऊपर जितना हक और जितना इख्तियार अपनी जात का होता है उस से जियादा हक और

इतिख्यार ईमानवालों पर पैगम्बर का है। जिस का लाजिमी नतीजा यह होगा कि अल्लाह के पैगम्बर किस को ऐसा हुक्म दें जिस में उस की जान जाती हो तो उस का फर्ज है कि बिला झिझक जान दे कर उस हुक्म की तामील करे।

तर्जमा : पैगम्बर का जियादा हक है ईमान वालों पर, खुद उनकी अपनी जातों से और पैगम्बर की बीवियां तमाम ईमान वालों की मायें हैं। (३३:६)

अस्ल बात यह है कि अल्लाह तआला हमारा खालिक व मालिक है। उस को हम पर हर तरह का हक और इख्तियार है। यहां तक कि जिन फैसलों का अपनी जान और अपनी जात के बारे में खुद हम को भी हक नहीं, अल्लाह तआला को उन तमाम फैसलों का भी हक है। और पैगम्बर च्योंकि उस के नाइब और नुमाइन्दा (प्रतिनिधि ा) हैं, और वही अल्लाह के हुक्मों को लाने वाले और उनको लागू करने वाले हैं, इसलिए अमलन (व्यवहारिक रूप से) जरूरी है कि उन का हक व इख्तियार भी ऐसा ही माना जाये। आगे फरमाया गया "उन की बीवियां तमाम ईमान वालों की मांओं के स्थान पर हैं।" इस लिए उन का अदब व आदर अपनी मांओं की तरह किया करो।

कुरआने-मजीद नबियों पर ईमान लाने, उन के हुक्मों को मानने और उन पर हक व मर्तबा पहचानने पर जोर देने के अलावा इस की भी ताकीद करता है कि उन के हुजूर (सामने) में ऊंची आवाज से निडर होकर बोला भी न जाये। बल्कि जब कभी किसी को उन के सामने कुछ अर्ज (निवेदन) करना हो तो पूरे अदब से और दबी आवाज से अर्ज किया जाये। कुरआने मजीद तंबीह करता है कि अगर इस बारे में कोताही हुयी तो तुम्हारे सारे अमल अकारत हो जाने का खतरा हैं।

तर्जमा : ऐ ईमान वालो। तुम अपनी आवाजें पैगम्बर की आवाज से ऊंची न किया करो, और आप से इस तरह खुल कर भी बात न किया करो जैसे कि आपस में एक दूसरे से खुल कर बातें करते हो, कि कहीं तुम्हारे सारे अमल (अदब की इस कोताही से) अकारत हो जायें, और तुम्हें खबर भी न हो। बेशक जो लोग अल्लाह के रसूल के हुजूर में अपनी आवाजें नीची करके बातें करते हैं, वही हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने तकवा के लिये खास कर लिया है, उन के लिए अल्लाह की बखशिश और बड़ा अज्र है। (हुजरात : २,३)

नबियों के बारे में कोताही व ना कद्री और बे अदबी की गुमराही से बचाने के लिए तो कुरआने मजीद ने यह हिदायतें (सूचनाएं) दीं (जो जिक्र की गयीं)। अब इस के बाद वे हिदायतें (निर्देश) भी सुनिये जो उन की शान में जियादती करने और गुलू (अतिशयोक्ति) के फितने (उपद्रव) से बचाने के लिये कुरआने मजीद ने दी है।

इफ्रात और गुलू का फितना

नबियों की शान के बारे में जिस जियादती में बहुत सी कौमें मुब्तला हुयीं हैं, वह यह है कि उन्होंने समझा कि नबी इन्सान नहीं हो सकता। बल्कि उसको इन्सानों से बालातर (ऊपर) किसी जिन्स से होना चाहिए। और इन्सानी जरूरतों और इन्सानियत के लवाजिम (मानवता सम्बद्ध आवश्यकताएं) भी उस के साथ न होने चाहिए, चुनांचे बहुत सी कौमों ने इसी गुमराही की वजह से अपने जमाने के पैगम्बरों का इन्कार किया। कुरआन का बयान है कि अल्लाह के पैगम्बर नूह अलैहिस्सलाम का इन्कार करते हुए उन की कौम ने कहा था –

तर्जमा : यह तो तुम्हारी तरह के एक इन्सान हैं (फिर यह खुदा के रसूल कैसे हो सकते हैं)। (२३:२४)

और नूह (अ) के बाद दुन्या में फिर गुम्राही फैली और अल्लाह ने अपने एक अन्य नबी को भेजा तो उन की कौम ने भी यही कह कर उन का इन्कार किया कि :

तर्जमा : यह तो तुम्हारी तरह एक इन्सान है, जो तुम खाते हो वही चीजें यह भी खाते हैं, और जो तुम पीते हो वही यह भी पीते हैं (फिर भला यह किस तरह रसूल हो सकते हैं।) (२३:३३)

और सूरए तगाबुन में अगले जमाने की मुनकिर (इन्कार करने वाली) कौम के बारे में बयान फर्माया गया है कि उन के कुफ्र व इन्कार की वजह यही हुयी कि यह बात कबूल करने के लिए वे तैयार नहीं हुयीं कि इन्सान भी नबी हो सकता है। इर्शाद है –

तर्जमा : उन के इस कुफ्र का सबब यही हुआ कि उन के पास उन के पैगम्बर रौशन दलीलों और खुले हुक्म को लेकर आये, तो (उन कमबख्तों ने) कहा, क्या इन्सान हम को हिदायत देंगे? पस (इसी बुन्याद पर) उन्होंने उन रसूलों का इन्कार कर दिया और उन से मुंह फेर लिया। (६४:६)

और दूसरी जगह फरमाया गया:

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

किसी तुहफ़ः को हकीर न समझो

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुसलमान औरतो। पड़ोसन अपनी पड़ोसन के लिए किसी तुहफः को हकीर न समझे। अगरचि बकरी का एक खुर ही क्यों न हो। (बुखारी–मुस्लिम)

दीवार में लकड़ी गाड़ने से न रोकना चाहिए

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिं वसल्लम ने फरमाया, पड़ोसी अपनी पड़ोसी की दीवार में लकड़ी गाड़ने वगैरः से न रोके। फिर हजरत अबू हुरैरः (र०) ने कहा, क्या बात है कि तुम इससे एराज करते हो। खुदा की कसम मैं तुम्हारे शानों के दर्मियान इस को फेंक दूंगा। (बुखारी–मुस्लिम)

हमसाये को तकलीफ न दे

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो (वह) अपने हमसाये को तकलीफ न दे। जिस का ईमान अल्लाह और रोजे आखिरत पर हो वह अपने मेहमानों की खातिर करे। जो अल्लाह और रोजे आखिरत पर ईमान लाये वह भली बात कहे वरना खामोश रहे। (बुखारी–मुस्लिम)

करीबतर पड़ोसी जियादः मुस्तहक है

हजरत आयशा (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह। मेरे दो पड़ोसी हैं। मैं किस को तुहफा भेजूं। आपने फरमाया जिसका दरवाजा तुम से जियादः करीब हो। (बुखारी–मुस्लिम)

अल्लाह के नजदीक अफजल कौन

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह के यहां वह लोग बेहतर हैं जो अपने साथियों के लिए बेहतर हैं। और अल्लाह के यहां वह पड़ोसी बेहतर है जो अपने पड़ोसी के लिए बेहतर है। (तिर्मिजी)

रसूलुल्लाह (सल्ल0) की तालीम

हजरत अम्र (रजि०) बिन अबसः से रिवायत है कि मैं नबी (सल्ल०) के पास नुबूव्वत के जमाने में मक्का आया। मैंने कहा आप कौन हैं। फरमाया, मैं पैगम्बर हूं। मैंने कहा, पैगम्बरी क्या? फरमाया, मुझे अल्लाह तआला ने भेजा है। मैंने कहा, किस चीज के साथ आपको भेजा है? फरमाया, मुझे भेजा है रिश्ता जोड़ने के लिए और बुतों को तोड़ने के लिए। और यह कि अल्लाह को एक समझा जाये। उसके साथ किसी को शरीक न किया जाये।

तीन बड़े गुनाह

हजरत नुफैअ (र०) बिन अलहारिस से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, क्या मैं तुमको तीन बड़े गुनाहों की खबर दूं। हमने अर्ज किया हां या रसूलुल्लाह। फरमाया, अल्लाह के साथ शरीक करना, और वालदैन की नाफरमानी करना। आप (सल्ल०) टेक लगाये हुए थे उठकर बैठ गये और फरमाया, सुन लो झूठी बात कहना और झूठी गवाही देना और आप बराबर उसको दुहराते रहे। यहां तक कि हमने कहा, ऐ काश आप खामोश हो जाते। (बुखारी–मुस्लिम)

वालदैन की नाफरमानी गुनाह कबीरह है

हजरत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र (र०) बिन अलआस से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, बड़े गुनाहों में से है, अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना और वालदैन की नाफरमानी करना और खुदकुशी करना। और जानते–बूझते हुए झूठी बात कहना। (बुखारी–मुस्लिम)

वालदैन को गाली दिलाना गाली देना है

हजरत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र (र०) बिन अलआस से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, बड़े गुनाहों में से यह भी है कि आदमी अपने वालदैन को गाली दे। लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह! अपने मां बाप को कौन गाली दे सकता है। आपने फरमाया, आदमी किसी के बाप को गाली देगा तो वह उसके बाप को गाली देगा, वह उसकी मां को गाली देगा, तो वह उसकी मां को गाली देगा।

(बुखारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि यह बात बड़े गुनाह की है कि आदमी अपने वालदैन पर लानत करे। लोगों ने कहा, कौन अपने बाप पर लानत कर सकता है। आपने फरमाया, आदमी किसी के बाप पर लानत करेगा तो वह उसके बाप पर लानत करेगा, वह उस की मां पर लानत करेगा तो वह उसकी मां पर लानत करेगा।

रिश्ता तोड़नेवाला जन्नत में न जायेगा

हजरत जुबैर (र०) बिन मुतअिम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, तोड़ने वाला जन्नत में न दाखिल होगा। हजरत सुफियान (र०) ने अपनी रिवायत में कहा है कि रिश्ता का तोड़ने वाला। (बुखारी–मुस्लिम)

मम्नूअ व नापसन्दीदः बातें

हजरत मुगीरः (र०) बिन शुअबः से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, तुम पर तुम्हारी मां की नाफरमानी हराम है। और बुख़्ल करना और सवाल करना और लड़कियों को जिन्दा दफन करना और तुम्हारे लिए कीलोकाल को और कसरतें सवाल को और माल के ज़ाये करने को नापसन्द किया। (बुख़ारी–मुस्लिम)

(पृष्ठ ६ का शेष)

तर्जमा : जब लोगों के पास हमारी हिदायत पहुंची तो ईमान लाने से उन को सिर्फ यही चीज रूकावट बनी कि उन्होंने कहा क्या आदमी को अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है? (यह बात तो हम नहीं मान सकते)। (१७:६४)

और खुद कुरआन के लाने वाले, खुदा के आखरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में उन के मुनकिरों ने कहा कि –

तर्जमा : यह कैसे रसूल हैं कि खाते–पीते हैं, और (अपने कामों से) बाजारों में भी जाते हैं। (२५:७)

मतलब यही था कि खुदा का रसूल तो वही हो सकता है जो यह इन्सानी जरूरियात न रखता हो।

अलगरज पैगम्बरों के बारे में बहुत सी कौमें इस गुमराही में मुब्तला रही हैं कि नबी इन्सान नहीं हो सकते बल्कि उन को किसी और ऊंची जिन्स से होना चाहिए। और इन्सानी आदतें व खुसूसियतें भी उन में बिलकुल न होनी चाहिएं। मगर कुरआने मजीद ने इस गुमराही की पूरी स्पष्टता व सफाई के साथ बेखकनी की है। यानी इस को जड़ से उखाड़ फेंका है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खिताब (सम्बोधित) करके इर्शाद है।

और हमने आपसे पहले भी आदमियों ही को पैग़म्बर बना कर भेजा था, हम उन्हीं की तरफ अपने हुक्मों की वही करते थे। (यूसुफ : १०६)

(पृष्ठ ४ का शेष)

फिर विवाह निकाह़ के तरीक़ों में बड़ा इख़्तिलाफ़ (विभिन्नता) है, कोई भंवरी घूमता है, मंत्र पढ़वाता है, तो कोई ईजाब व क़बूल गवाहों के सामने ज़रूरी क़रार देता है, तो कोई दोनों की रज़ामन्दी को विवाह मान कर मियां बीवी के तअ़ल्लुक़ात क़ाइम कर लेता है, फिर कमाता खाता है। (शेष अगले अंक में)

(पृष्ठ १३ का शेष)

व्याघात–सिद्धांत की सहायता से इन्होंने निम्नलिखित भौतिक तत्वमीमांसीय दार्शनिक सिद्धान्तों का खंडन करने का प्रयास किया है:–

१. यह कि जगत् शाश्वत है।

२. यह कि ईश्वर केवल सामान्यों से अवगत रहता है और इसलिए कोई विशिष्ट विधाता नहीं है।

३. यह कि मात्र आत्मा अमर है और इसलिए शरीर के पुनरूज्जीवित होने का कोई प्रश्न नहीं है।

इस प्रकार इस प्रक्रिया में इन्होंने कारणता के सम्बन्ध में अपनी अति महत्वपूर्ण अवधारणा को विकसित किया है। कारणता को ये संकल्प करने के अर्थ में लेते हैं। ये समय – संबंध के अन्तर्गत प्रकृति की कारणता को पूर्ण रूप से अस्वीकृत करते हैं। समय के अन्तर्गत मात्र घटनाओं का अनुवर्तित्व सभी प्रकार के कारण सम्बन्धी व्याख्याओं के विरूद्ध जाता है। इनके अनुसार कारणता का एकमात्र ज्ञांत ज्ञेयं रूप स्वतंत्र संकल्प है। निसृत कर्म है। इस सम्बन्ध में उच्चतम सीमा के रूप में इन्होंने शाश्वत (दैवी) संकल्प को माना है जिसे प्रथम कारण कहा जाता है। इसी प्रकार से यह भी इंगित करते हैं कि सत्ता का ऐक्य जानने में नहीं बल्कि संकल्प करने में निहित है। मैं संकल्प हूं इसलिए मैं हूं। जगत् का संकल्प करने में ईश्वर उससे अवगत भी हो जाता है।

सलाम को आम करो।

अपने बच्चों को सिखाओ कि वह हर बड़े को सलाम किया करें।

छठवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

तुगलक खानदान

सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक : मलिक तुगलक अलाउद्दीन खिल्जी के प्रारम्भ जमाने में एक साधारण सिपाही की हैसियत से अलाउद्दीन के भाई अलग़ खां की सेना में भरती हो गया और फिर अपनी ज़ाती योग्यता से कुछ दिनों के बाद सरहदी प्रान्त का गवर्नर बन गया और भाग्य ने जब साथ दिया तो १३२० ई० (७२० हि०) में बादशाह हो गया और उसने अपना शाही लकब (पदवी) ग्यासुद्दीन मुकर्रर किया।

ग्यासुद्दीन तुगलक दिल्ली के प्रबन्ध से छुट्टी पाकर प्रान्तों के प्रबन्ध में व्यस्त हो गया। उत्तरी भारत के प्रान्तों में अपने विश्वसनीय अफसरों को नियुक्त किया। प्रजा के जिम्मे जो मालगुजारी बाकी थी उसमें बहुत कमी कर दी जिस के कारण शेष आसानी से वसूल हो गया। शराब बनाना अपराध करार दिया गया। फलस्वरूप प्रजा खुशहाल हो गयी और सल्तनत के सारे अधिकारी खुश हो गये। दकिन के राजाओं ने अधिकारियों के कुप्रबन्ध के कारण बागी होकर सालाना कर भेजना बन्द कर दिया था। ग्यासुद्दीन ने अपने पुत्र मुहम्मद जूना को एक बड़ी सेना देकर उन के दमन के लिए रवाना किया। मुहम्मद जूना ने वहां पहुंच कर राजाओं को आज्ञाकारी बनाया परन्तु उसी बीच वहां महामारी इस जोर से फैली की सेना के पशुओं और सिपाहियों की बड़ी संख्या नष्ट हो गयी। संयोग से डाक की अव्यवस्था (बदनज्मी) के कारण एक महीने तक दिल्ली से सुल्तान ग्यासुद्दीन की कोई खबर नहीं मिली। इस बहाने से कुछ दुष्टों ने बादशाह के मरने की खबर उड़ा दी। सिपाही इस खबर से परेशान होकर अस्त व्यस्त (मुंतशिर) हो गये। चन्द दिनों के बाद बादशाह का आदेश पहुंचा तब मुहम्मद जूना बाकी फौज को लिये हुए दिल्ली आया। ग्यासुद्दीन ने जांच के बाद सब विद्रोहियों को कठोर दण्ड दिया और कुछ महीनों के बाद भारी सेना के साथ मुहम्मद जूना को फिर दकिन रवाना किया। इस बार मुहम्मद जूना शुरू ही से तमाम किले और शहर फतह करते हुए चला और १३२५ ई० (७२३ हि०) में सारे दकिन पर विजय प्राप्त करके और राजाओं को करदाता बनाकर वापस आया।

सन् १३२३ ई० (७२४ हि०) में बंगाल के हाकिम ने जो बुगरा खां के खानदान से था बगावत की तो मुहम्मद जूना को दिल्ली में अपनी जगह बैठा कर खुद बंगाल रवाना हो गया। वहां तमाम बागियों को सजा देकर वापस लौटा। मुहम्मद जूना और सल्तनत के कुछ सदस्य दिल्ली से चन्द मील उस के स्वागत के लिए आगे पहुंचे और बादशाह के आदेश से लकड़ी का एक अस्थायी मकान तैयार कराया कि बादशाह थोड़ा दम लेले। जब ग्यासुद्दीन तुगलक वहां पहुंचा तो थोड़ी देर आराम के बाद खाना खाने में मशगूल हुआ और फौज को कूच करने का आदेश दिया। बादशाह अभी खाना खा ही रहा था कि अचानक मकान की छत गिर पड़ी। सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक और उस का छोटा लड़का दोनों दब कर मर गये।

सुल्तान मुहम्मद तुगलक : अब ग्यासुद्दीन तुगलक का केवल एक लड़का मुहम्मद जूना था जो मुहम्मद तुगलक के नाम से बादशाह बना। मुहम्मद तुगलक दो तीन साल तक बड़े आराम से रहा बंगाल, गुजरात और दकिन से सालाना कर आसानी से दिल्ली पहुंचता रहा जैसा कि दिल्ली और अवध का कर आता था। १३२६ ई० (७२७ हि०) में मुगलों ने हमला किया जिन को मुहम्मद तुगलक की बहादुरी ने असफल वापस भगा दिया और चूंकि उसने पटन प्रान्त को बड़ी मेहनत से प्राप्त किया था इस लिए मुगलों से बचने और दकिन की रक्षा के विचार से दिल्ली के स्थान पर दौलताबाद को राजधानी बना दिया लेकिन अब उस ने अपनी गलती महसूस की तो फिर दिल्ली वापस आया। इस लम्बे सफर में माली और जानी नुकसान के कारण अधिकांश अधिकारी नाराज हो गये। उस को नये–नये देशों को जीतने का शौक था। चुनांचि खुसरो

मलिक की अधीनता में एक लाख फौज देकर तिब्बत और चीन को विजय करने के लिए भेजा। यह फौज चीन की सीमा पर पहुंच कर बरसात का मौसम आ जाने से तबाह हो गयी। इसी प्रकार तीन लाख सत्तर हजार सवार खुरासान और मवाराउन्नहर की विजय के लिए तैयार किया। इन बड़े–बड़े स्वप्नों में खजाना खाली हो गया तो सोने की जगह तांबे का सिक्का चलाया। लेकिन बनियों और सुनारों ने तांबे के जाली सिक्के बना कर चला दिये जिस से सरकारी सिक्कों की दर इतनी गिर गयी कि लोगों ने लेने से इंकार कर दिया। विवश होकर सुल्तान को सारे सिक्के वापस लेने पड़े। फिर तीन वर्ष तक बराबर सूखा पड़ गया जिससे प्रजा परेशाान हो गई। आखिर अधिकारियों ने बगावत की। यह बगावत पहले मुलतान में हुई। मुलतान की बगावत की समाप्ति पर दकिन में विद्रोह हुआ विद्रोह कम हुआ तो मालवा उठ खड़ा हुआ। इस को ठीक किया तो गुजरात में आग लग गई। सुल्तान खुद गुजरात आकर विद्रोहियों से लड़ा और सफल रहा किन्तु इस बीच दकिन फिर उठ खड़ा हुआ सुल्तान ने कई सेनाएं भेजीं लेकिन कोई सफलता नहीं मिली और अलाउद्दीन हसन बहमनी ने दकिन में एक अलग स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर ली और गुलबर्गा को उस की राजधानी बनाई।

उधर गुजरात के बागी जूनागढ़ (काठियावार) में शरणार्थी हुए मुहम्मद तुगलक ने बड़ी कठिनाई से उन को परास्त किया परन्तु बागियों का अफसर तुग़ी भाग कर सिन्ध पहुंच गया और ठठ में जहां ईस्माईल सूमरों की हुकूमत थी वहां उसने शरण लिया। सुल्तान मुहम्मद तुगलक भी गूंड़ल से चल कर नदी के मार्ग से सिन्ध पहुंचा और ठठ पर घेरा बन्दी का आदेश दिया। मुहम्मद तुगलक, जो पहले ही तपेदिक का रोगी था, वहां की जलवायु जो दलदल के कारण आद्र (मरतूब) थी उस के लिए हानिकारक बनी और वहीं उस की मृत्यु हो गयी।

सुल्तान मुहम्मद तुगलक बड़ी खूबियों का आदमी था। वह बड़ा दानी और बुद्धिमान था स्मरण शक्ति (याददाश्त) बड़ी अच्छी थी। कविता का भी शौक था। बहुदा हिन्दू जोगियों के साथ तनहाई में बैठता था। परदेशियों का सम्मान करता था। भारत का पैसा किसी प्रकार बाहर नहीं जाने देता था। यमुना के किनारे उस ने जो नई छावनी बनाई थी उस का नाम स्वर्ग द्वार रखा था। डाक का प्रबन्ध उसके जमाने में ऐसा अच्छा था कि उस से पहले कभी नहीं था। इसी डाक के द्वारा ताजा गंगा जल प्रतिदिन दौलताबाद पहुंचता था। लेकिन एक सुल्तान होने की हैसियत से वह बड़ा निर्दयी था। कत्ल के अतिरिक्त कोई सजा नहीं देता था।

सुल्तान फिरोज़ शाह तुगलक:

सुल्तान मुहम्मद तुगलक का चचाज़ाद भाई फिरोज़ शाह बिन रज्जब सालार पचास वर्ष की उम्र में सिंहासन पर बैठा। यह बड़ा दयालु बादशाह था। दुश्मनों पर हद से अधिक तरस खाता था। यह चालीस वर्ष से अधिक शासन करता रहा। उस ने दोबार बंगला के बागी हाकिम को पराजित किया। नगर कोट का राजा भी इस का अधीन हो गया। ठठ की लड़ाई में यद्यपि पहली बार पराजित हुआ परन्तु अन्त में सुलह से वह भी फतह हो गया। जाज नगर से अच्छे हाथी जो उस जमाने में लड़ाई के सामान में गिने जाते थे अपने बहुबल से ले आया। मुहम्मद तुगलक की यादगार में, जिसका असली नामजूना था, उस के नाम पर "जौनपुर" का नगर आबाद किया। यमुना से एक नहर निकाली जिस से जनता को बहुत लाभ पहुंचा। दिल्ली के निकट फिरोजाबाद के नाम से एक बड़ाा शहर आबाद किया जिस में आठ जामा मस्जिदें थीं। देबालपुर में भी एक मस्जिद बनवाई। फिरोजाबाद में हम्माम (स्नानगार) के अतिरिक्त बहुत से मदरसे भी बनवाए और बड़ा घंटाघर बनावाया जो हिन्दुस्तान में शायद सब से पहला घंटा घर था। जनमानस के लिए अस्पताल भी बनवाए। इस नेक दिल बादशाह का १३८८ ई० (७९० हि०) में देहान्त हो गया।

सुल्तान महमूद शाह बिन फिरोज़ शाह :

फ़िरोज शाह के देहान्त के बाद सिंघासन के वारिसों के बीच गृहयुद्ध शुरू हुआ। फिरोज शाह का बड़ा बेटा जो उत्तराधिकारी (वलीअहद) था वह बाप की जिन्दगी ही में मर चुका था। इस लिए पहले फतह खां के बेटे ग्यासुद्दीन तुगलक द्वितीय ने सिंहासन पर कब्जा किया लेकिन फिरोजशाह के दूसरे पुत्र जफर खां के बेटे अय्यूब ने उस से छीन लिया और आखिर सिंहासन के सारे दावेदारों को ठिकाने लगा कर फिरोज के एक और बेटे "मुहम्मद शाह नासुरूद्दीन" के लकब से सन् १३८८ई० में तख्त पर बैठा। उस ने सब से पहले बागियों को पराजित करके देश में शान्ति स्थापित की फिर प्रान्तों की तरफ ध्यान दिया। १३६१

(७६४ हि०) में जफ़र खां को गुजरात का हाकिमा बना कर भेजा। अभीं राज्य के दूसरे भागों का प्रबन्ध ही कर रहा था कि बीमार होकर १३६३ (७६६ हि०) में मर गया। उस के बाद उस का लड़का हिमायूं खां सिकन्दर शाह के लकब से तख्त पर बैठा लेकिन यह भी एक ही महीने में बीमार होकर चल बसा।

सुलतान महमूदशाह तुगलक :

मुहम्मद तुगलक खानदान का आखिरी बादशाह है। कुछ तो तख्त के वारिसों से लड़ता रहा और जब सफल हुआ तो चूंकि उसमें योग्यता न थी इस लिए दरबार के विभिन्न अफसर एक दूसरे के विरूद्ध साजिश करने लग गये। इस आठवीं सदी हिजरी के समाप्ति पर दिल्ली की सल्तनत नाम मात्र रह गई थी। मुलतान, पंजाब, जौनपुर, दकिन, गुजरात, बंगाल लगभग तमाम प्रान्त के हाकिम स्वतंत्र हो गये थे। उस समय दिल्ली और उसके आस पास के भाग महमूदशाह दिल्ली के कब्जे में थे और इस बादशाह के भी अधिकार सीमित थे क्योंकि अकबाल खां जो स्वेच्छाकारी था वह सल्तनत पर कब्जा किये हुए था। दरबार के अधिकारी अपनी सत्ता के लिए आपस में लड़ रहे थे कि मुगलों का सरदार तैमूर लंग बिन बुलाए मेहमान की तरह आ धमका, अकबाल खां कहीं छुप गया और महमूद तुगलक भाग कर गुजरात और फिर मालवार पहुंचा। तैमूर जब हिन्दुस्तान को लूट घसोट कर वापस चला गया तो महमूद ने फिर दिल्ली पर कब्जा कर लिया और दुर्भाग्य से अकबाल खां फिर आमौजूद हुआ। जब १३०५ ई० (८०८ हि०)में अकबाल खां पंजाब के हाकिम खिजिर खां के साथ लड़ाई में मारा गया तो दौलत खां लोदी ने, जो उसके अधिकारियों में से था, सलतनत का कारोबार संभाला और इसी बेबसी की दशा में सुल्तान महमूद तुगलक १४१२ ई० (८१५ हि०) इस संसार से सिधर गया।

तुगलक खानदान का शासन :

तुगलक खानदान ने हिन्दुस्तान पर सौ वर्ष के करीब शासन किया। इस अवध में उन्होंने सल्तनत को काफी उन्नति दी। खिल्जियों के आखिरी जमाने में दकिन बागी हो गया था उस को फिर अधीन बनाया। अब मुगलों के हमले से एक तरह से छुटकारा मिल गया था। इस लिए आबादी में बड़ी कोशिश की गयी, बहुत से शहर और गांव आबाद किये गये जिन में से जौनपुर नगर आज तक मौजूद है। मुहम्मद तुगलक के जमाने में केवल दिल्ली में सत्तर अस्पताल थे जहां बीमारों को दवा के साथ खाना भी मिलता था। फिरोजशाह के जमाने में ५० नहरें ४०० मस्जिदें ३०० मदरसे २०० खानकाहें एक सौ महल, ५० अस्पताल, १००० मकबरे १० हम्माम (स्नान घर) १५०० कुंए, १००० पुल और अनगिनत बगीचे लगाये गये। अपराधियों को जालिमाना सजा देने की परम्परा समाप्त की गयी और अनुचित कर माफ कर दिये गये। शराब पीना अपराध करार दिया गया। दिल्ली के करीब फिरोजाबाद बसाया गया। जिसमें शान्दार मस्जिद और मदरसे बनवाए गए। हिन्दुस्तान में सबसे पहले घंटा घर फिरोज शाह ही ने बनवाया जो हिन्दुस्तान के लिए बिलकुल नई चीज थी। सुल्तान मुहम्मद तुगलक के काल में बहुत सी सड़कों का निर्माण (तामीर) किया गया। डाक का बड़ा अच्छा प्रबन्ध था। डाक के विभिन्न प्रकार का प्रचलन किया। डाक नक्क़ारा, डाक कबूतर, घोड़ों की डाक, ऊंट की डाक, प्यादों की डाक। दौलताबाद में बैठकर प्रतिदिन इस डाक से गंगा का ताजा पानी पीता था। परदेसियों की बड़ी आवभगत करता था। उलमा, हकीमों और इतिहासकार दरबार में हाजिर रहते। अमीर खुसरो, बदरचा जी, मतहर हिन्दी कवि, जया बर्नी इतिहासकार, साअद तार्किक (मनतिकी), कांगू ब्रह्मन नजूमी, निजामुद्दीन औलिया (रह०), नसीरूद्दीन चिराग जैसे बाकमाल बुजुर्ग मौजूद थे।

हिन्दू जोंगी उस से खास कमरे में मिलते और उन की संगत से लाभ उठाता। उनके जमाने में संस्कृत की बहुत सी पुस्तकों का फारसी में अनुवाद हुआ। मिस्र के अब्बासी खलीफाओं के दूत कई बार बादशाह के लिए खिलअ़त लाये। व्यापार का बड़ा विस्तार हुआ, इराक अरब मिस्र और तुर्किस्तान के व्यापारियों से मुल्क भरा रहता था। गुजरात में भरूच, धोलका, खंबात और मंगरोल की जामा मस्जिद आज तक उस युग की यादगार है। उस के काल में यह परम्परा भी शुरू हुई कि फौजी अधिकारियों को नकद वेतन के बदले बड़ी बड़ी जागीरें दी गयीं।

सुल्तान मुहम्मद का दरबार बड़ा शानदार होता। इब्न बतूता मशहूर पर्यटक उसी के जमाने में हिन्दुस्तान आया था। उस ने विस्तार से इस का हाल लिखा है। उस के जमाने में हिन्दुस्तान का रूपया हिन्दुस्तान से बाहर न जाने पाता विभिन्न प्रकार के सिक्के उस उस समय की यादगार हैं। आज कल की तरह छोटे से छोटा सिक्का उस समय मौजूद था। (जारी)

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

अलग़ज़ाली

(१०५८–१११९)

डा. सिराजुल हसन

इमाम गजाली संसार के उन प्रसिद्व व्यक्तियों में से हैं, जिनकी योग्यता और ज्ञान का लोहा उनके जीवन•काल में ही सबने मान लिया था। इमाम साहब अन्य विद्वानों की तरह किसी एक विद्या के नहीं बल्कि एक ही साथ कई विद्याओं के ज्ञाता थें। वे विद्वान भी थे और दार्शनीक भी थे और धर्ममीमांसक भी, मुतकल्लिम (वाद–बवद्यानुयायी) भी थे और विचारक भी। परन्तु इमाम साहब का बडप्पन इस बात में है कि वे पहले व्यक्ति थे जिन्होने सच्चाई की खोज में सारे विश्व का चक्कर लगाया, कठिनाइयां झेलीं और उस समय की समस्त विद्याओं और शिक्षाओं का नये सिरे से अध्ययन किया तथा अन्त में उस सच्चाई को प्राप्त करनें में सफल हुए जिसकी तलाश के लिए उन्होनें अध्यापन–कार्य छोडा और अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

इमाम साहब, जिनका नाम मुहम्मद, उपाधि हुजज्तुलइस्लाम और गजाली उपनाम है, पन्द्रहवीं शताब्दी के मव्य में खुरासाना प्रदेश के जिला तूस में पैदा हुए थें। ऐसा कहा जाता है कि इनका जन्म एक गांव में हुआ था जिसका नाम "गजाला" था और इसी कारण बाद में आप गजाली के नाम से जाने गए। परंतु ऐसा भी कथन है कि गजाली के पिता ऊन कात कर बेचा करते थे और "कातने" को अरबी भाषा में गजल कहते है, इस कारण इनका नाम गजाली पडा।

गजाली के पिता एक धार्मिक और नेकदिल व्यक्ति थे। उन्होंने खुदा से प्रार्थना की कि ऐ खुदा मुझे एक ऐसा बेटा दे जो विद्वान बने। खुदा ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई जिसका नाम मुहम्मद रखा गया, जो बाद में इमाम के नाम से प्रसिद्व हुआ इसी प्रकार उसके पिता ने फिर प्रार्थना की ऐ खुदा मुझे एक ऐसा लडका दे जो धर्मोपदेशक बने। खुदा की दयालुता देखिए कि उन्हें फिर पुत्र की प्राप्ति हुई जिका नाम अहमद रखा गया और बाद में एक महान धर्मोपदेशक बना।

अभी ये दोनो भाई छोटे थे कि उनके पिता का निधन हो गया । मरने से पहले उन्होंने अपने दोनों बच्चों को अपने एक दोस्त को सौप दिया और उसे पैसा देकर बच्चों को शिक्षा प्रबन्ध के लिए कहा। दोस्त ने बच्चों को शिक्षा दिलानी शुरू कर दी। कुछ दिनो के पश्चात जब उनके पिता की दी हुई सम्पत्ति समाप्त हो गई तब उस दोस्त ने उनको एक विद्यालय में प्रविष्ट करा दिया जहॉ वे खैरात की रोटी पर बसर करके अपनी पढाई में प्रवृत्त हो गए।

इमाम साहब प्रारंभिक शिक्षा तूस में प्राप्त करनें के पश्चात् जुर्जान चले गए। उस युग में पढाई का यह तरीका था कि अध्यापक जो वक्तव्य देते थे शिष्य उसे लिख लिया करते थे और अत्यन्त सावधानी से संभाल कर रखते थे। इमाम साहब ने भी ऐसा ही किया। कुछ दिनों पश्चात् व स्वेदेश लौटे। राह में डाका पडा और इमाम साहब के पास जो कुछ सामान था सब लुट गया जिसमें वे खर्रे भी थे। इमाम साहब को इन खर्रो के लुटने का अत्यन्त दुःख हुआ। वे डाकुओं के सरदार के पास गए और कहा कि मैं केवल खर्रो को वापस चाहता हूँ क्योंकि उनमें जो बाते लिखि है उनको सुनने और याद करने के लिए ही मैंने यह यात्रा की थी। डाकु सरदार हंस पडा और बोला तुमने क्या खाक सीखा, जब तुम्हारी यह हालत है कि एक कागज न रहा तो तुम कोरे रह गए। परन्तु उसने वे खर्रे उन्हें वापस कर दिए। इमाम साहब को इस व्यंग्य से अत्यन्त पीडा हुई। इसके फलस्वरूप घर पहुंच कर उन्होंने सब लिखी हुई बातें कंठस्थ (याद) कर लीं। इसके पश्चात् आगे पढाई करने के लिए वे नेसापोर गए। वहां पर अल्लामा जुऐनी नामक एक वृद्ध सज्जन पढाते थे। यहीं से इमाम का सितारा चमकना शुरू हुआ और यहीं पर उन्होंने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था "अल–मनखूल"। उनके अध्यापक ने जब यह पुस्तक देखी तब उन्होंने सोचा कि यह शिष्य तो मुझ पर ही हावी हो गया है। फलस्वरूप उन्होंने इमाम साहब से कहा कि तुमने मुझे जिन्दा ही दफन कर दिया। कम से कम मेरी मौत की प्रतिक्षा तो कर लेते। अध्यापक की मौत के पश्चात् इमाम साहब बगदाद आ गए और वहां मदरसे निजामिया में अध्यापन शुरू किया। उस समय उनकी आयु ३४ वर्ष की थी। कहा जाता है कि उनके पास अनुमानतः ४०० विद्यार्थी

शिक्षा हेतु आते थे और सभी उनकी योग्यता का लोहा मानते थे।

इमाम साहब एक विशेष प्रकार की प्रवृत्ति रखते थे। वह जितने धार्मिक सिद्वांत और सम्प्रदाय थे सब पर पैनी दृष्टि डालते थे। बगदाद उस समय संसार भर के सिद्वांतों और विचारों का अखाडा था। उस धरती पर पांव रखकर प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र हो जाता था और जो कुछ चाहता था व्यक्त कर सकता था। इस स्वतंत्रता के कारण कई प्रकार के सिद्वांत और विचार फैले हुए थे। इमाम साहब वहां सब सम्प्रदायों के व्यक्तियों से मिले और वे स्यमेव बोल उठे,"या अल्लाह। इनमें से सच्चाई पर कौन है? किसको सच्चा कहे और किसको झूठा?" और जब फिर हर एक पर समीक्षात्मक दृष्टि डाली तो सभी में उन्हे कुछ ने कुछ कमियां दुष्टिगत हुई। इस कारण वे खोजबीन में जुट गए और इस तरह दर्शन के हर पहलू पर जानकारी प्राप्त की। इस मोड पर पहुंच कर उन्होंने यह आवश्यक समझा कि क्यों न ऐसे ज्ञान की खोज की जाए जो बिल्कुल सच्चा और वास्तविक हो। इमाम का सच्चाई और वास्तविक का मापदंड था : वह जिसको पा लेने के पश्चात् संदेह के बादल बिल्कुल छंट जाए और वास्तविक्ता प्रकट हो जाए।

इस सच्चाई को पा लेने के लिए उन्होंने सोचा कि पारस्परिक शिक्षाओं और सिद्धान्तों से उनको ध्येय की प्राप्ति नहीं हो सकेगी। इसके लिए स्वयं निष्पक्ष भाव से अध्ययन करना होगा सभी आध्यात्मिक और नैतिक सिद्धान्तों को फिर से देखना और उनको ज्ञान की कसौटी पर रखना होगा। इस तरह उनके झुकाव सूफीवाद की ओर हुआ। परन्तु गजाली ने जीवन को जिस प्रकार अपना लिया था वह सूफीवाद से भी मेल न खाता था। फलतः उन्होंने यह फैसला किया कि संसार को छोड़कर सच्चाई की खोज में निकल जाना ही सार्थक है और एक दिन वास्तव में वे बगदाद से निकल पड़े। पहले शाम (दमिश्क) गए और दो साल तक वहां रहे। इसके बाद घूमते–घूमते वे हज के लिए मक्का मदीना गये। इसी यात्रा के मध्य उन्होंने सिकन्दरिया भी देखा। ४६ हिजरी (११०६ ई०)में जब वह पैगम्बर इब्राहीम के जन्म स्थल खलील में थे तब उन्होंने तीन बातों की प्रतिज्ञा की :

१. किसी बादशाह के दरबार में नहीं जाउंगा।

२. किसी बादशाह के धन को स्वीकार नहीं करूंगा।

३. किसी से वाद–वाद नहीं करूंगा।

इसी यात्रा में गजाली ने अपनी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक एहयाउल–उलूम (विद्या संजीवनी) की रचना की।

इमाम साहब की लिखी पुस्तकें अनेक हैं। उन्होंने बीस वर्ष की आयु से ही लेखन कार्य प्रारम्भ कर दिया था। दस ग्यारह वर्ष यात्रा में गुजारे फिर भी सैकड़ों पुस्तकें लिखीं। इनकी लिखी पुस्तकें यूरोप में भी बहुत प्रचलित हुई एहयाउल–उलूम और अल मुनकिज मिनल–जलाल इनकी सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में से हैं। उनका देहान्त ११११ ई० में हुआ।

"दर्शन के इतिहास" के लेखक जार्ज हेनरी लविस का कहना है, अगर देकार्त (१५९६–१६५०) के समय "एहयाउल–उलूम" का अनुवाद फ्रेंच भाषा में हो चुका होता, तो लोग यही कहते कि देकार्त ने एहयाउल–उलूम से चुराया है।

अल–गजाली ने अपने समय की समस्त दार्शनिक एवं अध्यात्मिक प्रवृत्तियों का परीक्षण किया। मूल रूप से इस्लाम के मुख्य अभिप्रायों को समर्थन देने में ये अंधविश्वासी धर्मशास्त्रियों के उद्देश्यों से सहमत थे। लेकिन इनके अनुसार उन लोगों के तर्क सशक्त नहीं थे क्योंकि वे आन्तरिक अनुभवों के गंभीर महत्व के प्रति अवहेलना का भाव लिए हुए थे। वे सत्ता को सूफी अनुभव के माध्यम से समझना चाहते थे जो उनके अनुसार, दिव्य व्यक्तित्व में मानव के विश्वास को समझने का एक मात्र साधन है।

देकार्त की भांति इन्होंने संमस्त दार्शनिक स्थितियों पर प्रसिद्ध कृति तहाफत–उल–फिलसाफ (दार्शनिक का खण्डन) में सन्देह व्यक्त किया है। साथ ही इन्होंने नैतिक एवं धार्मिक संकल्प के आधार पर सच्ची धर्मनिष्ठा भावना को प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया है।

चूंकि इन्होंने अरस्तूवाद को इस्लाम के शत्रु के रूप में लिया था, इसलिए ये अल–फरादी एवं इब्ने–सीना के दर्शनों से भी असहमत ही रहे। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये दोनों दार्शनिक अंधविश्वासपूर्ण ढंग से अरस्तू के दर्शन को एकमात्र संभव उस अध्यात्मपरक विद्यन के रूप में स्वीकार कर चुके थे, जिनके अंगर्तत समस्त तत्वमीमगग्सय एवं नीतिशास्त्रीय समस्याएं हल की जा सकती हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

दुआ में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का तवस्सुल

मौ० अशरफ अली थानवी (रह०)

(बअ़ज़ उ़लमा तवुस्सुल के क़ाइल नहीं उन से मअ़ज़िरत के साथ)

ह़ज़रत उमर बिन ख़त्ताब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि जब आदम अ़लैहिस्सलाम से ख़ता का इरतिकाब हो गया तो उन्हों ने जनाब बारी तआ़ला में अ़र्ज़ किया कि ऐ परवरदिगार मैं आप से बवास्त–ए मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के दरख़्वास्त करता हूँ कि मेरी मग़फ़िरत कर दीजिये तो ह़क़ तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया ऐ आदम तुम ने मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को कैसे पहचाना जब कि अभी मैने उन को पैदा भी नहीं किया। 'अ़र्ज़ किया कि ऐ रब मैंने इस तरह़ से पहचाना कि जब आप ने मुझ को अपने हाथ से पैदा किया और अपनी शरफ़ दी हुई रूह़ मेरे अन्दर फुंकी तो मैं ने सर जो उठाया तो अ़र्श के पायों पर लिखा हुआ देखा "लाइलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदु र्रसूलुल्लाह" सो मैं ने मअ़्लूम कर लिया कि आपने अपने नामे पाक के साथ ऐसे ही शख़्स के नाम को मिलाया होगा जो आप के नज़दीक सारी मख़लूक़ से प्यारा और महबूब होगा। ह़क़ तआ़ला ने फ़रमाया ऐ आदम तुम सच्चे हो, वाक़िअ़ में वह मेरे नज़दीक सारी तमाम मख़लूक़ से ज़ियादा प्यारे और महबूब हैं और जब तुम ने उन के वास्ते से मुझ से दरख़्वास्त की है तो मैंने तूम्हारी मग़फ़िरत की और अगर मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) न होते तो मैं तुम को भी पैदा न करता और ह़क़्क़ तआ़ला ने यह भी फ़रमाया कि वह तुम्हारी औलाद में सब अंबिया से आख़िरी नबी हैं।

(नशरित्तीब फी ज़िक्रे ह़बीब) जो साह़िब संजीदगी से इस रिवायत की तह़क़ीक़ फ़रमाएं सच्चा राही में उसे छापा जाएगा। (सम्पादक)

इसी किताब के पृष्ठ १७६ पर एक और रिवायत इस तरह़ लिखी है गो बअ़ज़ ने इस मसअले में कुछ ख़िलाफ़ भी किया है, मगर मसलक जम्हूर का इस का जवाज़ है जब कि ह़ुदूदे शरअ़ीया को मह़फ़ूज़ रखे इसी लिए मज़हबे मन्सूर यही हुआ।

पहली रिवायत : सुनने इब्निमाजा बाब सलातुल् ह़ाजह में उस्मान बिन ह़नीफ़ से रिवायत है कि एक शख़्स नाबीना नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि दुआ़ कीजिए मुझ को अल्लाह तआ़ला आ़फ़ियत दे। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : अगर तू चाहे तो इस को मुल्तवी (अनुलम्बित) रखूं और यह ज़ियादा बेहतर है और अगर चाहे तो दुआ़ कर दूं उस ने कहा दुआ़ ही कर दीजिए। आप ने उसको ह़ुक्म दिया कि वुज़ू करे और अच्छी तरह़ वुज़ू करे और दो रकअ़त पढ़े और यह यह दुआ़ करे :

ऐ अल्लाह मैं आप से दरख़्वास्त करता हूं और आप की तरफ़ मुतवज्जि होता हूं ब वसील–ए–मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) नबीये रह़मत के। ऐ मुह़म्मद मैं आपके वसीले से अपनी इस दुआ़ के साथ अपने रब की तरफ़ मुतवज्जिह हुवा हूं ताकि वह पूरी हो ऐ अल्लाह आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शफाअ़त मेरे ह़क़ में क़बूल कीजिए।"

इस से तवस्सुल सराह़तन साबित हुआ, और चूंकि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का उस के लिए दुआ़ फ़रमाना कहीं मन्क़ूल नहीं, इस से साबित हुआ कि जिस तरह़ तवस्सुल किसी दुआ़ का जाइज़ है इसी तरह़ तवस्सुल दुआ़ में किसी ज़ात का भी जाइज़ है और ह़ासिले तवस्सुल फ़िद्दुआ़ का यह है कि ऐ अल्लाह। फ़ुला बन्दा आप का मोरिदे रह़मत है और मोरिदे रह़मत से मह़ब्बत और एअ़तिक़ाद रखना भी मोजिबे जल्बे रह़मत है और हम उस से मह़ब्बत और एअ़तिक़ाद रखते हैं पस हम पर रह़मत फ़रमा और तवस्सुल बिलअ़माल में भी थोड़े तग़य्युर से यही तक़रीर है कि यह अ़माल आप के नज़दीक मूजिब रह़मत है और इन का फ़ाअ़िल भी मरह़ूम होता है और हम ने यह अ़माल किये थे पस हम पर रह़म फ़रमा, और इस में जो या मुह़म्मद (सल्ल०) उस से निदाए ग़ैब का सुबूत नहीं होता क्योंकि वह तो आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। नसई और तिर्मिज़ी में भी यह रिवायत है।

बैहकी ने इतना बढ़ाया है कि

वह खड़ा हो गया और बीना हो गया।

दूसरी रिवायत : इन्जाहुल हाजह में बअ्द तस्हीहे हदीसे मज़्कूर के कहा है कि तबरानी ने कबीर में उस्मान बिन हनीफ़ (रज़ि०) साबिकुज़्ज़िक्र से रिवायत किया है कि एक शख़्स हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि०) के पास किसी काम को जाया करता था और वह उसकी तरफ़ इलतिफ़ात न फ़रमाते उस ने उस्मान बिन हनीफ़ से कहा उन्होंने फरमाया तू वुज़ू कर के मस्जिद में जा और वह दुआ ऊपर वाली सिखला कर कहा यह पढ़, चुनांचि उस ने वही किया और अब हज़रत उ़स्मान के पास जो फिर गया तो उन्होंने बड़ी तअ़जीम व तकरीम (आदर तथा सम्मान) की और काम पूरा कर दिया।

इससे तवस्सुल बअ्दल वफ़ात भी साबित हुआ और सुबूत बिर्रिवायः के साथ दरायतन भी साबित है क्योंकि रिवायत अव्वल के ज़ेल में जो तवस्सुल का हासिल बयान किया गया है वह दोनों हालतों में मुशतरक है और निदा से शुब्हा यहां भी ना किया जाए दो वजह से एक तो मुतबादिर किस्से से यह है कि मस्जिद में जाने को फ़रमाया है सो वहां हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) करीब ही तशरीफ रखते हैं, निदाए ग़ैब लाज़िम नहीं आई, दूसरे सलफ़े स्वालेह़ खुश एअ़तिक़ाद (अच्छे पक्के विश्वास वाले) निदा ब कस्दे तब्लीग़े मलाइका (कि उनकी आवाज़ फिरिश्ते पहुंचा देंगे) उन के हाल से ज़ाहिर था, बख़िलाफ़ा इस वक्त के अवाम के कि अक़ीदे में ग़ुलू रखते हैं। इसी लिए उन को मनअ़ किया जाता है बल्कि उन की हिफ़ाज़त के लिए ख़वास को भी रोका जाता है। मेरे वह हज़रात (सलफ़ स्वालेह़) — निदा, हाजत रवा समझ कर न करते थे।

तीसरी रिवायतः हज़रत अनस (रज़ि०) की है हज़रत उमर (रज़ि०) जब लोगों पर क़हत पड़ता तो हज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) इब्नि अ़ब्दुल मुत्तलिब के वास्ते से दुआ बारिश की किया करते कि ऐ अल्लाह हम (पहले) आप के दरबार में अपने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का तवस्सुल किया करते थे, आप हम को बारिश देते थे और अब हम आप के दरबार में अपने पैग़म्बर के चचा का तवस्सुल करते हैं, सो हम को बारिश दीजिए चुनांचि बारिश होती थी। (बुख़ारी–मिशकात)

इस हदीस से गैर नबी के साथ भी तवस्सुल जाइज़ निकला जब कि उस को नबी से कुछ तअ़ल्लुक़ हो, क़राबते हिस्सीया का या क़राबते मअ़नवीया का तो तवस्सुल बिन्नबी की एक सूरत यह भी निकली और अहले फ़हम (बुद्धिमानों) ने यह भी कहा है कि इस पर तंबीह करने के लिए हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) से तवस्सुल किया न इस लिए कि पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के साथ वफ़ात के बअ्द तवस्सुल जाइज़ न था जब कि दूसरी रिवायत से इस का जवाज़ साबित है और चूंकि इस तवस्सुल पर किसी सहाबी से नकीर मनकूल नहीं इस लिये इस में इज्माअ़ के मअ़ना आ गये।

चौथी रिवायतः अबुल जौज़ा से है कि मदीने में सख़्त कहत हुआ, लोगों ने हज़रत आइशा (रज़ि०) से शिकायत की आप (रज़ि०) ने फ़रमाया नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की क़ब्र मुबारक को देख कर उस के मुकाबिल आस्मान की तरफ उस में एक मनफ़ज़ (छेद) कर दो यहां तक कि उस के और आसमान के दरमियान हिजाब न रहे, चुनांचि ऐसा ही किया तो बहुत ज़ोर की बारिश हुई (दारमी) यअ़नी ऊपर तवस्सुल बिल्क़ौल साबित हुआ था इस से तवस्सुल बिलफ़िअ़ल भी जाइज़ साबित हुआ, इस के मअ़ना भी ब जबाने हाल यह थे कि यह आप के नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की क़ब्र है जिस को हम तलब्बुसे जसदे नबवी की वजह से मुतबर्रक समझते हैं और नबी की मलाबिस चीज को मुतबर्रक समझना यह बवजह इस के कि अलामत है एअतिक़ादे अ़ज़मते नबी की अ़मले मर्ज़ी और मूजिबे रहमत है पस हम पर रहम फ़रमाइये।

पांचवीं रिवायतः मवाहिब में ब सनद अबुल मंसूर सब्बाग़ और इब्नुन्नज्जार और इब्नि अ़साकिर और इब्नुल जौज़ी रहिमहुमुल्लाह तआ़ला मुहम्मद बिन हर्ब हिलाला से है कि मैं क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत कर के सामने बैठा था कि एक अअ़राबी आया और ज़ियारत कर के अ़र्ज़ किया : "ख़ैरुर्रुसुल! अल्लाह तआ़ला ने आप पर एक सच्ची किताब नाज़िल फ़रमाई जिस में इरशाद है : (अनुवाद) "और अगर यह लोग जिस वक़्त अपना नुक़्सान कर बैठे थे उस वक़्त आप की ख़िदमत में हाज़िर हो जाते फिर अल्लाह तआ़ला से मुआफ़ी चाहते और रसूल भी उन के लिए अल्लाह तआ़ला से मुआफी चाहते तो ज़रूर अल्लाह तआ़ला को क़बूल कर लेने वाला और रहमत करने वाला पाते" (अन्निसाः६४) और मैं आप के पास अपने गुनाहों से इस्तिगफार करता हुआ और अपने रब के हुज़ूर में आप के वसीले से शफ़ाअ़त चाहता हुआ आया हूं। फिर दो शिअ़र पढ़े। इन मुहम्मद बिन हर्ब की वफ़ात २२८ हि० में हुई, ग़रज़ ज़माना ख़ैरूल क़ुरून का था और किसी से उस वक़्त नकीर कन्क़ूल नहीं पस हुज्जत हो गया।

कुर्आने शरीफ पर तस्लीमा नसरीन के आरोप का न्यायपूर्ण उत्तर

मौलाना अब्दुल करीम पारेख (रह०)

नोट : २५.५.२००७ को लिखा गया यह उर्दू लेख हम को कुछ देर से मिला, अभी इस के अनुवाद का अवसर न निकल पाया था कि ११ सितम्बर को मौलाना का देहान्त हो गया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन मौलाना के इस यादगार लेख के संक्षेप का अनुवादा नवम्बर २००७ के सच्चा राही में छापा जा रहा है।

भाइयो! इन्सानी जिन्दगी के सब दिन खुशी के नहीं रहते, आज एक दुख भरी कहानी सुनने को मिली १७ अप्रैल "दैनिक भास्कर" के पे. न. २ पर यह खबर छपी है कि मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में जहां सदियों मुस्लिम बेगमात ने राज किया है, बंगला देश की तस्लीमा नसरीन ने अपने जीवन की घटनाए बताईं, उन्होंने कहा कि बचपन मे मेरी मां कहती थी कि कुर्आन पढ़ो, मां से जब कुर्आन का अर्थ जानना चाहा तो उन्होंने कहा कि अर्थ का महत्व नहीं होता इसे तो बे समझे पढ़ने ही से अल्लाह खुश होगा। तस्लीमा कहती हैं कि बड़ी होने पर जब मैंने कुर्आन का बंगला अनुवाद पढ़ा तो चकित रह गई कि इस में तो केवल मर्दों के अधिकार की बात कही गयी है। इसे मर्दों ने अपने मतलब के लिये लिखा है, अतः इस्लाम से मेरा भरोसा उठ गया। (इस कथन से तस्लीमा इस्लाम से निकल गई– अनुवादक)

मेरा अनुमान है कि तस्लीमा कुर्आन समझ न सकीं मैं भारत के १०० करोर निवासियों को कहता हूं कि कुर्आन मजीद आप समझ कर पढ़ेंगे तो ज्ञात होगा कि लोग कुर्आन के विषय में बहुत सी झूठी बातें चलाते हैं, अफसोस तो इस पर है कि बहुत से मुसलमानों को भी नहीं ज्ञात है कि कुर्आन में क्या है। मैं बताता हूं कि जिस नगर में तस्लीमा ने कहा कि इस्लाम ने औरतों को कोई अधिकार नहीं दिया उस नगर में कई मुस्लिम बैगमात ने राज किया है। तस्लीमा कुर्आने मजीद को माने या न मानें कुर्आन को खालिके कायनात ने इन्सानों की हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिए भेजा है। यह अल्लाह की आखिरी किताब है, इस से पहले भी आसमानी किताबें आई हैं जैसे तौरेत, जबूर इंजील आदि। हम मुसलमान इन सब किताबों को आसमानी किताब मानते हैं। कुर्आन मजीद स्वयं अपना परिचय इस प्रकार देता है।

यह कुर्आन रब्बुलआलमीन की ओर से उतारा गया है। रूहुल अमीन फिरिश्ता इसे लेकर उतरा है। ऐ नबी आप के दिल पर इस को उतारा गया है ताकि आप भी लोगों को अजाबे इलाही से डराने वालों में से हों। इसे स्पष्ट अरबी जबान में उतारा गया है। (२६:१९२–१९५)

तस्लीमा ने अगर कुर्आन पढ़ा होता तो वह इसे मर्दों की तस्नीफ न कहतीं कि इसे मर्दों ने अपने मतलब के लिए लिखा है, यह तस्नीफ (रचना) नहीं रब्बुल आलमीना की ओर से तन्जील (अवतरण) है।

अब मैं बताऊंगा कि कुर्आन ने औरतों को क्या क्या अधिकार दिये हैं और क्या पद प्रदान किया है : "फिर रब ने उस की दो किस्में कर दीं किसी को मर्द बना दिया किसी को औरत।" (७५:३९) "और तुम दोनों मियां बीवी में प्रेम तथा करूणा उत्पन्न कर दी।" (३०:२१)

सोचने की बात है औरत अगर न होती तो संसार में मानव वृद्ध कैसे होती, कुर्आन ने साफ कहा : "ऐ लोगो ! अपने रब का डर रखो, जिस ने तुम को एक जीव से पैदा किया और उसी जीव से उस का जोड़ा (औरत) पैदा किया और इन दोनों से बहुत से पुरूष और स्त्रियां फैला दीं। (४:१)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तो निकाह को (अर्थात अच्छी पत्नी प्राप्ता करने को) आधा ईमान बताया है।

मैं सभी लोगों से कहता हूं कुर्आन समझ कर पढ़िये नहीं समझ पाते तो बे समझे ही खुदा का कलाम अकीदत (श्रद्धा) से पढ़िये, समझें या न समझें अवश्य पढ़िये सवाब मिलेगा, लेकिन उलमा ने अनुवाद कर दिये नोट्स भी लिख दिये सम्भव हो तो अनुवाद टिप्पणी सहित पढ़िये।

इन्सान किसी झाड़ पहाड़ से नहीं पैदा होता वह तो किसी औरत द्वारा ही जगत में आता है, देखिये कुर्आन स्पष्ट कहता है :

"हम ने इन्सान को आदेश दिया कि वह अपने मां बाप के साथ सदव्यवहार करे, उस की मां थक थक कर उस का बोझ लादे रही है, उस को दूध पिलाने में दो साल लगाए, ऐ इन्सान तू मेरा और अपने मां बाप का हक मान, तुम को मेरी ही ओर वापस आना है। (३१:१४) क्या इस आयत में मां का सम्मान नहीं है? औरतों पर एक दर्जा होता है सब दर्जे में बराबर नहीं होते पस अगर मर्द का औरत पर एक दर्जा है तो इस में औरत की तौहीन नहीं है।

औरतों से मर्दों के कई रिश्ते होते हैं, एक रिश्ता बीवी का होता है, एक रिश्ता मां का होता है, एक रिश्ता बहन का होता है, एक रिश्ती बेटी का होता है, एक रिश्ता बहू का होता है, कोई औरत बताए इस में किस रिश्ते में मर्द उस का अपमान करता है और वह इन में से किस रिश्ते को घृणा दृष्टि से देखती है? कुर्आन उतरने से पहले अर्थात इस्लाम से पहले अरब देश के कुछ जाहिल क्रूरता की सीमाओं को पार करते हुए अपनी बेटियों को जीवित गाड़ देते थे, कुर्आन ने इस पर सख्त नकीर (घोर आपत्ति) की तस्लीमा पढ़ें:

"और जब जीवित गाड़ी हुई पुत्री से पूछा जाएगा कि वह किस अपराध में मारी गई।" (८१:८,९)

खुदा कहेगा कि किसी को लड़का बनाना या लड़की बनाना यह तो मेरा काम था उस अबला ने क्या पाप किया था?

हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो फरमाया तस्लीमा उसे पढ़ें।

जिस ने एक बेटी का पालन पोषणा किया उसे जन्नत, जिसने दो बेटियों को पाला पोसा उसे भी जन्नत।

इस्लामी जीवन में बेटियों को पालन पोषण का स्थान बड़ा ऊंचा है। कुर्आन में औरत के आदर का वर्णन बारमबार मिलता है अनादर का एक बार भी नहीं। मर्द औरत की जिम्मेदारियां बटी हुई हैं, बच्चे को दूध पिलाने का काम औरत ही कर सकती है, लेकिन इसमें झगड़ा पड़ जाए तो कुर्आन कहता है:

और अगर परस्पर अन बन हो जाए तो दूसरी दूध पिला दो। (६५:६) क्या मर्द को औरत से छुटकारा है और क्या इसमें औरत का आदर नहीं किया गया? उस को दूध पिलाने पर मजबूर नहीं किया गया।

मर्द अगर किसी औरत को बीवी बनाना चाहे तो इस्लाम की शिक्षा के अनुसार समय का शासक भी उस की अनुमत के बिना उसे बीवी नहीं बना सकता अब अगर वह जब्र करे तो इस का इस्लाम से क्या सम्बन्ध? इस्लाम ने औरत को कितना ऊंचा मकाम दिया।

कुर्आन ने कहा :

अगर तुम एक पत्नी के स्थान पर दूसरी लाना चाहो तो चाहे तुम उसे ढेरों माल दे चुके हो वापस न लेना। (४:२०) तस्लीमा बताएं यहां औरत का सम्मान है या अपमाना ?

सुनिये मैं इस्लाम में औरत के अधिकार बयान करता हूं :

लड़की जिस दिन पैदा हुई अपने बाप की बिल्डिंग में उस के सोना, चांदी में, उस के बैंक बैलेंस में भागीदार हो गई। शादी हुई महर की मालिक बनी न घर बनाने की फिक्र, न कपड़े की फिक्र, न खाने की सब शौहर को करना है, बल्कि शौहर की प्राप्टी में भागीदार बन गई, खुदा न करे उसका शौहर बहुत बड़ा सेठ था और निकाह ही के दिन किसी एक्सीडेंट में चल बसा। इस्लाम उस अरब पती की सम्पत्ति से औरत को हिस्सा दिलाता है। आम तौर से बहन भाई के तर्के से कुछ नहीं पाती लेकिन अगर भाई लावारिस हो कर मरे मगर उस की बहन हो तो कुर्आन में उस का हिस्सा बयान हुआ है।

अगर कोई मर्द ऐसा मर जाए कि उस के औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो उस के तर्के में वह आधे की भागीदारी हो गयी। (४:१७७)

औरतों के लिए कुर्आने मजीद में बहुत सी सहूलतें बयान हुई हैं इस वक्त इतने ही पर इक्तिफा करता हूं और बहन तस्लीमा के लिए हिदायत की दुआ करता हूं।

गठिया रोग का साकारण उपाय

आज विश्व में गलत आहार विहार विरूह के कारण ६० प्रतिशत लोग कठिया के मरीज हो रहे हैं। इस का उपचार साध ारण प्रक्रिया से किया जा सकता है।

सुबह ५–६ बजे नीम व तुलसी की पांच पांच पत्तियां पानी से लें।

नाश्ते में मट्ठा और सेब लेना अच्छा है।

भोजन में सलाद अधिक लेना आवश्यक है।

शल्लाकी कैपसूल सुबह शाम लेना आवश्यक है।

वात पित्त कफ रोगों की विषमता से गठिया रोग होता है।

सुबह शाम व्यायाम आवश्यक है। सूजन पर नीम की पत्ती का रस लगाने से सूजन और दर्द खत्म होता है।

दालों में मूंग मसूर लेना लाभकारक है।

मटर, आलू, पनीर, गोभी तली भुजी चीजें कम लें।

आयुर्वेद के पुनर्नवारिष्ट सुबह शाम पानी मिला कर लें। (डा० अजय शर्मा)

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : नमाज़ में क़ुर्आने मजीद की अ़रबी इबारत पढ़ना फ़र्ज़ है या उस का अनुवाद किसी ज़बान में पढ़ दिया जाए, जब भी नमाज़ हो जाएगी?

उत्तर : नमाज़ में क़ुर्आने मजीद की अस्ल इबारत पढ़ना फ़र्ज़ है, किसी ज़बान में तर्जमा पढ़ने से नमाज़ न होगी यहां तक कि आयत के मफ़हूम को अ़रबी ही के दूसरे अल्फ़ाज़ में पढ़ने से नमाज़ न होगी।

प्रश्न : अगर किसी को क़ुर्आने मजीद की कोई सूरत याद न हो और न याद कर सकता हो यअ़नी उस की ज़बान से अ़रबी अल्फ़ाज़ अदा न होते हों तो वह क्या करे या आयतें याद हों मगर अ़रबी न जानने के सबब तोते की तरह नमाज़ में पढ़ने से दिल पर असर न होगा, ख़ुशूअ़ (विनम्रता) न पैदा होगा तो वह क्या करे?

उत्तर : जिस शख़्स को क़ुर्आने मजीद की कोई सूरत याद न हो तो उस को चाहिए कि याद करने की कोशिश करे और जब तक याद न हो जाए वह फ़िक़्ह की इस्तिलाह़ (परिभाषा) में उम्मी समझा जाएगा वह अन्दाज़े से जितनी देर में ज़रूरी क़िराअता की जा सकती है। उतनी देर तक मौन खड़ा रहे और जिस की ज़बान से अ़रबी अल्फ़ाज़ निकलते ही न हों (ऐसा शाज़ व नादिर ही हो सकता है) ऐसे शख़्स को इख़्तियार है चाहे उम्मी की तरह चुप चाप खड़ा रहे और चाहे सूर–ए–फ़ातिहा और दूसरी छोटी सूरतों का तर्जमा किसी आ़लिम से अपनी ज़बान में करवा कर नमाज़ में पढ़ लिया करे। अगर किसी माहिर क़ारी से सम्बन्ध करे तो वह क़ुर्आन मजीद के अल्फ़ाज अदा करवा सकता है कुछ मेह़नत पड़ेगी। नफ़ह़तुल कुदसिया की अ़रबी इबारत का तर्जमा इस तरह़ है :

वह शख़्स जो अ़रबी ज़बान न जानने के सबब से मआ़नी (अर्थ) नहीं समझ सकता उस को चाहिए कि बे मअ़ना (अर्थ) समझे हुए क़ुर्आन मजीद के असली अल्फ़ाज़ नमाज़ में पढ़े हां इस बात की कोशिश करना उसके लिए ज़रूरी है कि अ़रबी ज़बान से इतनी जानकारी पैदा करे कि उस से क़ुर्आने मजीद के मअ़ना (अर्थ) समझने लगे। रह गई यह बात कि बेमअ़ना समझे हुए पढ़ने में ख़ुशूअ़ (विनम्रता) न पैदा होगा बिल्कुल ग़लत और मुशाहदे (प्रत्यक्षदर्शन) के ख़िलाफ़ है। हम देख रहे हैं कि सैकड़ों मअ़ना समझने वालों को नमाज़ में कुछ भी ख़ुशुअ़ नहीं होता और मअ़ना (अर्थ) न समझने वाले बहुत से लोगों को ख़ुशूअ़ (विनम्रता) की कैफ़ियत ह़ासिल होती है, वास्तविकता यह है कि ख़ुशूअ़ का होना मअ़ना समझने पर मौक़ूफ़ (निर्धारित) नहीं बल्कि ख़ुशूअ़ (विनम्रता) रिक़्क़ते क़ल्ब (करूणामय हृदय) और क़ुव्वते ईमान (ईमान की शक्ति) से पैदा होता है। बल्कि कोई शख़्स मअ़ना समझता हो और वह नमाज़ में अपना ख़याल पूरी तरह़ मअ़ना (अर्थ) में लगा दे तो यक़ीनन (निस्संदेह) यह भी एक सबब (कारण) ख़ुशूअ़ (विनम्रता) न पैदा होने का बन जाएगा।

प्रश्न : क्या इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) के नज़दीक भी क़ुर्आने मजीद का तर्जमा पढ़ लेने से नमाज़ नहीं होगी?

उत्तर : हां इमाम अबू ह़नीफ़ा (र०) के नजदीक भी नमाज़ में क़ुर्आन का तर्जमा पढ़ लेने से नमाज़ न होगी। हां कभी वह इस के क़ाइल थे कि तर्जमा भी क़ुर्आन है और उस से नमाज़ हो जाएगी लेकिन जब उन को अपनी दलील की कमज़ोरी का ज्ञान हो गया तो उन्होंने इस बात से रूजूअ़ (प्रत्यागमन) कर लिया। उन का रूजूअ़ (प्रत्यागमन) फ़िक़्ह की तमाम किताबों में नीज़ बअ़ज़ दूसरी किताबों में दर्ज है, हिदाया, शरह़ हिदाया इब्नि मालिक की शरहे मनार, किफ़ाया, तल्वीह़, ह़ाशिया बैज़ावी, तफ़्सीरे अह़मदी, तफ़सीरे रूहुल मआ़नी में रूजूअ़ देखा जा सकता है।

प्रश्न : जो लोगा इस बात को मानते हैं कि क़ुर्आन का तर्जमा (अनुवाद) क़ुर्आन नहीं है और नमाज़ में तर्जमा पढ़ने से नमाज़ नहीं होती वह कौन लोग हैं?

उत्तर : तमाम उलमाए उम्मत और मुजाहिदीने शरीअ़त यही मानते हैं कि तर्जमा क़ुर्आन नहीं है, ख़ास तौर से इमाम शाफ़ई, इमाम अह़मद, काज़ी अबू यूसुफ़ और इमाम अबू ह़नीफ़ा का नाम लिया जा सकता है। इन का कहना है कि क़ुर्आन अ़रबी ही वाला कहलाएगा, ख़ुद क़ुर्आन में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं "इन्ना इन्ज़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ़रबिय्यन। बेशक हम ने इसको अ़रबी

क़ुर्आन उतारा है। (१२:२) बि लिसानिन् अ़रबिय्यिम्मुबीन् (वाज़िह स्पष्ट अ़रबी ज़बान में) (२६:१६५) व हाज़ा लिसानुन् अ़रबिय्युम्मुबीन् (यह क़ुर्आन साफ़ अ़रबी ज़बान में है।) (१६:१०३)

नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के सामने बहुत से अ़जमी (अ़रबी न जानने वाले) लोग इस्लाम लाए थे जो अ़रबी ज़बान बिल्कुल न समझते थे आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने किसी को यह हुक्म नहीं दिया कि तुम क़ुर्आन का तर्जमा अपनी ज़बान में कराकर नमाज़ में पढ़ लिया करो।

प्रश्न : नमाज़ की नीयत अ़रबी ज़बान में कहना चाहिए या अपनी मादरी ज़बान में भी जाइज़ है?

उत्तर : अस्ल (वास्तविकता) तो यह है नीयत दिल के इरादे का नाम है ज़बान से कुछ कहना नीयत ही नहीं न नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और सह़ाब–ए–किराम का यह दस्तूर (नियम) था बअ़द के लोगों ने इस ख़्याल से कि कभी आदमी फ़िक्र में होता है दिल में इरादा करने का ख़याल नहीं होता जब ज़बान से कहेगा तो दिल में इरादा भी आ जाएगा, कुछ उ़लमा ने इसे बिदअ़ते ह़सनः लिखा है, लिहाज़ा अगर नीयत ज़बान से की जाए तो अ़रबी ज़बान ज़रूरी नहीं अपनी ज़बान में कह ले मगर याद रहे ज़बान चली मगर दिल में इरादा न हुआ तो नीयत न हुई जब कि दिल में इरादा हो गया जबान से कुछ न कहा नीयत हो गई मगर तह़रीमा अल्लाहु अकबर ज़बान से कहना ज़रूरी है। इन सभी जवाबों में मौलाना अब्दुश्शकूर फारूकी

(शेष पृष्ठ २२ पर)

क़ुर्आन पढ़ाओ

शमीम

ख़ुद भी बचो बच्चों को जहन्नम से बचाओ
क़ुर्आन पढ़ाओ इन्हें क़ुर्आन पढ़ाओ
बातिल के समन्दर में है ईमान की कश्ती
और कुफ़्र के तूफ़ां के थपेड़ों में है सख़्ती
तुम डूबने से अपने सफ़ीनों को बचाओ
क़ुर्आन पढ़ाओ इन्हें क़ुर्आन पढ़ाओ
दस्तूरे दीन छोड़ के अंग्रेज़ बने हो
अपनाए ऐसे काम कि चंगेज़ बने हो
तौबा करो तुम ख़ुद को मुसलमान बनाओ
क़ुर्आन पढ़ाओ इन्हें क़ुर्आन पढ़ाओ
क्यों मग़रिबी तहज़ीब के सांचे में ढले हो
क्यों हाथ में बातिल का अ़लम ले के चले हो
क़ुर्आन पढ़ाओ इन्हें क़ुर्आन पढ़ाओ
घर–घर में शयातीन का रहता है बसेरा
क्यों रेडियो टीवी पे रहता है बसेरा
लिल्लाह मकानों से शयातीन भगाओ
क़ुर्आन पढ़ाओ इन्हें क़ुर्आन पढ़ाओ
सर पर शमीम इक रोज़ ह़सीं ताज बन्धेगा
फ़िरदौसे मुक़द्दस में तुम्हें घर भी मिलेगा
बच्चों को अगर हाफ़िज़े क़ुर्आन बनाओ
क़ुर्आन पढ़ाओ इन्हें क़ुर्आन पढ़ाओ

(पृष्ठ २० का शेष)

की लाइन लगने लगी। अब यह रोज़ एक नई सूरत पढ़ते और कहते कि यह सूरत मुझे स्वप्न में सिखाई गई, फिर नमाज़ की विधि भी बताई गयी।

इस तरह दो हफ़्तों में बाबा जी के पास कई हज़ार रूपये आ गये जो उनके छोटे से परिवार के लिये दो साल के लिये काफ़ी थे। फिर एक रात बाबा ने फ़ैसला किया कि अब इस माले ग़नीमत को ग़नीमत जानो और रातों रात नक़दी और जो क़ीमती कपड़े ले जा सकते थे कपड़े समेटे और वहां से चम्पत हो कर अपने बीवी बच्चों में आ गये लेकिन कपड़ों की वह पोटली जो उन्होंने बाबा बनने से पहले बान्धी थी जिस में मौलियाना कपड़े थे वहीं भूल आए। जब वह पोटली खोली गयी तो तज्रिबा कारों ने बाबा जी के राज़ को भांप लिया और कहा कोई हरज नहीं जो कुछ ले गया अपना ही आदमी ले गया।

दुन्यादार मौलवी

अबू मर्गूब

कहते हैं एक मौलवी जी को उनकी बस्ती वाले नज़र अन्दाज़ (उपेक्षा) किये हुए थे। न बच्चे पढ़वाते न इमामत के बहाने कुछ देते। मौलवी साहिब न मेहनत मज़दूरी कर सकते थे ना ही उन के पास कोई आमदनी वाली जायदाद थी। तीन छोटे बच्चे थे बीवी थी। वह बहुत परेशान थे।

एक रोज़ बीवी से कहा एक दो वक़्त की रोटियां पका दो मैं तलाशे मआश (रोज़ी की खोज) में किसी क़स्बे या शहर जाऊंगा। बीवी बोली मैं रोटी तैयार किये देती हूं, मैं समझती हूं आप यहीं मेहनत करते तो कोई ऐब की बात न थी। आवाज़ तो दी हुई अल्लाह की है आप की आवाज़ अच्छी नहीं है। अगर्चि आप सहीह पढ़ते पढ़ाते हैं। मगर लोग आवाज़ के पीछे भागते हैं। अच्छा आप कहीं जा रहे हैं तो हजामत तो बनवा लीजिए, आप के बाल तो बिल्कुल बाबाओं जैसे हैं।

मौलवी साहिब बोले बाल मैं बाज़ार में बनवा कर निकल जाऊंगा तुम रोटी तैयार कर दो।

रोटी तैयार हो गई, रोटी बांधी बीवी बच्चों को प्यार किया और २०० किलो मीटर दूर कस्बा ग़फ़ूर पूर का रूख़ किया जिस सवारी से गये हों दूसरे रोज़ गफ़ूर पुर की जामेअ मस्जिद के गेट से १०० मीटर फ़ासले पर बैठ गये। रास्ते में कपड़े उतार कर एक पोटली बनाई। टीका चन्दन लगाकर बाबा बने कहीं से एक मोटी सूखी लकड़ी हासिल कर ली थी, उस को जला कर उस के पास बैठ गये।

नवजवान लड़के डान्ट कर भगाने लगे और बाबा से पूछने लगे कहां से आए हो यहां मस्जिद के सामने तुम कैसे बैठ सकते हो, जाते हो कि घसीट कर दूर करें, मगर बाबा जी ने तो मौन साध ली एक लफ़्ज़ न बोले इतने में कुछ बूढ़े लोग भी आ गये और यह माजरा देख कर नव जवानों को समझाया कि यह तो गूंगा पागल लगता है न मारो न घसीटो यह ख़ुद ही किसी वक़्त भाग जाएगा।

दो दिन बाद जुमअ का दिन आ गया। सुब्ह के वक्त एक नवजवान लड़के को इशारे से बुलाया और बोलने लगे कहा यह रसूलुल्लाह क्या होता है? आज रात मैं ने स्वप्न में एक व्यक्ति को देखा मैं गूंगा था उन्होंने मेरे मुंह में थूक दिया बस मैं बोलने लगा, उन्होंने कहा मैं रसूलुल्लाह हूं मुझे हुक्म दिया कि तू मस्जिद जाकर मुसलमान हो जा।

वह नवजवान उछल पड़ा जल्दी से एक भीड़ बुला लाया और कहा देखो यह बाबा क्या कहता है। लोगों के मुतालबे पर बाबा ने फिर अपना क़िस्सा दुहराया। फिर क्या था बाबा के लिये नई लुंगी नया कुर्ता नई टोपी नई चप्पल लाई गयी बाबा को नहला धुला कर मस्जिद लाया गया, कल्मा पढ़ाया गया, खाने पीने का इन्तिज़ाम किया गया और एक अच्छे हुजरे में ठहराया गया। हर तरफ़ यही चर्चा था, तक़्दीर हो तो ऐसी हो एक साधू बाबा को हुज़ूर सल्लल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई और इस्लाम लाने का हुक्म मिला और बिला ताख़ीर तौफ़ीक़ भी मिली।

लोगों ने सिखा पढ़ा कर जुमे की नमाज़ के लिए तैयार किया। उनको समझाया कि नमाज़ अरबी ज़बान में अदा की जाती है, आप को जल्द ही कुछ सूरतें और नमाज़ में पढ़ी जाने वाली चीजें रटा दी जाएंगी अभी तो आप बग़ल के नमाज़ी को देखकर उस के साथ खड़े हों, रूकूअ करें सजदे करें अल्लाह तआला आप की नमाज़ क़बूल करेगा।

बाबा जी ने जुमा, अस्र, मग़रिब और इशा देख कर अदा की, खाना खाकर सो गये सुब्ह उठे तो फ़ज्र की नमाज़ से पहले ही इमाम साहिब को बताया कि रात फिर वह स्वप्न में आए और जो सिखा गये उस की आवाज़ तो मुझे याद है लेकिन मैं नहीं जानता वह क्या है।

इमाम साहिब ने कहा ज़रा मुझे भी सुनाइये तो बाबा ने अऊज़ु बिल्लाह व बिस्मिल्लाहि के साथ अल्हम्दु और क़ुल हुवल्लाह सुना दी। इमाम साहिब उछल पड़े और नमाज़ के बाद अपने ख़ास लोगों से बताया और कहा कि कितना ख़ुश क़िसमत है यह नव मुस्लिम कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सीधे इस को पढ़ा रहे हैं। जब यह ख़बर लोगों में फैली तो ज़ियारत करने वालों और नज़राना पेश करने वालों

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सत्य की खोज ने

मुझे इस्लाम तक पहुंचा दिया

अमरीकी पादरी अब्दुल हक

मैं पादरी अब्दुलहक था, यह नाम मुझे मेरे पिता ने दिया था, जहां तक मुझे याद है मैंने अपने किसी दूसरे ईसाई साथी का अपना हम नाम नहीं पाया, लेकिन न जाने क्या बात थी, या मेरे नाम का असर था या मेरे मिजाज की विशेषता कि मैं बचपन ही से हर मामले में सत्य की खोज किया करता था। जब मेरी पढ़ाई प्रारम्भ हुई तो उस समय भी अपने क्लासमेट से बहस व तकरार किया करता था। यह मेरे मिजाज के बिल्कुल उल्टा था कि मैं बगैर किसी वजह के कोई बात सरलता से ग्रहण कर लूं। अचानक एक दिन मेरे एक क्लासमेट ने मुझ पर ताना कसा कि मैं ईसाई नहीं हूं बल्कि मैं मुसलमान हूं, चूंकि यह नाम मुसलमानों का होता है, मेरे दोस्त का कहना था कि मैं अपना कोई दूसरा हम नाम ईसाई खोज करके साबित करूं कि ईसाइयों में भी यह नाम रखा जाता है। मैंने बहुत कोशिश की कोई दूसरा मेरा हम नाम ईसाई न मिला तो मैंने अपने माता पिता से इस मामले की छान बीन की, उनका जवाब था कि उन्होंने मेरा नाम बहुत सोच विचार कर रखा है। चूंकि यह नाम मुसलमानों में आम है इस लिए मैं ईसाई धर्म की पढ़ाई पूरी करने के बाद जब मुसलमानों में जाकर ईसाई धर्म का प्रचार करूं तो लोग मुझे सरलता से पहचान न सकें एवं मुसलमान मुझे अपना मुसलमान भाई समझ कर ही मेरी बात सुने, तथा मैं मुसलमानों के दिलो में ईसाई धर्म का ज्ञान कराता रहं

अतः ऐसा ही हुआ जब मैं ईसाई धर्म की मिशनरी का भाग बन गया तथा मुसलमानों की महफिलों में बैठ कर खामोश तरीके से ईसाई धर्म का प्रचार करने लगा तो मुसलमान मुझे पहचान नहीं पाते और मेरी बातों को ध्यान लगा कर सुनते थे परन्तु अजीब बात यह थी कि मैं मुसलमानों की महफिलों मे जाकर उनसे बहस करने में कामयाब नहीं होता था मेरी तबीयत में ख्याल पैदा हुआ कि जब मेरा नाम इस्लामी तर्ज का है तो मैं इस्लाम धर्म की अस्लियत को जानने की कोशिश क्यों न करूं। यह अच्छा मौका था हुक्म खुदावन्दी कि मुझे कुछ ऐसे मुसलमान दोस्त मिल गये जिन्होंने इस्लाम का मुताला करने में मेरी सहायता की तथा मेरे सैकड़ों पेचीदा प्रश्नों के बारे में मुझे समझा कर सन्तुष्ट किया मेरे दिमाग में तस्लीस (त्रीईश्वरवाद) का मसला बुरी तरह परेशानी की वजह बना हुआ था, मुझे मेरे मुस्लिम दोस्तों ने ऐसी कई किताबें दिला दीं जिन को पढ़ने से मेरी मानसिक परेशानी दूर हुई और मुझे समझ आयी कि खुदा एक है उसका कोई शरीक नहीं, वह हर वस्तु को बनाने तथा बिगाड़ने की शक्ति रखता है उसके एख्तियारात में कोई दखल अन्दाजी नहीं कर सकता वह हस्ती खुदा क्यों कर हो सकती है जिसके एख्तियारात में कोई दखल अन्दाजी करे या उसके कोई औलाद हो। ईसाइयत की सोच सही नहीं है कि खुदा कादिरे मुत्लक होने के बावजूद अपने वजूद के दो मजीद हिस्से रखता हूं। मसीह एवं मरयम उससे अलग हैं, उसके बावजूद खुदा ही की तरह बाइख्तियार हैं यह एक ऐसी बात है जो मनुष्यों के बुद्धि में न आयी और न कभी आ सकती है, फिर भी सारी ईसाई दुन्या उस पर ईमान रखती है। इस का उल्टा जब इस्लामी किताबों से मुझे ज्ञात हुआ कि इस्लाम के पैगम्बर ने खुदा के एक होने का सन्देश पहुंचाया है और सारी दुन्या को सबक पढ़ाया है कि जमीन व आसमान में किसी की जात पूजने योग्य नहीं है, वह अकेला ही है जिसने इस सारी कायनात (सृष्टि) को बनाया, हर वस्तु उसी पर आश्रित है, एक पत्ता भी उस के आदेश के बिना हिल नहीं सकता जो की ईसाइयत में कहां गया है कि खुदा, मसीह और मरयम जब किसी बात पर सहमत होते हैं तो कायनात (सृष्टि) का कारोबार चलता है नहीं तो कुदरत के काम रूके रहते हैं।

सत्य की गूढ़ जानकारी के लिए मैं ने कुर्आने मजीद का अध्ययन किया और उसके मुखतलिफ तर्जमों को पढ़ा, मुझे आश्चर्य था कि सारी दुन्या में मुसलमान एक ही स्वर तथा विधि से कुर्आन की तिलावत करते हैं, उन की मातृ भाषाएं अलग अलग हैं लेकिन कुर्आने मजीद पढ़ने की विधि सब की एक है। बच्चे हों या जवान, औरतें हों या मर्द, सब एक ही प्रकार से कुर्आने

मजीद की तिलावत करते हैं। कोई व्यक्ति कहीं से गलत पढ़ता है तो दूसरा टोककर सहीह करा देता है।

उसके उपरान्त ईसाई अपनी इच्छा अनुसार बाइबिल पढ़ते हैं और कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि बाइबिल पढ़ने का उसका लहजा सही है। हर ईसाई दूसरे ईसाई के बाइबिल पढ़ने के लहजे से संतुष्ट नहीं होता है, जबकि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का कुरआन सुनकर झूमने लगता है तथा उस पर रूहानी कैफियत तारी हो जाती हैं मैं ईसाई अब्दुलहक था, परन्तु धीरे–धीरे मुसलमान अब्दुलहक बनता जा रहा था। अगरचः यह सारा परिवर्तन मेरे हृदय में ही रहा था और मैं खुद पर जबर करके अपने व्यक्तित्व को ईसाइयत में बन्द किये हुआ था, लेकिन मेरी नियत सच्ची थी और मैं अपने व्यक्तित्व को सत्य की खोज में डिबो चुका था, उस अल्लाह की तरफ से मुझे हिदायत मिलना यकीनी बन गया था। मुंझे इस का अन्दाजा नहीं था कि मसीही मेरे नाम की रिआयत से जो फाइदा उठाना चाहते हैं उस का नतीज़ा उल्टा ही निकलेगा, यअनी अल्लाह की दी हुई तौफीक से मुझे इस्लाम की दौलत मिल जाएगी, और मैं मुसलमानों को ईसाइयत की शिक्षा देने के बजाए ईसाइयों ही को इस्लाम की शिक्षा देना आरम्भ कर दूंगा।

एकेश्वरवाद (वहदानियत) की बात के साथ, इस्लाम के समाजी नियमों ने भी मुझे बहुत प्रभावित किया मुस्लिम इलाकों में जाकर मैं रहने लगा तो अन्दाजा हुआ कि इस्लामी सूसाइटी में एक सिस्टम पाया जाता है, और बिना किसी सिस्टम के यहां का काम नहीं होता, नमाज मुसलमानों के मिजाज को एक सिस्टम का आदी बनाती है, दुन्या की किसी कौम में नमाज जैसी उपासना की कल्पना भी नहीं पाई जाती। पूरी दुन्या के मुसलमान नमाज सिस्टम के आदी होने की वजह से एक विशेष स्वभाव रखते हैं, विश्व स्तर पर कोई दूसरी कौम ऐसी नहीं है जिन में सिस्टम की इतनी गहरी समानता दिखाई पड़ती हो। यही हाल मुसलमानों के रहन सहन का है कि जो चीजें इस्लाम ने हलाल की सारी दुन्या के मुसलमान उन्हें हलाल मानते हैं, और जिन चीजों से रोका और हराम बताया सारी दुन्या के मुसलमान उन्हें हराम मानते हैं जब कि इस तरह की विश्व समानता दुन्या की किसी कौम में नहीं पाई जाती। मैंने स्वयं देख कर जाना कि इस्लाम ने जाहिर बातिन के तजाद (विलोमता) से रोका है, इस्लाम की पवित्रता का सब से बड़ा तर्क यह है कि वह मनुष्य को दोहरे किरदार से रोकता है, इस्लाम के दण्ड कठोर हैं, जिन का उद्देश्य जगत से अपराधों को दूर करना है जब कि ईसाइयत में व्यक्ति को अपराध से रोका नहीं जाता अपितु एक प्रकार की स्वतत्रता दी जाती है वह जितने हराम काम करना चाहें कर सकते हैं क्योंकि खुदा के बेटे मसीह ने उन से वअदा किया है कि मौत के पश्चात किसी से उस के गुनाह के विषय में कुछ पूछा न जाएगा। जब कि इस्लाम मनुष्य को अपने कर्मों का उत्तरदायी ठहराता है।

इस्लाम के पैगम्बर (सल्ल०) की घोषणा है कि खुदा के सामने हर व्यक्ति को अपने कर्मों का स्वयं उत्तर देना, हर व्यक्ति को आखिरत (परलोक) में वही मिलेगा जो वह इस दुन्या से अपने साथ लेकर जाएगा।

एक दिन पादरी अब्दुलहक अमरीकी का यह एअलान पढ़ कर दुन्या चकित रह गई कि क़ल का पादरी अब्दुलहक आज का मुसलमान अब्दुल हक हो चुका है और उस ने सत्य खोज लिया है। अब्दुल हक का कहना है कि अल्लाह की जात हक है और मैं उस का बन्दा (अब्दुल हक) हूं। यह कितना अच्छा सम्बन्ध है जो खुदा और बन्दे के बीच वास्तविक अर्थ में स्थापित हुआ अल्लाह की जात पाक (पवित्र) है जिस ने अपने बन्दे को हक की दौलत (सत्य धन) अर्थात इस्लाम प्रदान कर दिया, खुदा करे ईसाई दुन्या में जितने अब्दुलक हैं वह सब मेरी आप बीती से सीख लें, और इस्लाम में प्रवेश करें। (अब्दुर्रहीम सिद्दीकी)

(पृष्ठ १६ का शेष)

रहमतुल्लाह अलैहि कि इल्मुल फिक्ह से मदद ली गई है।

प्रश्न : अगस्त अंक में आपने एक उत्तर में लिखा है कि दुआ में हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का तवस्सुल जाइज है, कृपया हदीस लिखिये।

उत्तर : कुछ बड़े उलमा दुआ में तवस्सुल के काइल हैं कुछ नहीं काइल हैं, इदारा दोनों फरीकों का सम्मान करता है, जो उलमा काइल हैं उनकी दलीलें पृष्ठ १४ पर छाप दी गई जो हजरात तवस्सुल के काइल नहीं हैं अपनी तहकीक पर अमल करें, जो काइल हैं वह भी जाइज़ कहते हैं जरूरी नहीं कहते। अतः इस मसअले में उलझा न जाए।

मज़दूरों के संबंध में इस्लाम की शिक्षाएं

सुलतान अहमद इस्लाही

१. सद्व्यवहार

इस संबंध में सबसे पहले इस्लाम ने मज़दूरों एवं दासों के साथ सादाव्यवहार की शिक्षा दी है और इसके लिए मानव–एकता के आधार को बलपूर्वक उभारा है। उसका कहना है कि सारे इन्सान एक खुदा के बंदे और एक ही मां–बाप–आदम एवं हव्वा की औलाद हैं। और इस प्रकार सारे इन्सान आपस में एक–दूसरे के भाई हैं। दो भाई हमेशा एक–दूसरे के हितैषी एवं हमदर्द हैं। अतः यदि एक व्यक्ति परिस्थितिवश दूसरे व्यक्ति के यहां काम कर रहा है, तो उसे चाहिए कि उसके साथ अपने भाई जैसा व्यवहार करे। उसके साथ प्रेम एवं विनम्रता से पेश आए और उसके सामर्थ्य से अधिक उससे काम न ले। मुहम्मद (सल्ल०) फ़रमाते हैं–

"ये तुम्हारे भाई हैं जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दिया है। अतः जिस किसी के क़ब्ज़ेमें अल्लाह उसके भाई को दे दे तो चाहिए कि उसे (खाना) खिलाए उसमें से जो वह खुद खाए और उसे (कपड़े) पहनाए, उसमें से जो वह खुद पहने और उसके ऊपर किसी ऐसे काम का बोझ न डाले जिसे वह ने कर सकें और अगर वह उसके ऊपर किसी ऐसे काम का बोझ डाले जिसे वह न कर सके, तो चाहिए कि उसमें उसकी मदद करे।"

इसी प्रकार एक–दूसरे अवसर पर इन्सान की शुक्र (कृतज्ञता) की भावना को उद्वेलित करते हुए कहा कि दासों के ज़रिये अल्लाह ने तुम्हारी ज़िन्दगी के बोझ को हल्का कर दिया, उनके साथ सद्व्यवहार का आदेश इन शब्दों में देते हैं–

"तुम्हारे ये गुलाम तुम्हारे भाई हैं। इसलिए इनके साथ अच्छा बर्ताव करो। इनकी मदद लो उस काम में जो तुम न कर सको और इनकी मदद करो उन कामों में जिन्हें वे न कर सकें।

२. पसीना सूखने से पहले मज़ादूरी दी जाए

मज़ादूरों के संबंध में इस्लाम की दूसरी प्रमुख शिक्षा यह है कि काम पूरा होने के बाद उनहें बिना विलंब किये मज़दूरी दी जाए। ग़रीब मज़दूरों का शोषण करने वाले अत्याचारी ज़मींदार एवं पूंजीपति, जैसा कि बंधुआ मज़ादूरी के संबंध में इसके विभिन्न प्रमाण प्राप्त हुए हैं, मज़दूरों से काम तो सुबह से शाम तक लेते हैं, परन्तु जहां तक उनकी मज़दूरी का सवाल है तो उन्हें कुछ पता नहीं होता कि कब मिलेगी और यह कि मिलेगी भी या नहीं। वे सुबह से शाम तक अपना गाढ़ा पसीना बहाते है,ा परन्तु मज़ादूरी के मामले में अपने मालिक के रहमो–करम के उम्मीदवार बने बैठे रहते हैं, और दिल में हर समय यह सन्देह लगा रहता है कि मालिक उन पर रहम करता भी है या नहीं। इस्लाम इसके विपरीत मज़दूरों के संबंध में किसी टाल–मटोल एवं विलंब की इजाज़त नहीं देता। अतः इसका आदेश है कि मज़दूर को उसकी मज़दूरी उसका पसीना सूाखने से पहले दी जाए। मज़दूर की मज़दूरी उसका अधिकार है, मालिकों की बख़्शिश एवं अनुदान नहीं है।

एक हदीस के अनुसार–

"मज़दूर को उसकी मज़दूरी सौंप दो इससे पहले कि उसका पसीना सूख जाए।" (इब्ने माजा)

३. मज़दूरी पूरी दी जाए

इस्लाम ने जिस प्रकार इस बात का आदेश दिया है कि काम पूरा हेने के बाद बिना विलम्ब किये मज़दूरी दे दी जाए, उसी प्रकार उसने इस बात का भी आदेश दिया है कि मज़दूरी पूरी–पूरी दी जाए। जि स्तर और जिस परिश्रम का काम हो उसके अनुसार मज़दूरी दी जाए और इस वास्तविक मज़ादूरी में किसी प्रकार की कमी न की जाए।

बंधुआ मज़ादूरी की स्थिति में जैसा कि आपने देखा, एक व्यक्ति से काम तो सुबह से शाम तक लिया जाता है और वह भी अतिपरिश्रम का काम, परन्तु मज़दूी के नाम पर उसे जो चीज़ मिलती है वह बस केवल इतनी होती है, जिससे कि उस ग़रीब क शरीर एवं आत्मा का संबंध बना रहे। ताकि वह अगले दिन फिर अपने मालिक के दर पर माथा रगड़ने के लिए आ सके।

ऐसा लगता है कि भारत में एक ज़ालिम वर्ग जो अपने को पैदाइशी तौर पर श्रेष्ठ एवं उच्च समझता है, ने कतिपय वर्ग को अनन्त रूप से नीच

घोषित करके उन पर भिन्न–भिन्न प्रकार के अत्याचार को न केवल वैध, बल्कि धार्मिक पवित्रता का सर्टिफ़िकेट प्रदान किया। यह शोषण वाली मानसिकता यहां के अन्य वर्गों में भी घुस गयी है। इस्लाम इस शोषण वाली मानसिकता को जड़ से उखाड़ाना चाहता है। अतः उसका आदेश है कि किसी प्रकार का बेगार न कराया जाए, बल्कि जिससे जो काम भी लिया जाए उसकी मज़दूरी दी जाए और किसी कमी के बिना पूरी–पूरी मज़दूरी दी जाए। मुहम्मद (सल्ल०) एक हदीस में अल्लाह की ओर से फ़रमाते हैं–

"तीन आदमी हैं कि मैं उनके ख़िलाफ़ क़ियामत के दिन वादी बनकर खडा हूंगा। एक वह जो मेरे नाम पर किसी से कोई अहद (वादा) करे फिर बेवफ़ाई कर जाए। दूसरा वह जो किसी आज़ाद इन्सान को बेचे और उसकी रक़म खा जाए। तीसरा वह जो किसी मज़दूर को मज़दूारी पर रखे और उससे पूरा–पूरा काम ले, परन्तु उसकी मज़दूरी (पूरी–पूरी) न दे। (बुखारी)

इस हदीस में मज़दूरी न देने का उल्लेख, आज़ाद व्यक्ति को बेचकर उसकी रक़म खा जाने के साथ हुआ हैं, जिससे पता चलता है कि मज़दूर को उसकी मज़दूरी न देना व्यवहारतः उसे गुलाम बनाने के बराबर हैं। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह०) फ़रमाते हैं।

"तीसरा वह जा किसी मज़दूर को मज़दूरी पर रखे और उससे पूरा–पूरा काम ले परनतु (पूरी) मज़दूरी न दे। उसका भी वही हाल है कि एक व्यक्ति किसी आज़ाद इन्सान को बेचे और उसकी रक़म खा जाए, इसलिए कि उसने किसी बदले के बिना उसके श्रम को पूरा–पूरा प्राप्त कर लिया तो गोया वह उसको खा गया। और उसने उससे मज़दूरी के बिना ख़िदमत ली तो गोया उसको अपना गुलाम बना लिया।"

(फ़तहुला–बारी जिल्द–४,पुष्ठ–२८४)

मुहम्मद (सल्ल०) जिस व्यक्ति से भी कोई काम लेते, उसे पूरी–पूरी मज़दूरी देते थे। मामूली –से –मामूली काम में भी मज़दूरी में तनिक कमी की आप कल्पना भी नहीं कर सकते थे। हज़रत अनस बिन मालिक का बयान है कि :

"मुहम्मद (सल्ल०) पिछना (टीका) लगवाते थे और किसी की मज़दूरी में नाम मात्र की भी कमी नहीं करते थे।"

४.मज़ादूरी निर्धारित करके काम लिया जाए

इस्लाम ने जिस प्रकार मज़दूर को पूरी–पूरी मज़दूरी देने का आदेश दिया है, उसी प्रकार उसने इस बात का भी आदेश दिया है कि मज़दूर से मजदूरी तय कर के ही काम लिया जाए। इसलिए कि जब तक मज़दूरी निर्धारित नही की जाएगी तब तक कमज़ोर मानव–वर्ग को अत्याचार एवं शोषण के पंजे से आज़ाद नहीं कराया जा सकता है। इस्लाम इस अन्तिम चोर दरवाज़े को समाप्त करके शोषण की तमाम संभावनाओं को समाप्त कर देना चाहता है। ग़रीब मज़दूर अपने पेट की आग बुझाने के लिए आकर काम पर लग जाता है, परन्तु उसे साहस नहीं होता कि मालिक से अपनी मज़दूरी के संबंध में कोई बात कर सके। इस्लाम मज़दूर रखने वालों (Employers) को खुद यह आदेश देता है कि वह मज़दूर को काम पर लगाने से पहले उसकी मज़दूरी निर्धारित कर दें। मुहम्मद (सल्ल०) की हदीस है–

"जो कोई किसी मज़ादूर को मज़दूरी पर रखे तो चाहिए कि उसकी मज़दूरी को पहले बता दें।"

(आसारे–सुनन)

इसी प्रकार हज़रत अबू सईद (रजि०) ने मुहम्मद (सल्ल०) की एक हदीस बयान की है–

"मुहम्मद (सल्ल०) ने मना किया है मज़दूर को मज़दूरी पर रखने से यहां तक कि वह उसरो उराकी मज़ादूरी को स्पष्ट रूप से बता दे।"

(मुसनद अहमद)

इमाम नसई ने हम्माद के बारे में लिखा है कि उनसे उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो किसी को खाने की चीज़ा पर मज़दूरी पर रखे, उसके जवाब में उन्होंने फ़रमाया कि–

"नहीं, जब तक कि तुम खाने की चीज़ का निर्धारण न कर दो।"

(नसई)

इन्ही हदीसों के आधार पर फ़ुक़हा (इस्लामी धर्म–विधान के विद्वानों) ने स्पष्ट किया है कि जब तक काम और मजदूरी दोनों का निर्धारण न कर दिया जाए, उस वक्त तक मजदूर रखने का समझौता सही नहीं माना जाएगा।

"और मजदूर रखने का समझौता सही नहीं होगा जब तक कि काम और मजदूरी दोनों मालूम एवं निर्धारित न हों।" (हिदाया)

५. शोषण की मानसिकता का उन्मूलन

इन प्रेरणाओं एवं कानूनी सुरक्षा (सेफ गार्ड) के साथ इस्लाम ने इन्सान

की शोषण की मानसिकता पर भी कुठाराघात किया है। इसी शोषण की मानसिकता के कारण ही सारी बुराइयां पैदा होती हैं। इस्लाम कहता है कि यदि इस दुनिया में कुछ लोग आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सम्पन्न हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि वे कमजोर, गरीब और बेसहारा इन्सानों का खून चूसते फिरें। भली–भांति समझ लेना चाहिए कि पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधित्व का सौभाग्य समान रूप से तमाम इन्सानों को प्राप्त है। और जीवन के आनन्द एवं उसके सुख में तमाम इन्सानों का हिस्सा है।

अब यदि ईश्वर ने कुछ लोगों को विभिन्न हैसियतों से उच्च रखा है जिसके परिणामस्वरूप दूसरे लोग उनके मातहत बनकर काम करते हैं, तो ईश्वर की ओर से एक आजमाइश (परीक्षा) है, जिसमें कदम फूंक–फूंक कर रखने और बहुत संभाल कर चलने की जरूरत है। ईश्वर की ओर से पकड़ होने में देर नहीं लगती। हां, यदि कोई व्यक्ति अपने पिछले बुरे कर्मों को त्याग कर सुधार एवं भलाई की राह अपनाए तो वह ईश्वर की कृपा का अधिकारी बन सकता है। कुरआन में है –

"और वही है, जिसने तुम्हें धरती में अपना प्रतिनिधि बनाया है। और कुछ (लोगों) को कुछ (लोगों) पर श्रेष्ठता प्रदान की है, ताकि तुम्हें अपनी प्रदान की हुई नेमतों (चीजों) से आजमाए। बेशक तेरा रब जल्द पकड़ने वाला है और बेशक वह बहुत जल्द बख्शने वाला (क्षमा करने वाला) और दया करने वाला है। (कुर्आन, ६:१६६)

महान हैं वे जो इस आजमाइश में पूरे उतरें और ईश्वर के बन्दों के साथ हक एवं इंसाफ के तरीके को अपना जीवन–अंग बना लें।

सेवाओं की कद्र

एक दिन हजरत उमर (रजि०) बाजार से गुजर रहे थे। एक नवजवान औरत ने उनका दामन पकड़ कर ठहरा लिया और कहा –

अमीरूल मोमिनीन! मेरे शौहर का इंतिकाल हो गया और उसने छोटे–छोटे बच्चे छोड़े हैं, जो किसी काम काज के काबिल नही और कोई खेत या मवेशी नहीं छोड़े कि उनकी आमदनी से गुजर–बसर हो सके। मैं बच्चों को छोड़ कर कोई मेहनत–मजदूरी भी नहीं कर सकती। मैं डरती हूं कि उनको दरिंदे न खा जाएं, अमीरूल मोमिनीन। मैं खुफाफ बिन ईमा अंसारी की लड़की हूं, जो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ हुदैबिया में मौजूद थे।

हजरत उमर (रजि०) ने उस औरत को वहीं ठहरने को कहा और खुद तशरीफ ले गये। थोड़ी देर के बाद वापस आये, तो इस हाल में कि ऊंट की नकेल थी और ऊंट पर गल्ला और कपड़ा लदा हुआ था। उस औरत से फरमाया : ऊंट की महार थामो और उसे हांक कर ले जाओ। और लोगों को बताया कि इसके बाप भाई दोनों मेरे सामने मुद्दतों एक किले का घेराव किया और उसको जीत कर सांस ली।

स्वीकार नहीं

कारी हिदायतुल्लाह सिद्दीकी

अपने प्रति सबको रूलायें
ये तो हमें स्वीकार नहीं
दुख सुख में हम काम न आएं
ये तो हमें स्वीकार नहीं
मानव जाति समक्ष है भाई
बनकर के ईश्वर विद्रोही
लूटे घर में आग लगाएं
ये तो हमें स्वीकार नहीं
मार काट अपमान करें और
धरती लाल बनाएं
रक्त से घर में दीप जलायें
ये तो हमें स्वीकार नहीं
तोड़े मस्जिद, मन्दिर तोड़े
धर्म से हटते जायें
ईश्वर के भी गुण न गाएं
ये तो हमें स्वीकार नहीं।
पाप को देकर हवा बढ़ायें
पुण्य के पास न जायें
हिंसा को परवान चढ़ायें
ये तो हमें स्वीकार नहीं।
जलता देखे घर और आंगन
फूंके ये संसार
आतंक को खुद आप बढ़ायें
ये तो हमें स्वीकार नहीं।
देख–देख कर ये सब अपना
हृदय व्याकुल होवे
चुप्पी साधें चुप हो जायें
ये तो हमें स्वीकार नहीं
न्याय का कोई चिन्ह न पायें
अन्याय है अपरमपार
बिपता रब से भी न बतायें
ये तो हमें स्वीकार नहीं
कष्ट सहें दिन रात 'हिदायत'
तब दो रोटी पायें
दुखियारों को इस पे सतायें
ये तो हमें स्वीकार नहीं

अल्लाह के बन्दों के हुक़ूक़

इरफ़ान फ़ारूक़ी नदवी

हजरत अबुहुरैरा रजि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने किसी भाई पर जुल्म व अत्याचार किया हो, उसकी बेइज्जती की हो या कोई किसी और का हक मारा हो तो आज ही (इस दुनिया में उसका हक दे दे या माफी मांग कर) इससे पहले माफ करा ले जहां न दीनार होगा न दिरहम। फिर आप (सल्ल०) ने फरमायाा अगर उसके कुछ अमल अच्छे होंगे तो जुल्म के बराबर उससे ले लिये जाएंगे (और जिसका हक है उसे दे दिये जाएंगे) और अगर उसके पास नेकियां न होंगी तो मजलूम की बुराइयां लेकर अत्याचारी पर डाल दी जाएंगी । (मुस्लिम)

इस हदीस से पता चला कि केवल पैसा रूपया दबा लेना ही जुल्म नहीं है। बल्कि गाली देना, पीठ पीछे अपने भाई की बुराई करना (गीबत), झूठ मूठ का आरोप लगाना, नाहक किसी को मारना भी जुल्म और हक का मारना है। बहुत से लोग अपने बारे में समझते हैं कि हम दीनदार हैं मगर इन बातों से बिल्कुल नहीं बचते। यह बात पूरी तरह से समझ लेना चाहिए कि अल्लाह तआला अगर चाहे तो अपने हुकूक तौबा और इस्तिगफार (गुनाहों से माफी मांगना) से माफ कर देता है। लेकिन बन्दों के हुक़ूक उस समय माफ होंगे जब उनके हक उनको दे दे या उनसे माफ करा ले।

बहुत से लोगों ने यह समझ रखा है कि हमने हज कर लिया है और सब गुनाह माफ होगए हैं। क्योंकि आप (सल्ल०) ने "मुज्दल्फा" में बन्दों के हुकूक व अधिकार के माफ होने की भी दुआ की थी और वह दुआ कुबूल हो गई थी इसलिए अगर हुकूक न अदा किए जाएंगे कोई नुकसान की बात नहीं। अल्लाह की पनाह! हदीस का यह मतलब समझ लेना शैतान और नफ्स का कैसा धोखा है।

एक हाजी साहब से मेरी भेंट होती रहती थी। उनके कुछ दोस्तों का उन पर कुछ पैसा आदि था मैं उनसे बार बार कहता कि आप उनका हक दे दें, बूढ़े हो चुके हैं, मौत करीब है, जल्दी से जल्दी छुटकारा प्राप्त कर लेना चाहिए। इस पर उन्होंने एक दिन कहा कि "मुजदल्फा" में ठहरने और दुआ करने से भी हुकूक माफ हो जाते हैं। मैंने उनसे कहा कि आपने हदीस का मतलब गलत समझा है। हदीस का मतलब यह नही है कि हज करने से बन्दों के सभी हुकूक माफ हो जाते हैं। अगर ऐसा होता तो हज़रात सहाबा रजि० हज करने के बाद और विशेषकरा वह सहाबा जिन्होंने आप (सल्ल०) के साथ हज किया था, उन्होंने तो कर्जों की अदाएगी का पूरा एहतिमाम किया और हम हदीस से यह मतलब निकालें कि हज कर लेने से हमारा कर्ज़ अदा हो जायेगा। अस्तगफिरुल्लाह! फिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से लेकर आज तक हदीस के बड़े–बड़े विद्वानों बड़े–बड़े इमामों, मुफ़्तियों आदि ने यह नहीं बताया कि हुकूक व जुल्म से छुटकारा प्राप्त करने के लिए मौत से पहले एक हज कर लो न किसी को कुछ देना पड़ेगा न माफी मांगनी पड़ेगी न कर्जों के अदा करने की जरूरत पड़ेगी। अगर किसी जाहिल ने हदीस का यह मतलब समझा है कि हुकूक दबा लो और माल मार लो, लोगों पर खूब जुल्म ढाओ फिर एक हज करके सब से पाक साफ हो जाओ तो उसकी अपनी जिहालत और अज्ञानता है। अगर ऐसा होता तो कोई आदमी करोड़ों रूपया चोरी, घोटाला, सूद, रिश्वत आदि से पूरे साल कमाता फिर एक लाख रूपया खर्च करके हज कर लिया करे और कियामत की पकड़ से बिल्कुल बच जाए। शैतान कैसा उस्ताद है कैसा–कैसा पट्टी पढ़ाता है।

हदीस का मतलब केवल इतना है कि अरफात में हुजूर (सल्ल०) ने अल्लाह तआला से दुआ की "कि ऐ रब ! अगर आप चाहें तो मजलूम को जन्नत दे दें और जालिम को माफ कर दें।' यह दुआ "अरफात" में कुबूल नहीं हुई, फिर सुबह मुज्दलफा में फिर यह दुआ की तो दुआ कुबूल हो गई।" (इब्ने माजा) इस हदीस में यह कहां है कि जो भी कोई आदमी हज करेगा उसके जिम्मे जितने भी लोगों के हुकूक और कर्जे होंगे और कुछ जुल्म किए होंगे वह सब हज करने से माफ हो जाएंगे और आखिरत में कोई पकड़ और हिसाब व किताब लेना देना न होगा। हदीस में तो केवल इतनी बात है कि हुजूर (सल्ल०) ने जुल्म वाले की

माफी के लिए यह कानून पास करा लिया कि अगर अल्लाह चाहे तो मजलूम को अपने पास से दे दे और जालिम को माफ कर दे। पता यह चला कि अल्लाह के चाहने से जो होगा। अल्लाह जिस के साथ चाहेगा ऐसा एहसान फरमा देगा और यह अल्लाह का फज्ल है जिसको चाहे मिल सकता है। अल्लाह तआला ने सूरः निसा में फरमाया है – "अल्लाह तआला शिर्क को माफ नहीं करेगा उसको छोड़कर जिस (गुनाह) को चाहेगा माफ कर देगा।" हदीस में भी ऐसी कोई बात नहीं कि अल्लाह तआला मजलूम को अपने पास से हुकूक देकर जालिम को जरूर से जरूर माफ कर देगा। बात तो अल्लाह के चाहने की ही रही, वह माफ करे चाहे न माफ करे। फिर यह यकीन व इत्मिनान लोगों को कहां से हो गया कि जो भी हज कर ले सारे हुकूक और कर्जे और जुल्म बिना किसी डर व भय के माफ हो जाएंगे। यह तो हदीस का मतलब हुआ जबकि हदीस सही हो लेकिन हदीस के विद्वान इस हदीस को सही नहीं समझते।

कमजोर व जईफ हदीस को बुनयाद बनाकर लोगों के माल मार खाना, हुकूक दबा लेना और हज करके अपने को पाक साफ समझ लेना, बहुत बड़ी भूल और गलती है। क्या हदीस के खजाने में यही एक हदीस है जिसे हदीस के आलिम जईफ बल्कि मवजूअ (मनगढ़न्त) बता रहे हैं। बहुत सी हदीसों में अल्लाह के बन्दों के हुकूक देने के बारे में आई हैं उन्हें क्यों भुला रहे हो? किसी की गीबत (पीठ पीछे बुराई) किसी के ऊपर झूठा इल्जाम लगाना, किसी की बेइज्जती करना, या उधार लेकर चुकता न करना, और आपस में बंटवारे में गड़बड़ करना, किसी की जमीन दबा लेना, या किसी भी प्रकार के जुल्म के बारे में सही हदीसों में जो बातें कही गई हैं और उनके बुरे नतीजे से डराया गया है उनकी तरफ से जान बूझ कर आंख बन्द कर लेना इसके साथ कियामत में छुटकारा मिल जाएगा?

बहुत से दीनदार कहलाने वाले मरने वाले भाई की जायदाद से उसकी बीवी को हिस्सा नहीं देते बल्कि उसे मजबूर करते हैं कि हमारे साथ शादी कर लो, वह बेचारी मजबूरी में निकाह कर लेती है और यह समझाते हैं कि हमने शरीअत का ख्याल रखा है। हालांकि निकाह कर लेने से उस के पति के मीरास छोड़े हुए (सामान) से इस्लामी कानून के हिसाब से उसको जो हिस्सा मिलना है उसका दबा लेना हलाल नही हो जाता । यह लोग कहते हैं कि अगर औरतों को जाइदाद में हिस्सा दिया गया तो हमारी जमीन का हिस्सा दूसरे खानदान में चला जाएगा। अगर चला ही गया तो क्या हुआ आप तो जहन्नम में नहीं जाएंगे या यह कि हिस्सा न जाने पाए चाहे हम जहन्नम भले ही चले जाएं।

बहुत से इलाकों में रवाज है कि मरने वाले के छोड़े हुए माल में उसकी लड़कियों को हिस्सा नहीं देते बल्कि भाई ही दबा बैठते हैं जो खुला हुआ जुल्म करते हैं और हराम खाते हैं। कुछ लोग कहते हैं अपना हक छोड़ दिया है और जैसी झूठी माफी होती है उसका कोई ऐतिबार नहीं है क्योंकि वह जानती है कि हमको मिलना तो है नहीं इसलिए माफ ही कर देते हैं और अपना हक नहीं मांगती। अगर उनका हिस्सा बांट कर उनके सामने रख दिया जाए कि लो यह तुम्हारा हिस्सा है और जाइदाद की आय जितनी हो उन्हें दे दी जाए और वह उसके बाद भी माफ कर दे तो माफी समझी जाएगी। मजबूरी की सभी माफी का कोई ऐतिबार नहीं।

कुछ लोग इस तरह अपने आप को समझते हैं कि जिन्दगी भर उनको उनकी ससुराल से बुलाएंगे बच्चों के साथ वह आएगी, खाएगी पिएंगी इससे उनका हक अदा हो जाएगा। यह अपने आप को धोके में रखने वाली बात है। पहली बात तो उन पर इतना खर्च नहीं होता जितना मीरास में उनका हिस्सा निकलता है। दूसरी बात यह कि रिश्तेदारी जतानी है तो अपने पैसे से करो। पैसा उनका और एहसान आपका कि हमने बहन को बुलाया है और खर्च किया है। यह क्या रिश्तेदारी हुई। तीसरे उनसे मोल भाव करो क्या वह इस खरीदने बेचने पर राजी है एक ही तरफ से मामला कैसे हो सकता है।

कर्जे अदा करो चाहे हज कर आए हो। मरने वाले की मीरास में मां बाप बीवी बेटी इन में से जो भी जिन्दा हैं उन का हिस्सा है किसी मुफ्ती से पूछ कर सब को हिस्सा दो।

पुनर्जन्म के झूठे मामले

डॉ० मुहम्मद अहमद

पुनर्जन्म के मामलों की पुष्टि अभी तक संभव नहीं हो सकी है। इसका वैज्ञानिक आधार अप्राप्य है। इसका एक मात्र कारण पुनर्जन्म का न होना है। ७ अक्टूबर १९६८ को प्रकाशित एक समाचार के अनुसार, "मोविज्ञान के विशेषज्ञों (**Psychologist**) ने कुछ केसों की जांच पड़ताल करने के बाद यह मत प्रकट किया कि कुछ लोग जो अपने पूर्व जन्म की बातें बयान करते हैं, वे अधिकतर मानसिक हिस्टीरिया रोग से ग्रसित होते हैं। जयपुर में रत्न सिंह का दावा है कि उन्होंने कुछ केसों का इलाज किया है, जिसमें उन्हें सफलता मिली है। डॉ० व्यास ने यूनाइटेड न्यूज आफ इण्डिया को साक्षात्कार देते हुए कहा कि जो लोग पुनर्जन्म की घटनाएं बयान करते हैं, उनकी मानसिक स्थिति साधारणतया सन्तुलित नहीं होती। ये अधिकतर व्यक्तिगत समस्याओं के केस होते हैं। ये लोग मानसिक असन्तुलन के कारण कुछ और बनने के इच्छुक रहते हैं। इस प्रकार मनगढ़ंत किस्से बयान करने से कुछ दूसरे लाभ प्राप्त हो जाते हैं।"

(हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली)

डॉ० व्यास ने अपने पक्ष–समर्थन के लिए कुछ केसों के विवरण भी दिए। देश में पुनर्जन्म का दावा करने वाली जो भी घटनाएं सामने आई हैं, उनके पात्र या तो मानसिक रोग से ग्रस्त रहे या किसी लाभ के निमित्त मनगढन्त किस्सा बनाया गया या काल्पनिक रूप से लिख दिया गया कि पुनर्जन्म की घटना अमुक स्थान पर घटी। धोखाधड़ी की एक घटना का उल्लेख करते हुए डॉ० एलपी मेहरोत्रा लिखते हैं – यह घटना एक ऐसे बालक से सम्बन्धित है, जिसकी बहन को पूर्वजन्म की स्मृतियां थी और जिससे उसकी अपनी बहन से डाह हो गई और वह अपने को महात्मा गांधी का मृतात्मा बताने लगा। इस बालक ने गांधी की जीवनी के विषय में एक पुस्तक में पढ़ा था और उसी का सहारा लेकर उनके विषय में बताने लगा। जब लोगों को यह पता चला कि गांधी जी का पुनर्जन्म हो गया है तो लोग बड़ी संख्या में उससे मिलने पहुंचने लगे। कांग्रेस के बड़े–बड़े नेता भी वहां गए यहां तक कि सुशीला नैय्यर भी गईं। इन सबसे उस बालक को बड़ी शोहरत मिली, पर अन्त में उसकी पोल खुल गई और उसका झूठ सामने आ गया।

पुनर्जन्म की झूठी कहानी

११ जुलाई १९६८ को इन पंक्तियों के लेखक का एक एसी जगह पर जाना हुआ, जहां पर महाराजा बलरामपुर सर पाटेश्वरी प्रसाद सिंह का तथाकथित पुनर्जन्म हुआ था। जो विवरण अखबारऔर पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए उनसे कुछ लोगों को ऐसा लगा कि वाकई पुनर्जन्म हुआ, लेकिन जब मौके पर पहले कुछ महीने बाद और फिर कुछ वर्षों बाद जाया गया, तो पुनर्जन्म की सारी कहानी झूठी मनगढ़ंत, कल्पित निकली। आइए विस्तार से जानें कि इस घटना की हकीकत क्या है?

बलरामपुर (पहले गोण्डा) जिले के शिवपुरा बाजार निवासी पन्नालाल सोनी पुत्र मेवा लाल सोनी, जो पेश से स्वर्णकार हैं, ने १९८१ में यह दावा किया कि उनके यहां १९६९ की किसी महीने की ११ तारीख (वृहस्पतिवार) को जो लड़का पैदा हुआ था, वह महाराजा पाटेश्वरी प्रसाद सिंह का पुनर्जन्म है। उन्होंने इलाहाबाद से छपने वाली एक पत्रिका के लिए काम करने वाले रामजी राय को विस्तार के साथ इंटरव्यू देकर अपने दावे को पेश किया, तो भोलीभाली जनता भ्रमित हुए बिना न रह सकी। क्षेत्र में हर तरफ पन्नालाल सोनी और उनके बेटे की चर्चा एवं आवभगत होने लगी। लोग दल के दल दर्शनार्थ उनके घर आने वाले कथित महाराजा से पूर्वजन्म की बातें पूछने लगे। बारह साल के बच्चे पुडरीक कुमार को जो बातें उसके पिता ने पहले से बता रखी थीं, उन्हें उसके कंठस्थ कर लीं और जब कोई उसके पूर्व जन्म की बातें पूछता तो वही बच्चा रटी रटाई बातें कह डालता। लोग हैरत में पड़ जाते। इस प्रकार पन्नालाल शिवपुरा की शोहरत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गयी। पन्नालाल जी ने बताया कि शिवपुरा बाजार महाराजा बलरामपुर की अधिक्षेत्र था, अतः पाटेश्वरी प्रसाद सिंह जी का शिकार आदि के लिए शिवपुरा आना हुआ करता था। बकौल पन्नालाल जी के "हम महाराजा साहब की हर गतिविधि से वाकिफ थे।"

पन्नालाल जी कहते हैं कि उन्हें महाराजा ने स्वप्न दिखाया कि वे मेरे (पन्ना लाल सोनी) यहां जन्म लेने के इच्छुक हैं, तो मैंने कहा कि धर्मावतार। हम आपकी सेवा कैसे कर पाएंगे? इस पर महाराजा ने कहा कि "हम तो जन्म लेगें ही। यह हमारा फैसला है।" फिर पुंडरीक का जन्म हुआ। पन्नालाल जी कहते हैं कि पुंडरीक दो साल की अवस्था ही में अपने पूर्वजन्म की बातें बताने लगा था। पर सवाल यह है कि इस की जानकारी गांववासियों को भी नहीं मिली कि ऐसा कोई बच्चा है जो पूर्व जन्म की बातें बताता है। अचानक ११–१२ साल की आयु में पन्नालालसोनी ने पुनर्जन्म की बातें प्रचारित करना शुरू कर दीं, जिससे उन्हें तात्कालिक सफलता मिल पाई। बाद में वे लोग छंटने लगे, जो हकीकत से वाकिफ हो चुके थे और मनगढ़ंत कथा से परिचित हो गए थे।

चर्चा के कारण महारानी बलरामपुर ने पंडुरीक को पिता समेत अपने आवास नीलकोठी पर बुलवाया, पर १२ वर्षीय बालक उनके किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे सका। शुरू में महारानी ने जो दिलचस्पी दिखाई, वह दो–तीन सवालों के बाद ही समाप्त हो गई। उल्लेखनीय है कि पाटेश्वरी प्रसाद सिंह की मृत्यु रहस्यमय परिस्थितियों में हुई थी। लोगों की जिज्ञासा थी कि पुंडरीक मृत्यु की परिस्थितियों को स्पष्ट करे, लेकिन अबोध बालक को जितना कुछ उसके पिता ने सिखाया–पढ़ाया था, उससे आगे वह कुछ नहीं जानता था। अतः रानी साहिबा बहुत असंतुष्ट हो गईं और कहते हैं कि उन्होंने अपनी नाराजी का इजहार भी किया। बलरामपुर के कुछ संभ्रान्त लोगों ने भी शुरू में तो कथित पुनर्जन्मी की ओर ध्यान दिया, बाद में हकीकत से परिचित होते ही अपने समय को बर्बादी से बचा लिया। बलरामपुर के संभ्रांत समाज सेवी श्री बृज किशोर श्रीवास्तव ने तो कथित पुनर्जन्म बालक पुंडरीक को उसके पिता के साथ अपने घर बुलवाया, पर जब एक सवाल यह पूछा कि "कन्हई यादव के बारे में आप जानते हैं जो आपके यहां काम करते थे भगवानपुर फार्म पर?" तो पुंडरीक बगलें झांकने लगा। वह किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे सका। इस प्रकार हकीकत सामने आ गई। पुंडरीक आज महाराजगंज (गोण्डा) में सोनारी का काम करता है।

(पृष्ठ ३० का शेष)

अंधकारमय होता है।

माता–पिता की धार्मिक मान्यताएं और विश्वास अलग–अलग होने के कारण बच्चे को किसी भी धर्म के संस्कार, आचार विचार और जीवन गुजारने के तरीके की शिक्षा नहीं मिल पाती। उसकी वर्तमान जिन्दगी भी अंधकारमय होती है और मरने के बाद की जिन्दगी भी अनिश्चित होती है। वह न हिन्दू होता और न मुसलमान होता है। उसे न हिन्दू समाज अपनाता है और न मुस्लिम समाज। कोई भी धर्म और समाज उसे जायज और नैतिक औलाद नहीं मानता। जिन परिवारों के लड़के–लड़कियां ऐसा करते हैं, उस परिवार के दूसरे सदस्यों को भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। एक तरफ इन परिवारों में दुश्मनी की दीवार खड़ी हो जाती है तो दूसरी तरफ अनेक पीढ़ियों तक ऐसे परिवार के दूसरे कुंवारे सदस्यों की शादी–विवाह के मामलों में अनेकों कठिनाइयां पैदा हो जाती हैं और उन्हें किसी भी समाज के लोग आसानी से स्वीकार नहीं करते। अक्सर इन परिवारों के भावुक सदस्य सामाजिक निन्दा और शर्मिन्दगी से बचने के लिए आत्महत्या तक कर लेते हैं।

वस्तुतः ये वैवाहिक संबंध किसी के लिए लाभदायक नहीं होते, न शादी करने वाले व्यक्ति के लिए, न उसके परिवार के लिए और न ही समाज के लिए। प्यार मुहब्बत का जज्बा एक महान इन्सानी जज्बा है, लेनिक जब यह जज्बा दो दिलों को जोड़ने के बहाने इन्सानियत को तोड़ने का कारण बन जाता है तो शैतानी जज्बा बन जाता है। शादी–विवाह दो इन्सानों को जोड़ते हैं, दो बिरादरियों और कबीलों के बीच मधुर रिश्ते कायम करते हैं मगर इसके पीछे शर्त यह है कि विवाह करने वाले दोनों पक्ष एक मजहब के मानने वाले हों। अगर अलग–अलग मजहब के लोग अपने मजहब के उसूलों से बगावत करके आपस में वैवाहिक संबंध स्थापित करते हैं तो दोनों मजहब के मानने वालों के क्रोध का निशाना बनते हैं। उनकी वजह से अक्सर दो परिवार, दो समुदाय और दो सम्प्रदाय नफरत का शिकार हो जाते हैं और सारा समाज और देश साम्प्रदायिक नफरत की आग में झुलसने लगता है। (कान्ति से साभार)

वला तक़रबुज़िज़ना
व्यभिचार के निकट
भी न जाओ

हिन्दू मुस्लिम लड़के लड़कियों के बीच वैवाहिक सम्बन्धों का मसला

जहीर ललितपुरी

इस बात को न सिर्फ नाजायज होने बल्कि व्यभिचार मानने में इस्लामी विद्वान एकमत हैं, कि एक मुस्लिम लड़के या लड़की की किसी गैरमुस्लिम लड़की या लड़के से शादी हो। इधर कुछ दिनों से ऐसा देखने में आ रहा है कि मुस्लिम लड़के हिन्दू लड़कियों से और मुस्लिम लड़कियां हिन्दू लड़कों के इश्क के चक्कर में पड़कर शादियां कर रहे हैं। इस तरह वे अपनी जिन्दगियां तो बर्बाद कर ही रहे हैं, इसके साथ ही वे इस तरह शादी से पैदा होने वाले बच्चों के भी भविष्य के दुश्मन बन रहे हैं। इस प्रकार की शादियां करने वालों के परिवार के सामने विभिन्न समस्याएं पैदा हो सकती हैं तथा समाज की सद्भावना और साम्प्रदायिक एकता भी खतरे में पड़ सकती है। इस्लाम धर्म में इस तरह की शादियों की बिल्कुल छूट नहीं है इसलिए इस तरह शादी करके लड़के लड़कियां अपनी आखिरत भी तबाह कर रहे हैं।

ये बात बिल्कुल साफ रहनी चाहिए कि एक मुस्लिम औरत की शादी कतई किसी भी सूरत में किसी भी गैर मुस्लिम मर्द से नहीं हो सकती है। ऐसे रिश्ते को कभी भी निकाह का पवित्र नाम नहीं दिया जा सकता। इस रिश्ते के बाद कायम होने वाले शारीरिक सम्बन्ध व्यभिचार ही माने जाएंगे और व्यभिचार से पैदा होने वाली औलाद भी जायज नहीं होगी और न ही इस रिश्ते पर विरासत से संबंधित इस्लामी कानून लागू हो सकते हैं। एक मुस्लिम मर्द के लिए इस्लामी शरीअत का आदेश है कि वह मुस्लिम औरत को अपनी पत्नी बनाए। अहले किताब (यहूदी और ईसाई) औरतें अगर मजहब पर चलने वाली हों और पाक दामन हों तो उनसे मुस्लिम मर्द निकाह कर सकते हैं। लेकिन फिर भी मुस्लिम औरत से निकाह करने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने बिल्कुल साफ–साफ शब्दों में हुक्म दिया है : "और तुम मुश्रिक औरतों से हरगिज निकाह न करना, जब तक कि वे ईमान न ले आएं। एक मोमिन लौंडी मुश्रिक शरीफजादी से बेहतर है। अगरचे यह तुम्हें बहुत पसन्द हो। और अपनी औरतों के निकाह मुश्रिक मर्दों से कभी न करना, जब तक वे ईमान न ले आएं। एक मोमिन गुलाम, शरीफ मुश्रिक से बेहतर है, अगरचे वह तुम्हें पसन्द हो, ये लोग तुम्हें आग की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह अपने इज्न से तुम को जन्नत और मगफिरज की तरफ बुलाता है। (कुरआन, २:२२१)

कलामे रब्बानी की इन पाकीजा आयतों ने साफ कर दिया है कि कोई मुस्लिम औरत या लड़की कभी किसी गैर–मुस्लिम मर्द की बीबी नहीं बन सकती है वह गैर मुस्लिम मर्द किसी मजहब का मानने वाला हो या न हो। और मुस्लिम मर्द सिर्फ मुस्लिम औरत से निकाह कर सकता है और कुछ खास हालात में, अगर अह्ले किताब से जो पाक दामन हों, निकाह किया जा सकता है। कुरआन में इतने साफ हुक्म के बावजूद अगर कोई मुसलमान लड़की या लड़का किसी हिन्दू लड़के या लड़की से, अल्लाह को अपने मां बाप, परिवार औ समाज के लोगों को नाराज करके शादी करता है तो वह अपने इस काम से गुनाहगारों में शामिल हो जाता है और मरने के बाद अल्लाह के द्वारा निर्धारित सजा और अजाब उसके लिए यकीनी हो जाता है।

दो अलग–अलग मजहब के मानने वालों के बीच कायम होने वाले वैवाहिक संबंध सभी कामयाब संबंध नहीं बन पाते, क्योंकि ये संबंध क्षणिक आनन्द के लिए अंधी मुहब्बत, जिस्मानी कशिश और जवानी के नशे में चूर होकर किये जाते हैं। ऐसे संबंध कभी हकीकत की कसौटी पर खरे साबित नहीं होते और अक्सर तनावपूर्ण और कष्टदायक साबित होते हैं और अंततः टूट जाते हैं। इस प्रकार के संबंधों में हमेशा वैचारिक टकराव, आस्थाओं के द्वंद्व, परम्पराओं और जीवन पद्धतियों के अन्तर बने रहते हैं जो कभी दोनों व्यक्तियों को सुकून से जीने नहीं देते। इन सम्बन्धों के परिणामस्वरूप जो औलाद पैदा होती है वह कुंठाग्रस्त और असामान्य होती और उसका भविष्य

(शेष पृष्ठ २६ पर)

भारतीय इतिहास

प्रो. श्रीनेत्र पाण्डेय

चन्द्रगुप्त मौर्य

सामाजिक दशा : मेगस्थनीज ने सामाजिक दशा का वर्णन करते हुए एक बहुत बड़ी भूल यह की है कि उसने चार जातियों के स्थान पर सात जातियों का उल्लेख किया है। पहले वर्ग में उसने ब्राह्मणों तथा दार्शनिकों को रक्खा है। यद्यपि इनकी संख्या कम थी परन्तु समाज में यह लोग बड़े आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। यह लोग राजा तथा प्रजा के लिए यज्ञ किया करते थे। अपनी इस सेवा के कारण यह लोग राज्यकरों से मुक्त रहते थे। दूसरा वर्ग कृषकों का था। समाज में इनकी संख्या सबसे अधिक थी। यह लोग खेती करते थे। अपने खेतों की उपज का चौथाई भाग राज्य को कर के रूप में दे देते थे। लड़ाई के समय में भी इनकी खेती को कोई हानि नहीं पहुंचने पाती थी। तीसरा वर्ग ग्वालों तथा शिकारियों का था। ग्वालों का मुख्य व्यवसाय पशु–पालन तथा दूध बेचना और शिकारियों का जंगली पशुओं का शिकार करना था। ग्वाले लोग पशुओं को बेचते और किराये पर भी देते थे। शिकारी लोग जंगली पशुओं का शिकार करके खेतों की रक्षा करते थे। इस सेवा के बदले शिकारियों को राज्य की ओर से धन मिलता था। यह शिकारी किसी एक स्थान पर नहीं रहते थे वरन् वे एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमा करते थे। चौथे वर्ग में व्यापारी तथा श्रमजीवी आते थे। व्यापारी लोग विभिन्न प्रकार के व्यवसाय तथा उद्योग धन्धों में लगे रहते थे। इन लोगों को अपनी आय का कुछ भाग राज्य को कर के रूप में देना पड़ता था। विदेशों से व्यापार क़रने के लिए व्यापारियों को राज्य की ओर से सहज उधार मिलते थे। श्रमजीवी लोग अन्य वर्गों की सेवा का कार्य करते थे। पांचवा वर्ग योद्धा लोगों का था। इस वर्ग का सारा खर्च राजा स्वयं चलाता था। यह लोग सदैव युद्ध करने के लिए उद्यत रहते थे और शान्ति के समय में ये लोग आनन्द का जीवन व्यतीत करते थे। छठा वर्ग निरीक्षकों का था। इस वर्ग का कर्तव्य राजा के कार्यों का निरीक्षण करना और उसकी सूचना सम्राट को देना होता था। इन निरीक्षकों में से जो सबसे अधिक योग्य तथा विश्वसनीय होते थे वे राजधानी तथा राज–शिविर के निरीक्षण के लिए रखे जाते थे। ये निरीक्षक गुप्तचरों का भी काम करते थे। सातवां वर्ग मंत्रियों तथा परामर्शदाताओं का था। इस वर्ग वालों की संख्या सबसे कम थी परन्तु यह वर्ग समाज में सबसे अधिक शिक्षित तथा बुद्धिमान होता था कि यह सातों जातियां अपने निश्चित कार्य को ही कर सकती थीं। अन्य कार्यों को करने में इन्हें आज्ञा न थी। इनमें अन्तर्जातीय विवाह भी नहीं हो सकता था। मेगस्थनीज लिखता है कि भारतवासियों को अच्छे–अच्छे कपड़े पहनने का बड़ा शौक था। इनके वस्त्र बहुमूल्य होते थे और उन पर सोने का काम किया रहता था। विवाह का उद्देश्य भोग, जीवन–संगी बनाना तथा पुत्र उत्पन्न करना था। इस काल में बहु–विवाह की भी प्रथा थी परन्तु यह सम्भवतः राजवंशों तक सीमित थी। एवं विवाह–प्रथा में वर के पिता को एक जोड़ी बैल कन्या के पिता को देना पड़ता था। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि मेगस्थनीज ने लिखा है कि भारतवासी लेखन कला को नहीं जानते थे। यह बिल्कुल असत्य प्रतीत होता है। मेगस्थनीज ने ब्राह्मणें, सन्यासियों तथा श्रमणों का भी उल्लेख किया है। ये लोग अत्यन्त सरल जीवन व्यतीत करते थे और सांसारिक जीवन त्याग कर बस्ती से दूर निवास करते थे। यह लोग शाकाहारी होते थे और कुशासन अथवा मृगचर्म पर सोते थे यह लोग प्रायः घूम कर जनता को उद्देश्य दिया करते थे।

राजनीतिक दशा: मेगस्थनीज कहता है कि राजा दिन भर अपनी राज सभा में रहता था और न्याय किया करता था उसे अपनी जान का सदा भय लगा रहता था। अतएव वह एक कमरे में दो रात से अधिक नहीं रहता था। जब कभी सम्राट शिकार के लिए जाता था उसका मार्ग रस्सियों से अलग कर दिया जाता था और यदि कोई इस रस्सियों को लांघने का प्रयत्न करता था तो उसे प्राण दण्ड दिया जाता था। मेगस्थनीज ने सम्राट के राज–भवन का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। वह लिखता है कि सम्राट के भवन पाटलिपुत्र में बने थे। इनके चारों ओर

सुन्दर उद्यान तथा सरोवर थे। राजभवन के आंगन में पालतू मोर रक्खे जाते थे। उद्यानों में बड़े ही सुन्दर–सुन्दर शुक अर्थात् तोते बहुत ही सुन्दर मछलियां रहती थीं। मछलियों को पकड़ने की किसी को आज्ञा न थी परन्तु राजकुमार लोग आमोद–प्रमोद के लिए उन्हें पकड़ सकते थे। सम्राट प्रायः राजप्रासाद के भीतर ही रहता था और उसकी रक्षा के लिए नारी संरक्षिकाएं होती थीं। केवल चार अवसरों पर सम्राट अपने राज–भवन के बाहर निकलता था अर्थात युद्ध के समय, न्यायधीश का पद ग्रहण करने के लिए बलि देने के लिए तथा आखेट के लिए। मेगस्थनीज ने राज–दरबार का भी बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। उसके कथनानुसार चन्द्रगुप्त कादरबार बड़े ठाठ–बाट का था। सोने–चांदी के सुन्दर बर्तन, जड़ाऊ मेज तथा कुर्सियां और कमखाब के बारीक वस्त्र देखने वालों की आंख को चकाचौंध कर देते थे। सम्राट मोती की माला से अलंकृत पालकी और सुनहले फूलों से विभूषित हाथी पर बैठ कर राज–भवन के बाहर जाता था। सम्राट को शिकार करने का बड़ा शौक था। उसके आखेट के लिए बड़े–बड़े वन सुरक्षित रखे जाते थे राजा को पहलवानों के दंगल, घुड़दौड़, पशुओं के युद्ध आदि देखने का बड़ा शौक था और उन्हीं से अपना मनोविनोद किया करता था।

मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त की राजधानी पाटलिपुत्र का भी बड़ा विस्तृत वर्णन किया है। वह लिखता है कि पाटलिपुत्र भारत का सबसे बड़ा नगर है और यह सोन तथा गंगा नदियों के संगम पर स्थित है। यह नगर साढ़े नो मील लम्बा और पौने दो मील चौड़ा है। नगर के चारों ओर एक खाई सी है जिनकी चौड़ाई ६०६ फीट और गहराई ४५ फीट है। उसके चारों ओर एक दीवार है जिसमें ६४ फाटक और ५७२ बुर्ज बने हैं। पाटलिपुत्र के प्रबन्ध के विषय में मेगस्थनीज ने लिखा है कि नगर का प्रबन्ध ६ समितियों के द्वारा होता था जिनमें से प्रत्येक में पाँच–पाँच सदस्य होते थे। इन समितियों के कार्यो का वर्णन चन्द्रगुप्त के शासन प्रबन्ध का वर्णन करते समय किया जा चुका है। मोरलैस महोदय ने मेगस्थनीज द्वारा वर्णित शासन की ओर संक्षेप करते हुए लिखा है, "जहाँ तक शासन का सम्बन्ध ा है मेगस्थनीज के वर्णनाशों से यह पता लग जाता है कि यह सुव्यवस्थित तथा पूर्णतया सुसंगठित था।"

चन्द्रगुप्त के अन्तिम दिवस—जैन अनुश्रुतियों के अनुसार चन्द्रगुप्त ने महावीर स्वामी की शिष्यता ग्रहण कर ली थी। कहा जाता है कि भारत के इस महान सेनानायक तथा कुशल शासक ने २४ वर्षो तक अत्यन्त सफलतापूर्णक शासन के उपरान्त राज–वैभव को लात मार २९९ ई० पू० में संन्यास ग्रहण कर लिया। उसके शासन–काल के अन्तिम भाग में उसके राज्य में एक बहुत बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा। अतएव जैन–भिक्षुकों के एक बहुत बड़े दल ने आचार्य भद्रबाहु के नेतृत्व में कर्नाटक के लिये प्रस्थान कर दिया। चन्द्रगुप्त को भी वैराग्य उत्पत्त हो गया और चला गया और वहीं पर एक सच्चे जैन की भाँति अनशन करके अपने प्राण त्याग दिये। इस प्रकार मौर्य–साम्राज्य के संस्थापक की जीवन लीला समाप्त हो गई। अब इस प्रतापी सम्राट के कार्यो का मूल्यांकन कर देना आवश्यक है।

चन्द्रगुप्त के कार्यो का मूल्यांकन— चन्द्रगुप्त मौर्य भारत का प्रथम ऐतिहासिक सम्राट था और भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करने का श्रेय उसे प्राप्त हैं जिन परिस्थितियों में उसने इस साम्राज्य की स्थापना की वे उसके गौरव को अधिक बढ़ा देती है। जिस समय उसने साम्राज्य स्थापित करने की कल्पना की उस समय वह साधनहीन था। न उसके पास सेना थी और न सेना संगठित करने के लिये धन था, वरन् अपने प्राणों की रक्षा के लिए वह इधर–उधर भटक रहा था। परन्तु अपनी प्रतिभा के बल से उसने दोनों को ही प्राप्त कर लिया। सौभाग्य से उसे चाणक्य जैसे अद्वितीय प्रतिभा वाले ब्राह्मण का धन तथा बुद्वि प्राप्त हो गई और उसने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने दोनें का ही सदुपयोग किया। नन्दों के विशाल तथा शक्तिशाली साम्राज्य पर विजय प्राप्त करना खेल न था। उसने न केवल एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की वरन् उसने विदेशी यूनानियों को भी अपने देश से मार भगाया और देश को विदेशी शासन से मुक्त करने का यश प्राप्त किया। वह प्रथम तथा अन्तिम भारतीय शासक था जिसने अफगानिस्तान तथा बलूचिस्तान पर भी शासन किया। भारत की प्राकृतिक सीमाओं के बाहर शासन करने का यश उसी का प्राप्त है उसने भारत के छोटे–छोटे राज्यों को समाप्त कर देश को राजनीतिक एकता प्रदान की और भारत के भावी महत्वाकांक्षी सम्राटों के लिए आदर्श उपस्थित किया। उसने

न केवल सम्पूर्ण उत्तरी भारत पर अपना एक छत्र साम्राज्य स्थापित किया। वरन् दक्षिण भारत के भी एक बहुत बडे भाग पर उसने शासन कियां उन दिनों, जब यातायात के साधनों का सर्वथा अभाव था, उसने एक असम्भव कार्य को सम्भव कर दिखाशा। चन्द्रगुप्त ने न केवल एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की वरन् उसे सुरक्षित रखने तथा स्थायी बनाने की भी व्यवस्था की। उसने एक ऐसी सुसंगठित तथा सुसज्जित सेना का संगठन किया कि उसका साम्राज्य के केवल उसके अपने जीवन–काल में वरन् उसके उत्तराधिकारियों के काल में भी वाह्य आक्रमणों से सुरक्षित रहा।

न केवल सामरिक दृष्टिकोण से चन्द्रगुप्त मौर्य की कीर्ति अमर है वरन् प्रशासकीय दृष्टिकोण से भी उसका भारतीय इतिहास में ऊँचा स्थान है। वह अपनी प्रजा को शांति, सुख तथा सम्पन्नता प्रदान करने में पूर्ण रूप से सफल रहा। जिस शासन–व्यवस्था को उसने प्रारम्भ किया वह भावी शासकों के लिये आदर्श तथा अनुकरणीय बन गई। जिस मंत्रि–परिषद् तथा विभागीय व्यवस्था का उसने प्रारंभ किया वह थोडे बहुत परिवर्तन के साथ आज भी प्रजातंत्रात्मक राज्यों में प्रचलित है। उसके द्वारा स्थापित किया हुआ स्थानीय शासन आज भी ग्राम–पंचायतों, नगर–पालिकाओं तथा महापालिकाओं के कार्य कर रहा है। अतएव हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सैनिक तथा प्रशासकीय दोनों ही दृष्टिकोण से चन्द्रगुप्त मौर्य एक आदर्श तथा अनुकरणीय सम्राट था।

बिन्दुसार (२९८ ई० पू०–२७३ ई० पू०)–चन्द्रगुप्त के पश्चात उसका पुत्र बिन्दुसार मगध के सिंहासन पर बैठा। उसने सिंहासन पर बैठने के बाद 'अमित्र–घात' की उपाधि ली जिसका अर्थ होता है अमित्रों अर्थात् शत्रुओं का घात अर्थात् विनाश करने वाला। इससे स्पष्ट है कि बिन्दुसार ने अपने पिता की साम्राज्यवादी नीति को जारी रखा। यद्यपि अपने से प्राप्त साम्राज्य की सीमा में वह वृद्धि न कर सका परन्तु आंतरिक विद्रोहों को शांत कर वह साम्राज्य का संगठित रखने में पूर्णरूप से समर्थ रहा। उसके शासन–काल में पहला विद्रोह तक्षशिला में हुआ। इन दिनों बिन्दुसार का ज्येष्ठ पुत्र सुसीम वहाँ शासन कर रहा था। बिन्दुसार ने विद्रोह की सूचना पाते ही अपने दूसरे पुत्र अशोक का विप्लव शांत करने के लिये तक्षशिला भेजा। वहाँ पहुँचने पर यह ज्ञात हुआ कि प्रजा ने राजा अथवा राजकुमार के विरूद्ध विद्रोह नही किया है वरन् यह विद्रोह अमात्यों के विरूद्व था जो उनके साथ अत्याचार कर रहे थे वहाँ पर शांति स्थापित कर दी।

विदेशी राज्यो के साथ बिन्दुसार ने अपने पिता की भाँति मैत्री–पूर्ण सम्बन्ध रक्खा। कहा जाता है मिस्र तथा सीरिया के शासकों ने अपने राजदूत पाटलिपुत्र भेजे थे जहाँ उसका बड़ा आदर–सत्कार हुआ था। भारत के बाहर पश्चिमोत्तर प्रदेश में उसने यूनानियों के साथ मैत्री का व्यवहार किया तथा उसके साथ व्यापारिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध रखा।

बिन्दुसार के कई पुत्र तथा कन्याएं थीं। अशोक उसका ज्येष्ठ पुत्र था जो बड़ा ही वीर तथा साहसी था। बौद्व ग्रंथ 'दिव्यावदान' में अशोक के दो भाइयों सुसीम तथा विगत शोक का उल्लेख मिला है। सुसीम अशोक का सौतेला और विगत शोक उसका सगा भाई था। २७३ ई० पू० में बिन्दुसार का परलोकवास हो गया और उसके बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र अशोक मगध के सिंहासन पर बैठा।

कलौंजी

हदीस में आता है कि कलौंजी मौत के सिवा हर मरज की दवा है। अर्थात कलौंजी हर मरज में फाइदा करती है। मेदे को ताकत देती है, पेट की हवा बाहर करती है आंतों में कीड़े हों तो उनको मारती है हैज और पेशाब को जारी करती है, गुर्दा और मसाने की पथरी में भी लाभदायक है, बल्गमी और सौदावी बुखारों में भी लाभ देती है। गठिया, निकरस और इरकुन्नसा को दूर करती है।

प्रयोग विधि :

५० ग्राम कलौजी रात को सिरके में भिगोदें, अगले दिन छांव में सुखा कर बारीक पीस कर छान लें, इस सुफूफ (चूर्ण) को १५० ग्राम ख़ालिस शहद के किवाम में मिला कर दस ग्राम तक दिन में एक बार खाएं।

कलौंजी, हालोन, अजवाइन और मेथी चारों को बराबर तौल में रख लें, सुब्ह को चार ग्राम फांक कर गुनगुना पानी पियें गठिया और कमर के दर्द में लाभ होता है।

उत्तर प्रदेश में सफेद ज़हर का सैलाब

(जदीद मरकज से ग्रहीत)

शबीहुल हसन नगमी

लखनऊ। रामभक्तों और स्यूडो देश भक्तों के गुजरात से इंसानों के जिस्म में जहर पहुंचाने की साजिश के तहत नकली दूध और नकली खोया बनाने का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह उत्तर प्रदेश में फैल चुका है। इसे महज एक इत्तेफाक नहीं कहा जा सकता है कि नकली खोया और नकली दूध की तिजारत करने वालों में अक्सरियत उन लोगों की है जिनका ताल्लुक बीजेपी और आर.एस.एस. से है। रक्षाबन्धन से ठीक पहले मुंबई के तीन हजार किलोग्राम नकली खोया पकड़ा गया था जो गुजरात से सप्लाई हुआ था। यह खोया जिस शख्स के कब्जे से मिला था उसने खुद को शिवसैनिक बताया था। उसने पुलिस को बताया कि रोजाना इसी किस्म का पचास ट्रक नकली खोया गुजरात से महाराष्ट्र और दीगर रियासतों को भेजा जाता है।

नकली दूध और खोया बनाकर हराम की दौलत इकट्ठा करके रातों रात दौलतमंद बनने के ख्वाहिशमंदों की कमी उत्तर प्रदेश में भी नहीं है। मेरठ और मुजफ्फर नगर जैसे शहरों से ट्रकों नकली खोया, दिल्ली सप्लाई होता था, लेकिन बरेली में तो मुजरिमों ने उस वक्त इंतहा कर दी जब उन्होंने हजारों लीटर नकली दूध बनाकर सरकारी जुमरे (उपक्रम) की पराग डेरी को ही सप्लाई करना शुरू कर दिया। उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर नकली और इंसानके के लिए इंतिहाई नुक्सानदेह दूध और खोया बेचे जाने का पर्दाफाश हुआ तो प्रदेश की राजधानी लखनऊ के चारबाग में लगने वाली दूध की मंडी में नगर निगम के शोबा–ए–सेहत के अफसरान मुआयना करने पहुंचे। दूध का सैंपिल भरा जा रहा है मंडी में इसकी खबर होते ही दूध वाले केन छोड़ कर भाग गए। उत्तर प्रदेश के डीजी पुलिस विक्रम सिंह ने सभी जिलों के पुलिस कप्तानों को हिदायत दी है कि नकली दूध खोया घी वगैरह बनाने वालों के खिलाफ सख्ती की जाए और उन पर एनएसए जैसे सख्त कानून का भी इस्तेमाल किया जाए। अजीब बात है कि नकली दूध और दूध से बना सामान बेचने का जुर्म करने वालों के खिलाफ कोई सख्त कानून ही नहीं है। जिन लोगों के बच्चों को यह जहरीला दूध पिलाया जा रहा है उनका मतालबा है कि ऐसे लोगों को दहशतगर्दों के दर्जे (श्रेणी) में रखकर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

नकली दूध और खोया बनाने का यह जहरीला धंधा आज से नहीं चल रहा है। इसकी जड़ें पुरानी होने की वजह से बहुत गहरी हैं। पिछले तकरीबन पांच–सात सालों से यह जहरीला कारोबार चल रहा है। मेरठ, मुजफ्फर नगर, बरेली इसके गढ़ हैं जबकि आसपास के शहरों के अलावा दिल्ली और गाजियाबाद वगैरह में बड़ी तादाद में इसे खपाया जा रहा है। चंकि ऊपर से नीचे तक सबकी तंख्वाह बंधी होती है लिहाजा इसे रोकने के जिम्मेदारान आंख बंद किए रहते हैं। लखनऊ में काफी पहले जब पैकेट के दूध का कारोबार शुरू हुआ था तो उसके साथ सिंथेटिक दूध भी बाजार में आया था। लेकिन तब उन लोगों के खिलाफ कोई सख्त कार्रवाई नहीं हुई थी नतीजा यह कि मिलावट खोरों के हौसले बढ़ते चले गए। आज मिलावटखोरों का यह आलम हो गया है कि दूध, खोया, दही, पनीर, मिठाई, केक के अलावा दवाएं, नकली देसी घी और सब्जियों तक के रंग–रोगन करके जहरीला बना दिया गया है। यही वजह है कि न सिर्फ बच्चें में मेंटल और सैक्सुअल डिसआर्डर हो रहा है बल्कि बड़े लोगों में दिल, किडनी, लीवर और कैंसर की बीमारियां तेजी से बढ़ रही है। इस किस्म की मिलावट खोरी को रोकने का काम नगर निगम के मोहकमा सेहत और सेहत मोहकमे का होता है मगर करप्शन की वजह से यह मोहकमे बिल्कुल नाकारा हो कर रह गए हैं। अब इधर पिछले दिनों जब से मिलावट खोरों के खिलाफ मुहिम चली है तो नगर निगम के मोहकमा सेहत के अफसर अपने 'भट' से बाहर निकले हैं और धूप में निकलने की वजह से उनके जिस्म पर लगी फफूद कुछ छुटी है।

. मिलावटखोरों को पकड़ने के लिए जिला मजिस्ट्रेट चन्द्रभानु और सीनियर पुलिस कप्तान वी.पी. जोगदंड की तेजी की वजह से कार्रवाई तो हुई मगर उसमें किस तरह लापरवाई बरती

गई वह भी जरा देख लें।

पिछली सत्रह अगस्त को लखनऊ के राजेन्द्र नगर इलाके में पायनियर मांटेसरी स्कूल के करीब मकान न० २१० पर छापा मारा गया। जहां सिंथेटिक खोया से मिल्क केक और बर्फी बनाते हुए तकरीबन पैंतीस लोग पकड़े गए। लाखों रूपए की नकली मिठाइयां वगैरह बरामद हुई। इस कारखाने के मालिक विजय कुमार गुप्ता को भी पकड़ा गया। उसके बयान से पता चलता है कि शहर में किस तरह नकली मिठाइयों या दूध से बनी चीजों का जहरीला सैलाब आया है। उसने बताया कि उसके कारखाने में रोजाना पचास कुंटल खोया और नकली मिठाइयां बनाई जाती हैं जिन्हें शहर की नामी–गिरामी दुकानों पर बेचा जाता है। यहां यह बात भी ध्यान रखने वाली है कि मिठाई बेचने वाले ज्यादातर दुकानदारों का ताल्लुक बीजेपी से है। विजय कुमार गुप्ता को नगर निगम से नमकीन बनाने का लाइसेंस मिला है। जिसकी आड़ में वह कई बरसों से यह धंधा कर रहा था। इसी दिन नादरगंज इलाके में छापा मारा गया जहां आठ भट्टियों पर मिल्क केक और सोहन पपड़ी तैयार की जा रही थी। इस छापे में कारीगर और मजदूर ही पकड़े गए लेकिन मालिक चेतन अग्रवाल फरार हो गया जो अभी तक पकड़ में नहीं आया था। इसके बाद अखबारों में छपी खबर के बाद डी०एम० ने अजय डेरी के कोल्ड स्टोरेज और ऐशबाग के राम स्वरूप कोल्ड स्टोरेज पर छापा मारा। जहां नौ हजार किलोग्राम खोया रखा पाया गया जिसके नमूने में मिलावट पाई गयी। जिला मजिस्ट्रेट ने हुक्म दिया कि उनकी इजाजत के बगैर खोया कोल्ड स्टोरेज से बाहर न जाए और नाका पुलिस से इसकी निगरानी करने के लिए कहा था। नाका पुलिस ने कितनी अच्छी निगरानी की इसका पता इसी से लगता है कि अजय डेरी के मालिकान ने सारा खोया पैसे लेकर ताजिरों को सौंप दिया जिन्होंने रक्षा बन्धन के मौके पर उसे बाजार में खपा दिया। जिला मस्जिस्ट्रेट ने इस मामले में सख्त कार्रवाई की बात कही थी लेकिन तकरीबन तीन हफ्ते का वक्त गुजर जाने के बावजूद न तो ताजिरों को खोया बेचने वाले कोल्ड स्टोरेज के मालिकान के खिलाफ कोई कार्रवाई हुई और न ही नाका पुलिस के उन अहलकारों के खिलाफ जिनके जिम्मे कोल्ड स्टोरेज की निगरानी का काम था इस तरह तो मिलावट खोरी को रोका नहीं जा सकता।

ऐसी ही एक हरकत पिछली इक्तीस अगस्त को की गई जब बाकायदा एलान करके यानी अखबारों में खबर छपवा कर नगर निगम के अफसरान चारबाग की दूध मंडी में नमूने लेने पहुंचे। चूंकि पहले से एलान हो चुका था लिहाजा दूधियों से दूध खरीदने वाले ताजिर तो आए नहीं और दूधिए मंडी में दूध का नमूना लेने गए अफसरान की टीम को देखकर दूध के केन छोड़कर भाग गए। छापा मारने गई टीम ने तकरीबन एक सौ पचहत्तर दूध के केन जब्त कर लिए जिसके तीस नमूने भरे गए और बाकी बचा तीन हजार लीटर दूध जब नगर निगम का अमला बहाने लगा तो आस–पास के लोग डिब्बे बाल्टियां, केन लेकर पहुंच गए। इनमें ढाबे वाले और कैन्टीन वाले भी शामिल थे जो मुफ्त का दूध भरने के लिए डिब्बे लिए खड़े थे। इस पर नगर निगम के एक मुलाजिम ने कहा कि नाली में जाने से बेहतर है किसी के पेट में चला जाए। लेकिन यह पूछने पर कि अगर दूध सिंथेटिक हुआ और लोग बीमार पड़ गए तो कौन जिम्मेदार होगा? जवाब मिला यह तो दूध इस्तेमाल करने वालों को सोचना चाहिए। इस मामले में नगर निगम के अमले ने दूध के केन जब्त भले ही कर लिए हों। लेकिन मौके पर वह चूंकि किसी को गिरफतार नहीं कर सके लिहाजा इस नकली दूध के लिए किसी पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। ऐसा सिर्फ इस वजह से हुआ क्योंकि सबको पहले से इस कार्रवाई का इल्म था। अब जिला मजिस्ट्रेट कह रहे है कि दुबग्गा, आलम बाग, सिटी स्टेशन और बुद्धेश्वर समेत तमाम दूध की मंडियों पर छापे मारे जाएंगे। लेकिन अगर कोई पकड़ा नहीं जाएगा तो नकली दूध जब्त करके क्या तीर मार लेंगे। प्रदेश में जो इन दिनों जहरीला सफेद सैलाब आया हुआ है। दूध से बनी तमाम चीजों में मिलावट है और वह जहरीली हो सकती है क्योंकि वह नकली दूध से बनी होती है। नकली दूध से बनाने में सोडियम सल्फेट, कास्टिक सोडा, पोटैशियम थायोसाइनाइड, टाइटेनियम डाइआक्साइड, यूरिया और डाइसोडियम फास्फेट के अलावा उसमें गाढ़ापन लाने के लिए आलू का स्टार्च, मीठापन लाने के लिये गुलोकोज का घटया किस्म का सीरप वगैरह बगैरह, सफेदी लाने के लिए पोस्टर कलर या कोई और सफेद रंग, चिक्नाई लाने के लिए घटिया किस्म का रिफाइन आयल इस्तिअमाल किया जाता है जो सेहत के लिए सख्त मुज़िर है। ●●●

अध्यापकों की सेवा में

वसीम राशिद

बहुत दिनों से अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को बेरहमी (निर्दयता) से पीटने की खबरें लगातार पढ़ने को मिल रही हैं। गांव दीहातों, कसबों में तो इस तरह की खबरों की जियादा अहमियत नहीं होती, लेकिन बड़े–बड़े शहरों में इस तरह के वाकियात (घटनाएं) कभी कभी अखबारों और टीवी के सामने आ जाते हैं, हाल ही में देहली के एक बड़े स्कूल के एक सीनियर टीचर ने एक बहुत छोटी बात पर एक विद्यार्थी को इतना मारा कि उसका हाथ टूट गया और उसको फौरी तौर पर अस्पताल में दाखिल कराया गया, देहली के एक नामवर स्कूल के टीचर ने नवीं किलास के विद्यार्थी को पीटीएम में मां बाप के न आने पर इतना बेइज्जत किया कि उसने घर जाकर पंखे में लटक कर अपनी जान दे दी। देहली के एक और मशहूर और बड़े स्कूल की एक छात्रा न जाने किस वजह से जेहनी परेशानी में मुब्तला थी, कि स्कूल की काउन्सलर से बात करने के बाद उसने स्कूल की पाचवीं मंजिल से कूद कर अपनी कीमती जिन्दगी का खातिमा कर लिया, बअद में पता चला कि वह अपने स्कूल के टीचरों के रवैये से परेशान रहती थी।

यहां उन तमाम घटनाओं का जिक्र करने का मतलब यह है कि अध्यापकों का निगेटिव रवैया सामने आ सके, अध्यापक के रवैये का जिक्र करने से पहले मां बाप से भी चन्द बातें करना जरूरी है, मां बाप को अपने बच्चों के जिहन और दिल व दिमाग को पुर सुकून रखने के लिए घर का माहौल पुर सुकून रखना बहुत जरूरी है, अपने घरों में जहां वालिदैन (माता पिता) झगड़ा करते हैं और बच्चों के सामने एक दूसरे की बेइज्जती करते हैं वहां बच्चे खुद को बेहद अकेला महसूस करते हैं और उनके दिल में किसी एक के लिये वहीं नफरत का जजबा बेदार हो जाता है जो मां बाप के दिल में एक दूसरे के लिए होता है। बच्चे का जिहन कोरे कागज की तरह से होता है उस पर जो लिख दिया जाए वह नक्श हो जाता है, बच्चे घर में वालिदैन (मां बाप) को जब एक दूसरे के खिलाफ जहर उगलते देखते हैं तो वह बुराइयां जिहन नशी कर लेते हैं और सारी जिन्दगी किसी एक के लिए उनके दिल में जो नफरत बैठ जाती है वह नहीं निकलती, घर के माहौल की वजह से बच्चे की पूरी शखसियत (व्यक्तित्व) मंसूख (विकृत) होकर रह जाती है। ऐसे में जब स्कूल में टीचर भी उसे किसी बात पर डाट फटकार करते हैं तो वह टूट जाता है। और उसे दुन्या में कहीं जाए पनाह (शरणगार) नजर नहीं आती और वह मौत के दामन में पनाह ढूंढता है, यहां अध्यापक की अहमियत (महत्व) बहुत बढ़ जाती है एक अच्छे अध्यापक को अपने विद्यार्थि की जेहनी कैफियत (मनोवृत्ति) को समझना जरूरी है, जो अध्यापक अपने विद्यार्थियों की इज़्ज़त करते हैं उनकी भावनाओं का सम्मान करते हैं उनकी छोटी छोटी परेशानियों को सुनते हैं और हल (समाधान) ढूंढते हैं, ऐसे अध्यापकों का विद्यार्थी बहुत आदर करते हैं और अगर घर में कहीं किसी परेशानी का शिकार हैं तो स्कूल में वह अपने अध्यापकों के साथ बहुत खुश रहते हैं, एक अध्यापक के लिए जरूरी है कि वह विद्यार्थियों के घरेलू माहौल और उनकी कठिनाइयों के बारे में भी जानकारी रखें, पहले जमाने में तालिबइल्म असातिजा (अध्यापक) की बेहद इज्जत करते थे, अगर अध्यापक कहीं मिल गया तो विद्यार्थी अपनी जगह छोड़कर सम्मानित खड़े हो जाते थे आज अध्यापक शिकायत करते हैं कि विद्यार्थी उनकी इज्जत नहीं करते उनके लिये बस में अगर वह खड़े हैं जगह नहीं देते खुद से सलाम नहीं करते, यह तमाम शिकायतें करने से पहले अध्यापक पहले अपनी जांच कर लें, वह खुद को ऐसा बनाएं कि तालिब इल्म (विद्यार्थी) उसकी इज्जत करें, इज्जत करवाने के लिए इज्जत करना बहुत जरूरी है। यदि अध्यापक तुच्छ बातों से विद्यार्थी को अपमानित करता है और उसको गिरी नजर से देखता है तो ऐसे अध्यापक को विद्यार्थी सम्मान नहीं देगा, इसके विपरीत जो अध्यापक अपने विद्यार्थी के साथ प्यार और प्रेम का व्यवहार करते हैं, विद्यार्थी उनको अपना आईडियल बना लेते हैं और हर समय अपने गुरू के दिखाए हुए मार्ग पर चलते हैं, एक अच्छे टीचर के लिए बहुत जरूरी है कि भलीभांति जानकारी रखता हो कि किस लड़के को किस विषय में परेशानी है और उसे कैसे दूर किया जाए। एक अच्छे टीचर को चाहिए

कि वह कुछ लड़कों को अपनी निगरानी (संरक्षता) में लेते और फैमली सिस्टम शुरू करें, उस फैमली सिस्टम में वह अगर दस बारह लड़कों का एक रिकार्ड बना लें और फिर उन के मां बाप से समय समय उनकी परेशानियों के विषय में बात करते रहें तो उचित परिणाम सामने आ सकते हैं और इस तरह विद्यार्थी अध्यापक के करीब आ सकते हैं आजकल टियूशन पढ़ाने का रिवाज भी बहुत जोर पकड़ रहा है ऐसे भी टीचर देखने को मिले जो नियमानुसार स्कूलों में पढ़ाते नहीं लेकिन हजारों रूपयों के टयूशन लगाकर केवल उन्हीं लड़कों को पढ़ाते हैं और उन्हीं लड़कों का ख्याल करते हैं, ऐसे में वह विद्यार्थी जो स्कूल में उनसे पढ़ रहे हैं वह उन विषयों में कमजोर रह जाते हैं, इस लिए अध्यापकों के लिए यहां भी अपनी जांच पड़ताल जरूरी है। वह स्कूल और संस्थाएं जो इन अध्यापकों को अच्छा वेतन देकर रखते हैं, यह अध्यापक उनके विद्यार्थियों का भविष्य दांव पर लगा देते हैं बोर्ड की परीक्षा से पहले स्कूलों के टीचर टियुशन वाले बच्चों को स्कूल जाने से रोक देते हैं और रात दिन एक करके उनकी गणित, इंगलिश, साइंस और कठिन विषय की तैयारी कराते हैं और इस तरह उनके किलास के बच्चे वंचित रह जाते हैं। मेरे २० वर्षीय टीचिंग इक्सपीरियंस में यह भी कड़वी हकीकत है बयान करते हुए बेहद तकलीफ हो रही है कि टीचर एक दूसरे के खिलाफ साजिश (षडयंत्र) करने और दूसरे को नीचा दिखाने में लगे रहते हैं, ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रहते हैं – वर्तमान काल में टीचर की जिम्मेदारियां बहुत बढ़ जाती हैं इस बिगाड़ के जमाने में अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों के लिए सही मार्गदर्शन की बेहद जरूरत है, विद्यार्थियों को फैशन परस्ती, सेक्स की तरफ बढ़ते रूझानात (प्रवृत्ति) जमाने के लिहाज से सबजेक्ट का सलेक्शन और कैरियर की अहमियत के बारे में बताना भी जरूरी हो जाता है। आज का तालिब इल्म विद्यार्थी अपने लिये खुद सही कैरियर का इन्तिखाब नहीं कर पाता, इसके लिए वालिदैन के साथ साथ असातिजा को भी आगे आना चाहिए और तालिब इल्मों की हर तरह रहनुमाई करनी चाहिए, हम तालिब इल्मों की बुराइयां तो देख लेते हैं और उनको हर बात के लिए मुरिदे इलजाम (अपराध पात्र) ठहरा देते हैं। लेकिन असातिजा (अध्यापक) अपनी खामियों और बुराईयों की तरफ नजर नहीं करते, अगर अध्यापक अपने आपको विद्यार्थियों के भविष्य के लिए थोड़ा भी जिम्मेदारी समझ लें और उनकी सही रहनुमाई करें तो यकीनन तालिब इल्म उनकी कद्र भी करेंगे और अहमियत भी समझें।

पेड़ न काटो

सअ़द आज़मी

पेड़ न काटो, पेड़ न काटो
पंछी सारे बोल रहे हैं।
पेड़ बिना हम कहां रहेंगे
बच्चे हमारे कहां बसेंगे।
उड़–उड़ कर जब थक जाएंगे
हम आराम कहां पाएंगे।
पेड़ों से ही हरियाली है।
पेड़ों से ही खुशहाली है।
शहर हुए जो पेड़ से खाली
सूरत होगी उनकी काली
पेड़ बिना सूना है गांव
पेड़ से ही मिलती है छांव
बात हामरी मानो यारो
पेड़ न काटो, पेड़ न काटो
पंछी सारे बोल रहे हैं।

अनुवादक : नोमान जौरासी

चार नई किताबों का परिचय

इदारा

हज़रत अबू बक्र (रजि०)	साइज़ १४ X २१	सेमी० पृष्ठ ६८
हज़रत उमर (रजि०)	साइज़ १४ X २१	सेमी० पृष्ठ ६४
हज़रत उस्मान (रजि०)	साइज़ १४ X २१	सेमी० पृष्ठ ६८
हज़रत अ़ली (रजि०)	साइज़ १४ X २१	सेमी० पृष्ठ ६४

ख़ुलफाए राशिदीन रज़ि० (जो आदर्श शासक थे) की सीरत पर उर्दू में तो बड़ा जख़ीरा है लेकिन हिन्दी में उन के तर्ज़मों में सुस्त रफ्तारी है। हमारे नवजवान फ़ाज़िल जनाब इरफ़ान फ़ारूक़ी नदवी ने इन चारों ख़ुलफ़ा रज़ि० के बारे में ज़रूरी मालूमात हिन्दी में मुहय्या कर दी है। चूंकि मुअल्लिफ़ मौसूफ़ नदवी हैं, इस लिए रत्ब व याबिस से गुरेज़ किया है। तमाम हिन्दी दां नवजवानों को यह किताबें पढ़ना चाहिए, ख़ास तौर से कालिजों में पढ़ने वाले तलबा तक यह किताबें पहुंचना ज़रूरी है ताकि वह अपने मिसाली हुक्मरानों से परिचित हो सकें।

चारों किताबों पर मुक़द्दमा जनाब मौलाना मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी का है, मुअल्लिफ़ ने " दो शब्द" में मुफ़ीद बातें दर्ज की हैं चाहिए था कि इस में यह भी बताते कि मैं ने कहां कहां से रहनुमाई हासिल की है। सेटिंग में प्रकाशक, मुकद्दिमा, दो शब्द, को तो बोल्ड कर के स्पष्ट किया गया है। लेकिन जहां से जीवनी शुरू होती है, चाहिए था कि जिस की जीवनी लिख रहे हैं उस का नाम बोल्ड और स्पष्ट लिखा जाता। हज़रत उमर के इस्लाम लाने का मशहूर वाक़िआ सभी उलमा ने लिखा है कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़त्ल के इरादे से निकले थे, कि बहन बहनोई के इस्लाम लाने की ख़बर पर उन के घर गये उन को मारा, फिर बहन की बातें और क़ुर्आन की आयतें सुनकर बदल गये, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम लाए। मुअल्लिफ़ ने इस वाक़िअ़े को सहीह़ नहीं माना, लेकिन इस वाक़िअ़े को अ़ल्लामा शिब्ली और अल्लामा अब्दुश्शकूर फारूक़ी दोनों ने लिखा है। यह सहीह़ वाक़िआ़ है। अहम बातों के ह़वाले हाशिये पर दिये गये हैं। किसी किताब का मूल्य अंकित नहीं है। मुअल्लिफ़ को मश्वरा दिया जाता है कि वह हज़रते हसन (रज़ि०) पर भी लिखें कि ख़िलाफ़ते राशिदी उन ही पर तमाम होती है।

किताब मिलने का पता :
जमीअ़त पयामे अम्न
फ़ारूक़ी मंजिल, बरौलिया
नदवा रोड, डालीगंज,
लखनऊ–२०

मुनाजात

अमतुल अ़ज़ीज़

बेदिल हूं मैं और ख़स्ता तन
सामां बहुत है मन्ज़िल कठिन
पुर ख़ार या रब है ये सारा बन
इस बन को या रब तू कर चमन
मेरी मदद रह़मान कर
मन्ज़िल को तू आसान कर
रह़मत का पर्दा डाल कर
निअ़मत से माला माल कर
फ़िक्रों को तू पामाल कर
बेहतर से बेहतर ह़ाल कर
एह़सान या मन्नान कर
पाकीज़ा दिल सुब्ह़ान कर
अपना ही तू मुह़ताज रखा
रह़मत का सर पर ताज रख
आने की मेरी लाज रखा
शफ़क़त का तू हाथ आज रख
वहहाब राफ़िअ़ तू करीम
तू है मुअ़िज़्ज़ और है ह़लीम
बीमारियों को दूर कर
जुलमतकदे में नूर कर
दिल को मेरे मसरूर कर
ह़क़ से मुझे मख़मूर कर
दे सब्र मुझ को ऐ सबूर
और शुक्र मुझ को दे शकूर
ह़क़ पर रहूं साबित क़दम
ग़ाफ़िल न हूं मैं एक दम
दर पर तेरे मैं दम बदम
सर को करूं तस्लीम ख़म
मेरी हिफ़ाज़त कर वकील
शैतान से हर दम जलील

(पृष्ठ ४० का शेष)

मोदी के आदेश पर हुआ था गुजरात दंगा : झड़पिया

अमहदाबाद गुजरात के विश्वस्त और राज्य के गृहमंत्री रहे गोवर्धन झड़पिया ने पहली बार परोक्ष रूप से आरोप लगाते हुए कहा कि २००२ का कुख्यात गुजरात दंगा मोदी के आदेश पर हुआ था।

जनसंहार के लिए गृहमंत्री के रूप में जिम्मेदार रहे झड़पिया ने निजी टीवी चैनल एनडीटीवी से कहा कि उनकी हत्याएं केवल मोदी के आदेश पर हुई थीं। उन्होंने कहा 'हालांकि आज भी मैं मोदी का मित्र हूं और उस समय जब मैं मोदी के साथ था, पहले मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का कैडर था, जो यह विश्वास करता है कि नेता नेता है और आपको केवल उसके आदेश मानना है। २००२ के दौरान जो कुछ भी हुआ, उसके लिए मैं जिम्मेदार था और आज भी अपने को मानता हूं। हालांकि आज मैं मंत्री नहीं हूं फिर भी उससमय की अपनी जिम्मेदारियों से इनकार नहीं कर रहा हूं। उन्होंने कहा मोदी ने हरेन पंडया का टिकट कटवा दिया। पंडया की राजनीतिक हत्या मोदी ने पहले कर दी। शारीरिक हत्या बाद में हुई।

तुर्की में सत्ताधारी इस्लाम पसन्द पार्टी सफल

तुर्की की सत्ताधारी इस्लाम पसन्द जस्टिस एण्ड डेवलपमेंट पार्टी (ए०के०) पार्टी आम चुनाव में बहुमत से सफल हुई है। प्रधानमंत्री तैय्यब अर्दगान ने चुनाव में अपनी पार्टी की सफलता के बाद देश में आर्थिक सुधार जारी रखने और कुर्द विरोधियों के खिलाफ कार्यवाही जारी रखने का निश्चय किया है। समाचार एजेंसी एन०एन० तुर्क के अनुसार ए०के० पार्टी ने ५५० सीटों में ३२१ सीटों पर सफलता प्राप्त की है जबकि सेकूलर रिपब्लिकन पार्टी और नेशनल एक्शन पार्टी ने १२४ और ७६ सीटें ही जीती हैं। इस के अतिरिक्त १६ सीटों पर आजाद उम्मीदवार कामयाब हुए हैं। जस्टिस पार्टी के समर्थक सड़कों पर खुशीमनाने को निकल आए। अनकरा में रैली को सम्बोधित करते हुए प्रधानमंत्री तय्यब अर्दगान ने कहा कि उन की सरकार राष्ट्रीय एकता के लिए काम करती रहेगी और आर्थिक सुधारों को जारी रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि तुर्की में लोक तंत्र महत्वपूर्ण परीक्षा में सफल हुआ है। उन्होंने कहा कि कुर्द प्रथकतावादियों के खिलाफ आवश्यक कार्यवाही की जाएगी। विरोधी सेकूलर पार्टियां सत्ताधारी पार्टी ने हमेशा इस से इनकार किया है। प्रधानमंत्री ने मत डालने के बाद कहा था कि इन चुनावों में देश में प्रजातंत्र सुदृढ़ होकर उभरेगा।

नेट के शैतान बच्चे

कैलीफोर्निया। इंटरनेट के शैतानों (जिन्हें तकनीकी भाषा में हैकर कहा जाता है) ने नया मुखौटा धारण कर लिया है। अभी तक इनके शैतानी कारनामों को बचपना बताकर खारिज कर दिया जाता था। इनकी करतूतों को लोगों को अलर्ट करने, थोड़ी–बहुत अराजकता फैलाने, किसी को परेशान करने या फौरी तौर पर नुकसान पहुंचाने वाला बताकर हलके में लिया जाता था, लेकिन अब ये परिपक्व हो गये हैं। आपराधिक गतिविधियों में लिप्त हो गए हैं। इनका मकसद पैसा कमाना हो गया है। ये अपना काम पहले की तरह हल्ला बोल तरीके से नहीं बल्कि बेहद चुपचाप तरीके से अंजाम देते हैं, ताकि किसी को भनक भी न लगे और माल भी मिल जाये। इनके निशाने पर छोटी–मोटी साइटें नहीं बल्कि प्रतिष्ठत, विश्वसनीय और बड़ी वेबसाइटें होती हैं जहां लोग नियमित तौर पर अपने वेब ब्राउजर के जरिये विजिट करते हैं। ये बिक्री और वितरण से जुड़ी वेबसाइटों को खासतौर पर निशाने पर लेते हैं। ये बातें साइबर सुरक्षा साफ्टवेयर बनाने वाली कंपनी सिमेंटिक कारपोरेशन ने बताई हैं। कंपनी ने अपनी नयी रिपोर्ट में पूरी दुनिया को आगाह किया है। रिपोर्ट में नेट के शैतानों की करतूतों का गहराई से विश्लेषण किया गया है। सोमवार को जारी एक रिपोर्ट सिमेंटेक एंटीवायरस साफ्टवेयर से लैस दुनिया के १२ करोड़ कंप्यूटर की गतिविधियों पर आधारित है।

सिमेंटिक के विश्वव्यापी खुफिया नेटवर्क के निर्देशक डीन टर्नर ने बताया कि इंटरनेट हैकिंग अब डाटा चुरा कर पैसा बनाने के लिए की जाती है। उन्होंने कहा, अगर आप हल्ला–गुल्ला करते हुए अराजक तरीके से हमला करते हैं तो फिर आप लोगों को सावधान करते हैं। हैकरों का यह लक्ष्य अब कतई नहीं है। अगर आपको पैसा बनाना है तो आपको चुपचाप काम करना होगा। आजकल यही हो रहा है। अर्द्धवार्षिक इंटरनेट सुरक्षा रिपोर्ट जारी करते समय टर्नर ने बदले दौर के हैकरों के काम करने के तरीके पर प्रकाश डाला।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

टाडा अदालत ने देर से ही सही इंसाफ किया, श्रीकृष्ण आयोग की रपट पर कार्रवाई जरूरी

संजय दत्त को छह साल के सश्रम कारावास की सजा सुनाए जाने के साथ ही विशेष टाडा अदालत में मुंबई बमकाण्ड की सुनवाई का अध्याय खत्म हुआ। इसके साथ ही संजय दत्त के नाटकीय उथल पुथल भरे जीवन का एक कठिन अध्याय शुरू हुआ। संजय दत्त के साथ आमतौर पर भारतीय समाज में सहानुभूति है। एक लोकप्रिय सिनेमा कलाकार को सजा मिलने पर तरह तरह की प्रतिक्रियाएं आना स्वाभाविक है, लेकिन एक लोकतांत्रिक समाज में एक संदेश जाना भी जरूरी है कि कानून की नजरों में सब बराबर हैं। हमारे देश में खास तौर पर यह धारणा व्याप्त है कि बड़े लोगों को कुछ भी करने पर सजा नहीं होती और इस साधारण के ठोस कारण भी हैं। इसलिए संजय दत्त की सजा से हमारे समाज में कानून बनाने और उसका पालन करवाने वाले संस्थानों पर कुछ हद तक तो भरोसा मजबूत होगा।

लेकिन किसी समाज या सत्ता की न्यायप्रिय और निष्पक्ष होने की छवि किसी एक प्रसंग से नहीं बनती। वह एक समग्र और व्यापक मूल्यांकन से बनती है। इसलिए यह सिर्फ संयोग नहीं है कि महाराष्ट्र सरकार का रवैया अब भी इस मामले में टालू है, क्योंकि श्रीकृष्ण आयोग ने कई राजनेताओं और पुलिस अफसरों को दंगों में दोषी पाया है। अगर शिवसेना भाजपा सरकार ने इस मामले को दबाने की कोशिश की तो यह समझ में आता है, क्योंकि बाल ठाकरे से लेकर गोपीनाथ मुंडे तक कई नेताओं पर न्यायमूर्ति श्रीकृष्ण ने उंगली उठाई है। लेकिन कांग्रेसी सरकारों ने भी कुछ न करके अपनी और साथ ही हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता भी घटाई है। यह अब महाराष्ट्र सरकार का काम है कि वह समाज को विश्वास दिलाए कि कानून की नजर में सब बराबर हैं, चाहे वे दंगों में कत्लेआम करने–वाले नेता हों या अफसर या बम कांड के अपराधी। न्याय होना भी चाहिए और होते हुए दिखाना भी चाहिए।

दूध ही नहीं, अब गोमूत्र के भी मिलेंगे दाम

देहरादून। आम के आम गुठलियों के दाम। जी हां, उत्तराखंड की भाजपा सरकार अब गोमूत्र के औषधीय उपयोग पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने जा रही है। सहकारिता के आधार पर गायों को विशेष संरक्षण देकर गोमूत्र एकत्रित करने की यह महत्वाकांक्षी योजना सिर चढ़ गई तो औषधि निर्माण व ग्रामीण अर्थव्यवस्था की दिशा में नए युग का सूत्र पात हो जाएगा। इतना ही नहीं ग्रामीणों को दूध के साथ गोमूत्र के भी भारी दाम मिलेंगे।

योग गुरूबाबा राम देव ने राज्य सरकार का रूख भांपते हुए गोमूत्र की खरीद पर खासी रूचि दिखाई है। मौजूदा समय में औषधि निर्माता पंतनगर कृषि विवि से ४ रूपया प्रति लीटर में गोमूत्र का उपयोग किया जा रहा है। बरेली स्थित आईवीआरआई के वैज्ञानिक डॉ० चौहान की रिसर्च के मुताबिक लाल रंग की गाय के दूध और मूत्र में कैंसरनाशक तत्व मौजूद हैं। लिहाजा भाजपा सरकार लाल रंग के संरक्षण को विशेष तवज्जो दे रही है। पशुपालन मंत्री त्रिवेन्द्र रावत का कहना है कि लाल रंग की गाय को बद्री गाय का नाम दिया गया है। शीघ्र ही प्रदेश के सभी १३ जिलों में लाल रंग की गाय को खोज का अभियान चलाया जाएगा। देसी नस्ल की गाय में २४ औषधीय गुण होते हैं। चार साल पूर्व २००३ में हुई पशुगणना के मुताबिक पूरे उत्तराखंड में ११ लाख देसी गाय हैं। जबकि क्रास ब्रीड १ लाख ७७ हजार ८५५ आंकी गयी हैं। एक गाय प्रतिदिन चार से पांच लीटर मूत्र का उत्सर्जन करती है। प्रतिदिन उत्सर्जिन होने वाले ५२ लाख लीटर गोमूत्र का कोई उपयोग नहीं हो पा रहा है। मंत्री रावत बेकार जा रहे गोमूत्र को एकत्रित करने पर विशेष बल देते हुए कहते हैं कि गांव व ब्लाक स्तर पर सहकारिता के आधार पर कमेटी का गठन किया जाएगा। कमेटी के सदस्य गोमूत्र इकट्ठा कर एक टैंक में स्टोर करेंगे। भली भांति वाकिफ बाबा राम देव के सहयोगी आचार्य बालकृष्ण ने गोमूत्र के बेहतर उपयोग पर पशुपालन मंत्री त्रिवेन्द्र रावत से एक दौर की वार्ता कर चुके हैं।

(शेष पृष्ठ ३९ पर)